धन कमानेकी कुञ्जी

इस पुस्तकमें
तेल, साबुन, ओटो, पोमेटम, उबटन, आलता, शर्बत
खिजाब, सब प्रकारकी रोशनाई, सोने चांदी
की कलई, सब धातुओंकी पालिश, आईने
का पालिश तथा अनेक प्रकारकी
पेटेन्ट दवायें बनाने की सहज
तरकीब लिखी गई है।

—:※:—

Pratap Singh
Library
Srinagar.

लेखक—
देवीचन्द बेरी।

प्रकाशक—
निहालचन्द वर्म्मा।
हिन्दी-प्रचारक पुस्तकालय।
१९५।१ हरिसन रोड, कलकत्ता।

प्रथमबार १००० } सन् १९३८ { मूल्य १॥)

acc: no. 11539.

Rs 1-8-0

SPS
646.72 D 37 D
11539

धन कमानेकी कुंजी

* तेल प्रकरण *

तेल तीन प्रकारके तेलोंसे तैय्यार किये जाते हैं। (१) नारियल का तेल (२) तिलका तेल (३) व्हाइट आयल (White oil) नारियल और तिलके तेल पर जो तेल हिन्दुस्तानी जड़ी बूटियोंसे तय्यार किये जाते हैं वह बढ़िया होते हैं, उनसे बाल सफेद नहीं होते तथा मस्तिष्कके लिये भी वह बड़े ही उपयोगी होते हैं। तिलके तेल तथा नारियलके तेल पर विलायती खुसबू तथा रंग वगैरह डाल कर जो तेल बनाये जाते हैं, वह केवल भड़कदार खुशबू तथा रंग वाले ही होते हैं, विशेष उपकारी नहीं। व्हाइट आयल (White oil) जिसे बिलायती साफ तथा निर्गन्ध किया हुआ किरासिन तेल भी कहते हैं। इस पर तैय्यार किया हुआ तेल बहुत पतला तथा विलायती खुसबू और रंगसे युक्त बड़ाही भड़कदार होता है। बाजारोंमें विशेष करके यही बिकता है कारण कि एक तो सस्ता दूसरे पतला तथा निर्गन्ध, तीसरे हरेक खुसबूके साथ मिल जाने वाला; लेकिन यह केवल देखनेका ही है गुणका नहीं, पर हमारा कर्तव्य है कि जब तेल

प्रकरण लिखने बैठे हैं तब हरएक प्रकारके तेलोंके बनाने की क्रिया तथा उसका गुण अवगुण लिखदें। जिससे बनाने वाले सज्जन अपने चुनावके अनुसार बनाकर लाभ उठा सकें।

तेलको निर्गन्ध करनेकी रीति।

हमारे आयुर्वेदमें वर्णित एक औषधि जिसका कि नाम "नखी" है, यह औषधि हर एक बड़े पंसारियोंके यहां सुविधासे मिल सकती है। जब तेलको निर्गन्ध करना हो तो नीचे लिखी प्रणालीसे निर्गन्ध कर सकते हैं। एक सेर नारियल या तिलके तेलके लिये २ तोले "नखी" काफी है, उसे पंसारीके यहांसे लाकर खूब बारीक पीसकर एकछटांक तेलको कलछी में डालकर आगपर खूब पकाना चाहिये ये जब पककर लाल हो जावे तब ऊपर लिखे परिमाणके अनुसार गरम २ ही को तेलमें मिलाकर बिल्कुल ढक दें, साथ ही ढकनेवाला वर्तन ऐसा हो जिससे भाफ बिल्कुल ही न निकले। उस तेलवाले वर्तनको चार दिन तक रख छोड़ना चाहिये, प्रत्येक दिनमें तीन चार बार अच्छी तरह उस वर्तन को हिला दिया करें ऐसाकरने से नखी तेल के साथ अच्छी तरह मिलकर उसे बिलकुल निर्गन्ध कर देगी। १० दिन बाद छानकर बोतलोंमें भर दें। फिर जैसी भी महक चाहे मिलादे और काममें लावे।

नोट—तेलमें इच्छानुसार जैसा रंग रखना चाहे पहिले ही मिला देना चाहिये।

तेलमें मिलानेका देशी लाल रंग।

अगर तेलका रंग सुन्दर लाल रंगमें बदलनेकी इच्छा हो तो एक प्रकारकी रंगीन पत्तियें आती हैं, जिसका नाम "रंगवासु" (Alken Rose) है, यह आप हर एक बड़े पंसारीके यहां पा सकते हैं। अगर हल्का रंग करना हो तो कम पत्तियां डालनी चाहिये, अगर ज्यादा पत्तियाँ पड़ जावेगी तो रंग ज्यादा गहरा होकर कुछ कालेपनकी ललाई को लिये हो जावेगा। इसका परिमाण १ सेरमें ८ तोला रंग डालने का है।

तेल को साफ करने का सहज उपाय।

तिल्लीका तेल—पहिले गंधकको तेजाबके पानीमें मिलाकर तेलमें डाल दे इसे दो दिन पड़ा रहने दे। दो दिन बाद दूसरे बर्तनमें निथार कर आगपर चढ़ा दे, दो तीन उबाल दिलाकर नीचे उतार कर ठण्डा कर ले फिर आध पाव प्रति मनके हिसाबसे समुद्र-फेन और उतनी ही फिटकरी दोनों को महीन पीसकर डालकर हिला दे, तेल एक-दम घी के सदृश सफेद हो जावेगा। इस तेल को बढ़िया साबुन बनानेके भी काममें ला सकते हैं।

दूसरा उपाय—तिलके तेलमें जितना तेल हो उतना ही पानी मिला दिया जावे और आगपर चढ़ा दे, जब पानी जल जाय तब आधासेर मुलतानी मट्टी महीन पीसकर मिला दे, थोड़ी देर बाद तेल एक दम साफ हो जावेगा।

तीसरी रीति—१०० से १५० पाउन्ड जोर गरम भाफ को दो तीन घण्टे तक तेलमें छोड़ते हैं। इस तरह भाफ देनेसे तेलकी दुर्गन्ध उड़ जावेगी, इस पर भी यदि कुछ गंध रह जावे तो उसे दूर करनेके लिये तेलमें कलसाइन्ड मेगेनेसिया डालते हैं, इससे तेल एकदम निर्गन्ध हो जाता है फिर ब्लाटिङ्ग पेपर या फ्लालेनसे छान लें, तेल बिलकुल साफ हो जावेगा।

हरएक प्रकारके तेलमें मिल जानेवाली प्रसिद्ध बिलायती खुशबू

यूरोपीय विद्वानोंने एक ढंगकी खुशबू निकाली है जिसका कि नाम "हिको" है। यह पेटेन्ट, दवाइयां या ऐलोपैथिक दवा बेचने वालोंले यहां कितने ही नामसे मिलती है। जैसे हिको जैसमिन, हिकोलिली, ह्वाइट रोज, हिकोमश्क, हिकोसुरंगी इत्यादि, यह विज्ञान का ही आविष्कार है, कि जंगली दुर्गन्धित पत्तियोंका वैज्ञानिक रीतिसे सार निकाल कर सस्ता इत्र तैयार करते है और यही इत्र "हिको" नामसे प्रसिद्ध है। यह इत्र ऐसा है कि हरएक तेलके साथ सरलता पूर्वक मिल कर केश तेलको सुगन्धित कर देता है।

तेलोंमें रंग किस प्रकार डालना चाहिये।

एक बड़ा कांचका या चाइना मट्टीका बना बर्तन तेल बनानेके लिये होना चाहिये। तेलको दोनोंमेंसे किसी भी चीज़के बर्तनमें भर कर उसमें जिस प्रकारका रंग डालना हो उस प्रकारका रंग उसके प्रमाणके अनुसार देकर रंग इस अन्दाजसे डालना चाहिये जिसमें न बहुत ज्यादा ही हो और बहुत कमही हो यानी सामान्य

रीतिसे डालना) उसमें जैसी खूशबू डालनी हो वैसी खुशबू मिलाकर भांड़का मुंह बन्द कर देना। आठ दस दिन तक पड़े रहने दें उसे दिनमें दो तीनबार हिलाते रहना चाहिये। दस दिनबाद रंग और खुशबू मिल जावेगी ।

सुगन्धित तिल तेल तैयार करनेकी रीति ।

सुगन्धित तिल तेल नं० १

तिलका तेल	Til oil	सेर	ऽ२
हिको नरशिस	Heiko Nurcissus	औंस	१
,, सुरंगी	,, Surangi	,,	१
,, ह्वाइट रोज	,, White Rose	,,	१
नं० २	No 2		
तिलका तेल	Til oil	सेर	ऽ५
हिको लवेन्डर	Hiko lavender	औंस	२
,, सुरंगो	,, Surangi	,,	१
,, लीली	,, Lily	,,	१
,, जैसमिन	,, Jasmin	,,	१
,, नरसिस	,, Narcissus	,,	१
नं० ३	No. 3		
तिलका तेल	Til oil	सेर	ऽ३
हिको वेनिला	Hiko venila	औंस	१
,, लीली	,, Lily	,,	१
,, सुरंगी	,, Surangi	,,	१

नं० ४ No. 4

तिलका तेल	Til oil	सेर	ऽ२
हिको जैसमिन	Hikojasmin	औंस	१
„ सुरंगी	Surngi	„	१॥

नं० ५ No. 5

तिलका तेल	Til oil	सेर	ऽ२
हिकोलीली	Hikolily	औंस	१
„ बेनिला	„ venila	„	१
„ मस्क	„ Musk	„	१

सुगन्धित नारियल तेल तैयार करनेकी विधी

नं० १ No. 1

नारियल का तेल	Cocoanut oil	सेर	ऽ६
हिको नरसिस	Heiko Nurcissus	औंस	१
„ लवेन्डर	„ Lavender	„	१
„ ह्वाइट रोज	„ White Rose	„	१
„ सुरंगी	„ Surangi	„	१
„ जैसमिन	„ Jaismin	„	१

नं० २ No. 2

नारियलका तेल	Cocoanut oil	सेर	ऽ४
हिको नरसिस	Heiko Nurcissus	औंस	१॥
„ जैसमिन	„ Jasmin	„	१
„ मस्क	„ Musk	„	१

नं० ३ No. 3

नारियल का तेल	Cocoanut oil	सेर	ऽ३
हिको मकोमस्क	Hikomusk	औंस	१
,, जैसमिन	,, Jasmin	,,	,,
,, लीली	,, Lily	,,	,,
,, नरसिस	,, Nurcissus	,,	,,

नं० ४ No. 4

नारियल का तेल	Cocoanut oil	सेर	ऽ३
हिको लवेन्डर	,, Lavneder	औंस	१
,, सुरंगी	,, Surangi	,,	१
,, जैसमिन	,, Jasmin	,,	१
,, नरसिस	,, Nurcisses	,,	१

नं० ५ देशी तरीकेसे बनानेकी विधी।

गरीका तेल	ऽ२ सेर	नागरमोथा	१ तोला
कपूर	१ तोला	बाल छड़	,,
खश	,,	कंकोल	,,
चम्पावती	,,	धनिया	,,
लौंग	,,	बड़ीलायची	,,
छोटी इलायची	आधातोला	सफेद चन्दन	,,
लालचन्दन	,,	पानड़ी	,,

दालचीनी	१ तोला	गुलाबके फूल	१ तोला
कोकिला	,,	नरकचूर	,,
छरीला	,,	सुगन्धबास	,,

पहिले गरीके तेलको पीछे बतलायी बिधीसे निर्गन्ध करले, फिर सब मसालोंको खलमें कूटकरके निर्गंधिन्त नारियलके तेलमें डाल दे और ऐसे बर्तन से ढंके कि हवाका प्रवेश न हो सके। तेलके बर्तन को दिनमें दो तीनबार हिला दिया करें, इस क्रियासे तीन चार दिनमें तय्यार हो जावेगा।

ह्वाइट आयल पर तेल बनाने विधि।

नं० १ No. 1

ह्वाइट आयल	White oil	सेर ऽ३
ह्विको लीली	Hiko lily	औंस १।।
,, ह्वाईट रोज	,, White rose	,, ,,
,, जैसमिन	,, Jasmin	,, २
,, मस्क	,, Musk	,, १

नं० २ No. २

ह्वाइट आयल	White oil	सेर ऽ६
ह्विको मस्क	Hiko musk	औंस १
,, ह्वाइटरोज	,, Whiterose	,, १।।
,, सुरंगी	,, Surangi	,, १
,, लीली	,, Lily	,, १

नं० ३ No. 3

ह्वाइट आयल	White oil	सेर ४
हिकोवेनिला	Hiko venila	औंस १
„ हिको मस्क	„ musk	„ „
„ ह्वाइटरोज	„ Whiet rose	„ „

ऊपर लिखे अनुसार जैसा भी केश तेल (Hair oil) बनाना हो उस प्रकार अलग अलग खुशबू डालकर अलग २ खुशबूका बना सकते हैं। जैसमिन, ह्वाइटरोज, सुरंगी, मस्क, और लिली इत्यादिकी महक बहुत ज्यादा देर तक ठहरती है और दूसरे प्रकार की जो खुशबू हैं उनके साथ बनानेसे उसकी सुगन्ध थोड़ी देर ही ठहरती है। इन तेलोंको उपरोक्त विधीसे बनाकर तीन २ औन्सकी शीशियों में भरकर कागसे मुंह बन्द करके आगे लिखे ठिकानेसे बक्स बना लेबिल वगैरह लगाकर बेच सकते हैं।

आयुर्वेदिक तथा स्वदेशी जड़ी बूटियों द्वारा

बनाये जानेवाले सुगन्धित तेल।

लाक्षादि तेल।

बेर की अथवा कूड़ा की लाख १ सेर लेकर उसमें चार सेर जल डालकर औटाना चाहिये। जब सेर भर जल रहे तब उतारकर छान लेना चाहिये, फिर उसमें तिल्ली का तेल १ सेर डाले तथा दही

का तोड़ १ सेर मिलावे। इतना कर लेनेके वाद नीचे लिखी औषधियें १-१ छंटांक मंगावे।

सौंफ	१ छँटाँक	मुलहटी	१ छँटाँक
असगन्ध	,, ,,	सफेद चन्दन	,, ,,
हल्दी	,, ,,	नागरमोथा	,, ,,
देवदारू	,, ;;	रास्ना	,, ,,
कुटकी	,, ,,	रेणुका	,, ,,
कूट	,, ,,	मूर्वा	,, ,,

इन सब चीजों को कूटकर ऊपर लिखे तेलमें मिलाकर आंचपर चढ़ा मन्दाग्निसे पकावे, जलते २ जब सब पानी जल जावे और केवल तेल मात्र रह जावे तब तेलको उतारकर छानकर शीशियोंमें भर लेना चाहिये। इस तेल की शरीरमें मालिश करनेने सम्पूर्ण विषमज्वर; खांसी, स्वांस, पीनस, कमर का शूल, पीठ का शूल, बादी का कोप पित्त का कोप, मृगी, उन्माद, क्षयरोग, खुजली, देहमें दुर्गन्ध आना, शूल वगैरह अनेक प्रकारके रोग दूर होते हैं। अगर गर्भवती स्त्रीके भी मालिश कराई जाय तो गर्भ पुष्ट होता है।

त्रिफला तेल नं०—२

हर्रे	१ छंटांक	नीम की छाल	१ छंटांक
बहेड़ा	,, ,,	चिरायता	,, ,,
आंवला	,, ,,	हल्दी	,, ,,
दारू हल्दी	,, ,,	लाल चन्दन	,, ,,
तिल का तेल	सेर ʃ२	पानी	सेर ʃ८

इन सब आठों दवाई को कूटकर तेलमें मिला दे फिर पानी डालकर कलईके बर्तनमें आंच पर पकावे। पकाते पकाते जब तेल मात्र रह जावे तब उतार कर छान लेना चाहिये। जिस मनुष्यके अंग पर फोड़े हों; मुंह पर मुहांसे हों; उनसे मुंह फूला हुआ हो तो इस तेलके लगाने से सब व्रण तथा मुहांसे दूर हो कर शरीर चन्द्रकान्ति सा हो जावेगा।

सुगन्धित आंवले का तेल ।

कच्चे आंवले का रस	सेर ऽ२	काला तिल का तेल साफ किया हुआ	सेर ऽ२
मुलहठी अध कूटी हुई	१ पाव	हिको लीली	औंस १
शोरा निमक	१ पाव	साफ पानी	सेर ऽ१

पहले मुलहटी को पानीमें दो दिन तक फूलने दे, तीसरे दिन मुलहटी को मलकर तथा छानकर उसका पानी निकाल अलग रख लो। फिर तिलके तेलको कलईदार कढ़ाईमें डालकर ऊपर लिखी सब दवाइयें तथा मुलहट्ठीके पानी को भी उसमें डालकर आगपर कढ़ाईको चढ़ाकर धीमी २ आंचमें पकावे;पकाते पकाते जब सब पानी जल जाय केवल तेल मात्र रह जावे तब उसे नीचे उतार कर उसमें हिकोलीली मिलाकर दो दिन तक पड़ा रहने दे। दिनमें दो तीन वार उसे हिला दिया करे फिर छान कर सीसियोंमें भर लेवे।

यह तेल बालोंकी जड़को मजबूत करके बालोंको रेशम की तरह मुलायम बनाता है। इसके अलावा स्मरण-शक्ति को बढ़ाकर मगज को तरी देता है।

केश बृद्धि ।

कुम्हेरन की जड़	२ तोले	त्रिफले का जल	आधासेर
लोहा चूर	४ तोले	केतकी की जड़	२ तोले
प्रियावासके फूल	२ तोले	काले तिल का तेल	ऽ१ सेर
भांगरा	४ तोला	हिको मस्क	१ औंस

कलईदार कढ़ाईमें तिल का तेल चढ़ा कर उसे आंच पर चढ़ा दे उसमें ऊपर लिखी चीजें केवल हिको मस्क छोड़कर सब डालकर मिला कर मन्द २ आंचपर पकने दे। जब सब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय तब लोहेके सकरे मुंहके बर्तनमें बन्द करके उस बर्तन को जमीनमें गाड़ दे। एक महीने तक गड़े रहने वाद निकालकर छानकर हिको मस्क मिलाकर दो दिन पड़ा रहने दें फिर छानकर शीशी या बोतलोंमें भर लेवे।

यह तेल सिरमें लगानेसे बाल लम्बे:२ तथा भौंरेके समान काले और घूंघरदार हो जाते हैं गर्म प्रकृति वालोंके लिये यह तेल बहुत ठँढा तथा बड़ा ही उपकारी है।

मन मोहक केश तेल ।

छार छरिला	आधा तोला	कपूर कचरी	आधातोला
नागर मोथा	” ”	बाल छड़	” ”
सुगन्ध बाला	” ”	नर कचूर	” ”
नखी	” ”	कोकिला	” ”
हाहु वैर	” ”	दालचीनी	” ”
पनड़ी	” ”	गुलाबका फूल	” ”

सफेद चन्दन	„ „	छोटी इलायची	„ „
बड़ी इलायची	„ „	लौंग	„ „
चम्पावती	„ „	खस	„ „
कंकोल	आधा तोला।		

ऊपर लिखी दवाइयां जो आसानीसे बड़े बड़े पंसारियोंके यहां मिल सकती हैं मँगाकर अध-कचरा कूट लो। फिर एक कांचके भांडमें २ सेर नारियल का तेल डालकर ऊपर लिखी अधकूटी दवाई भी उसमें डाल-कर उसका मुँह खूब कस कर बन्द करके १ महीना दिन को धूप तथा रात को ओसमें रक्खा रहने दें। दिनमें दो तीन वार हिला दिया करें। एक महीने बाद इसे छानकर बोतलोंमें भरकर मजबूत काग लगा लें।

यह तेल बहुत सुगन्धित रहता है। इसके सेवनसे सिर ठँडा रहेगा बाल असमयमें टूटनेसे बचेंगे और बाल रेशम की तरह मुलायम होकर घूँघरदार हो जावेंगे और अपनी लाजवाब खुशबूसे हर वक्त तबियत को मस्त रक्खेगा।

सिर दर्द विनाशक तेल।

अलकोहल	२ औंस	मेंथल	२ ड्राम
आयल क्लोमस	४० बूँद	आयल सिनेमन	४० बूँद

उपर्युक्त चारों औषधियां अँग्रेजी दवाखानोंमें मिलेंगी वहांसे मँगाकर चारों औषधियों को एक ही साथ मिलाकर फेंट दे फिर शीशियोंमें भरकर आकर्षक लेबल या ऐसे ही चलावें, सिरमें दर्द उठने पर जरा सा उँगलीमें या रूई का फाहा बनाकर लगावे, लगाते ही चन्द मिनटोंमें दर्द काफूर हो जायगा।

सिर दर्द या हिमसागर तेल।

तेजबल	आधा पाव	लौंग	आधा पाव
कपूर	„ „	नर कचूर	„ „
बड़ी इलायची	„ „		
पानड़ी	१ छांटांक	महामरी	१ छांटांक
सफेद चन्दन	१ „	चम्पावती	१ „
छरीला	१ „	कपूर कचरी	१ „
छोटी इलायची	१ „	नागरमोथा	१ „
सुगन्ध तंतरी	१ „	बालछड़	१ „
कोकिला सुगन्धित	१ „	पीपरमेन्ट	१ तोला
तिलका तेल	ऽ२॥ सेर		

पहिले तिलके तेलको कांचके बर्तनमें डाले, वह वर्तन ऐसा होना चाहिये कि उसमेंसे हवा न निकल सके। फिर सब दवाई अधकुट करके उस बर्तनमें छोड़कर भांड़का मुंह बन्द करके १० दिन धूप में तथा रातमें ओसमें रखा रहने दें। दिन में २–२ बार हिला दिया करें बस खूब बढ़िया हिमसागर तेल तैयार हो जावेगा जो कि आंखोंकी रोशनी को बढ़ावेगा तथा सिरके दर्द को हटाकर दिमाग को तर रक्खेगा।

दद्रु विनाशक तेल।

थाइमल	१ ड्राम	क्लोरो फार्म	४ ड्राम
ओलिभ आयल	१२ „		

उपर्युक्त चारों औषधियोंको एकमें मिलाकर सीसीमें भर ले। जिस स्थानपर दाद हुई हो उसे कार्बोलिक साबुनसे धोकर इस तेल को लगावे। तीन दिनमें दाद अच्छी हो जावेगी। पर फिर भी २-३ दिन और लगावें।

बहरापन दूर करनेका तेल।

२ कोमल बेलके पत्तोंको निरोग गायके मूत्रमें पीस लें, जितना दोनों मिलाकर हो उससे चौगुना तिलका तेल लेवें तेलसे चौगुना जल डालें इन सब चीजोंको चूल्हे पर कटोरेमें डालकर चढ़ावें तेल मात्र रह जावे तब उतार कर छानलें। इसे कानमें डाले तो बहरापन दूर हो जावें।

खुशबूदार ओटो ।

आप लोगों ने ओटो नामक खुशबू बाजारमें बिकती हुई देखी होगी इसके बनानेमें कोई कारीगरी नहीं है, सस्ता इसलिये मिलता है कि वेल्यू (White oil) पर बनाया जाता है, अगर कोई बढ़िया तेल पर बनाया जाय तो इसका खर्च ज्यादा पड़े और इसमें चिकनाहट भी आ जावे । भेलूपर जितनी खुशबू पकड़ती है उतनी दूसरी चीज पर नहीं । ओटो नाम विलायती खुशबू का है इसलिये यह विलायती खुशबूमें मिलाकर बनाया जाता है । इसकी खुशबू इत्रसे भी ज्यादा तेज होती है और ज्यादा देरतक भी ठहरती है । इसके बनाने की विधि नीचे लिखी जाती है ।

ह्वाइट वेलू (White oil) में अन्दाजके साथ (तेलमें डालनेका) रँग मिलाकर एक कांचके बर्तनमें रखना चाहिये ' रँग देते समय यह याद रखना चाहिये कि रँग न बहुत गाढ़ा ही रहे न बहुत पतला ही, बराबर का हो रँग बनाने की जो रीति अलग बताई गई है उसी रीतिसे रँग बनाकर डालना, रँग डालनेके बाद जिस प्रकार की खुशबूका ओटो बनाना हो उसी प्रकार की सुगन्धि Heiko) नीचे लिखे प्रमाणसे मिलाकर कांचके भांड़ का मुंह बन्द कर देना । मुंह बन्द करके एक सप्ताह तक उसे छोड़ देना और दिनमें दो तीन बार उसे हिला देना जिसमें खुशबू उसमें मिल जाय । एक सप्ताह के बाद रँग और सुगन्धि जब मिल जाय तब सुंदर शीशियोंमें भरकर मन मोहक लेबिल; फीता वगैरह लगाकर बाजारमें बेच सकते हैं जिस खुशबू का ओटो बनाना हो उसी प्रकार का रँग भी उसमें डालना चाहिये; जैसे ओटो गुलाबमें गुलाबी रँग ।

ओटो हिना Otto heena

हवाइट मेलू	White oil	औंस	२५
हिको हिना	Heiko heena	„	१०

लालरँग

ओटो मस्क Otto musk

ह्वाइट मेलू	White oil	औंस	३०
हिको मस्क	Heiko musk	„	१२

रँग कथई

ओटो लीली Otto Lily

ह्वाइट मेलू	White oil	औंस	३५
हिको लीली	Heiko Lily	„	२०

रँग हरा

ओटो मोगरा Otto mogra

ह्वाइट मेलू	White oil	औंस	५०
हिको मोगरा	Heiko mogra	औंस	२०

रँग पीला

ओटो सुरँगी Otto Surangi

ह्वाइट मेलू	White oil	औंस	३०
हिको सुरङ्गी	Heiko surangi	„	२०

रङ्ग नीला

ओटो जैसमिन Otto jasmin

ह्वाइट मेलू	White oil	औंस	४०

हिको जैसमिन	Heiko jasmine	”	१५

रङ्ग पीला

ओटो गुलाब Otto rose

ह्वाइट भेलू	White oil	औंस	२०
हिको रोज	Heiko rose	”	१०

सेन्ट बनाने की विधी।

आप लोगों को ओटो बनाने की विधी पीछे बतलायी गई है अब आपको सेन्ट बनाना बताते हैं। सेन्ट और ओटोमें कोई विशेष फर्क नहीं है, ओटो का दाग कपड़ेमें लगता है और सेन्ट का दाग नहीं लगता। इसलिये सौखीन बाबू लोग इसे ही अपने कपड़ों तथा रूमालोंमें लगाते हैं, कारण कि यह स्पिरिट पर बननेके कारण बहुत तेज होता है तथा इसकी महक हवामें खूब उड़ती है। इसे लोग इत्र की तरह व्यौहार नहीं करते कारण कि यह हवामें (Spirit) रहनेके कारण जल्दी उड़ जाता है, कपड़ोंमें लगनेसे खूब महक मारता है। नीचे अलग अलग सेन्ट बनाने की रीतियां बताई जाती हैं जिससे आप बढ़ियासे बढ़िया सेन्ट अपने घरमें तय्यार कर सकते हैं।

तैयार करने की विधी।

किसी अच्छे कारखानेकी बनी बढ़िया रेक्टीफाइड स्पिरिट(Rectifiedspirit) एक कांचके बर्तनमें भरकर उसमें आगे लिखी विधी के अनुसार खुशबू मिलावे। मिलाकर कांचके भांड़ का मुंह कसकर बन्द कर देना चाहिये जिसमें हवा न भीतर जा सके। भांड़को

एक महीने तक पड़ा रहने देना चाहिये, रोज उसे २-३ बार हिला देना चाहिये ऐसा करनेसे महीने भरमें सुगन्धि स्पिरिटके साथ मिलकर एक हो जावेगी। तब बाजारसे शीसियें शीशेके ढ़क्कन वाली मंगाकर बढ़िया लेविल और फेन्सी फीता लगाकर फेन्सी डिब्बा बनवावें। शीशियोंमें जिस रंगका सेन्ट हो उस रङ्ग की रूई शीशियों के चारों ओर लपेट कर तब डिब्बेमें रखकर पैकिंग कर लेबिल लगाकर बाजारमें चलावे। सेन्टमें रङ्ग नहीं डालना चाहिये कारण कि रङ्ग डालनेसे धब्बा कपड़ोंमें पड़ेगा, यहां विलायतीके मुकाबले वैज्ञानिक रीतिसे रङ्ग नहीं तय्यार होता इसलिये सादा ही बनाना चाहिये।

सेन्ट नं०—१

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifiedspirit	८	औंस
हिको निरोली		१	ड्राम

सेन्ट नं०—२

रेक्टीफाइड: स्पिरिट	Rectifiedspirit	सेर	२
हिको ह्वाइट रोज	Heiko white rose	औंस	२
हिको मुश्क	" Musk	"	"

सेन्ट नं०—३

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifiedspirit	सेर	२
हिकोसुरङ्गी	Heiko surangi	औंस	"
हिको जैसमिन	" Jasmin	"	"

सेन्ट नं०—४

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifeid spirit	सेर	१॥।
हिको मस्क	Heiko musk	औंस	१॥
हिको नरसिस	„ Nurcisess	”	”

सेन्ट नं०—५

रेक्टीफाइडस्पिरिट	Rectifeidspirit	सेर	२
हिको सुरङ्गी	Heiko surangi	औंस	”
हिको जैसमिन	„ Jasimin	”	१
हिको मस्क	„ Musk	”	”

ऊपर बताई हुई प्रणालीके अनुसार जिस ढंग की महक देकर जिस ढंग का सेन्ट चाहे बना सकते हैं।

सुगन्धित लाइम जूस

लाइमजूस एक प्रकारका गाढ़ा तेल सा होता है जो कि बाज़ारों में देशी तथा विलायती दोनों प्रकार का बिकता है। इसकी तासीर बहुत ठँडी होती हैं। यह दिमागी आदमियोंके तो बड़े ही काम की चीज है इसके व्यवहारसे दिल दिमाग ठंडा तथा तर रहता है और मन मोहनी महक से मन प्रफुल्लित रहता है। आगसे जले पर भी लगानेमें यह अद्भुत फायदा दिखाता है, इससे छाले नहीं पड़ते और जले अँग पर लगानेसे जलन मिटकर ठँडक पड़ जाती है। इसलिये भी प्रत्येक गृहस्थ को बनाकर इसे अपने घरमें रखना चाहिये कि न मालूम किस वक्त घटना हो जाय और किस वक्त यह काममें आ जावे। बाजारमें सुगन्धित लाइमजूस बिकते हैं वह अधिकांशतः विलायती White oil पर बने रहते हैं वह विशेष फायदेमन्द नहीं होते। आप नीचे लिखी विधिसे आसानी पूर्वक बनाकर इसे काममें ला सकते हैं।

लाइमजूस बनाने की प्रणाली।

चूना भिगो कर चूने का पानी (जो कि न बहुत गाढ़ा ही हो न बहुत पतला ही) आठ आउन्स लेवे और उसमें दो आउन्स ग्लिसरीन मिलाकर कपड़ेसे छान लेना। उसके बाद १ चौड़ी थालीमें १ सेर नारियल का तेल लेकर उसमें ऊपर लिखा ग्लिसरीन और चूनेका पानी मिला देना चाहिये। मिलाकर तीनोंको हाथसे खूब मथिये जब सब वस्तु मिलकर एक हो जावे तब इसे दूसरे बर्तनमें रख देना, बस यह लाइमजूस बनाने का तेल तय्यार हो जावेगा। जैसी सुगन्ध देनी हो नीचे लिखे अनुसार मिलाकर बना लेना चाहिये।

सुगन्धित लाइम जूस नं०—१

लाइमजूस का तेल	Lime juice oil	सेर	२
हिको जैसमिन	Heiko jasmin	औंस	१
हिको लवेन्डर	" Lavender	"	१

लाइम जूस नं०—२

लाइम जूस का तेल	Lime juice oil	सेर	१
हिको ह्वाइट रोज	Heiko white rose	औंस	१
हिको लवेण्डर	" Lavender	"	१

लाइम जूस नं०—३

लाइम जूस का तेल	Lime juice oil	आधा	सेर
लेमन आयल	Lemon oil	आधा	औंस
पोटास कार्ब	Potas carb	"	"
ग्लिसरीन	Glyerin	१	"

इसी तरहसे बनाना होगा महक (खुशबू) आप अपने मन की जैसी महक रखना चाहें दे सकते हैं यह अपनी इच्छा की वात है। अगर आप घरमें रखना चाहें तो कोई बात नहीं, बनाकर सीसियोंमें बन्द कर रख दें समयके अनुसार काममें लावें। अगर बेचकर लाभ उठाना चाहें तो फैन्सी शीशियोंमें भरकर, सुन्दर लेबिल लगाकर अपना (Trade mark) मार्का देकर चला सकते हैं।

सुगन्धित पोमेटम।

पोमेटम एक प्रकारके सुगन्धित मरहम को कहते हैं। स्त्रियां इसे केश-तेल (Hair oil) की जगह व्यौहार करती हैं। तेल पतला

॥539

होता है और पोमेटम गाढ़ा मलहमके रूपमें होता है। स्त्रियां और पुरुष इसे बालोंके जमाने तथा चमकदार बनानेके लिये इसेबालों में लगाते हैं। बालों को चमकदार तथा जमाये रखनेके अलावा चमड़े को मुलायम तथा परिष्कृत रखता है। जाड़ेके दिनोंमें मुंह और ओंठ फट आते हैं, पोमेटमके लगानेसे यह चमड़े को मुलायम तथा चिकना रखता है। पोमेटम दो तरहसे बनाया जाता है प्रथम हार्ड पैराफिन और भेसलीन (Hardperofin vaselin) दूसरा हार्ड पैराफिन कोकोनेट (Hardperofin cocoanut) इन दोनों चीजोंसे अलग अलग सुगन्धी मिलाकर अनेक प्रकारसे पोमेटम बनाने की रीतियां बताई हैं।

भेसलीन से पोमेटम बनाने की रीति।

Hardperofin	हार्ड पैराफिन	औंस	३५
Vaselin	भेसलीन	औंस	६५

दोनों चीजोंको कलईके बर्तनमें डालकर अग्निपर चढ़ा देना और धीमी धीमो आंचमें पिघलाना। जब पिघलकर दोनों वस्तु एक हो जाय (इस बीचमें इसे चलाते रहना चाहिये) तब नीचे उतार कर ठँडी जगहमें रख देना। इस प्रकार पोमेटम का सादा मलहम तैयार हो जाता है इसके बाद आगे लिखी सुगन्धियें डालकर सादी मलहममें पोमेड तैयार कर सकते हैं। इसमें रंग देने की जरूरत नहीं; क्योंकि भेसलीनमें खुद रँग होता है।

(नारियल तेल से पोमेटम बनाना)

Hard perofin	हार्ड पैराफिन	औंस ३०
Cocoanut oil	कोकोनट आयल	„ १००

उपरोक्त दोनों चीजों को एक कलईके बर्तनमें डालकर अग्नि पर चढ़ाकर धीरे धीरे पकाना। जब पिघलकर एक जान हो जाय, तो पीला रँग १ ड्राम (तेलमें डालने का) इसमें डालकर लकड़ीसे मिला देना। फिर नीचे उतारकर सीसियोंमें भर लेना।

सुगन्धित पोमेटम।

सादामलहम	Simpel ointment	सेर ऽ१॥
ओयल लवेन्डर	Oil lavender	औंस २
„ रोजमरी	Oil rosemari	„ १

सुगन्धित पोमेटम।

नं० २ No. 2

सादामलहम	Simpel ointmet	सेर ऽ२
ओयल लवेन्डर	Oil lavender	औंस २
„ बार्गामोट	„ Bargamot	„ २

सुगन्धित पोमेटन।

नं० ३ No. 3

पोमेन्टका ठण्डा मलहम	Simpel ointament	सेर ऽ२
आयेल लवेन्डर	Oil lavender	औंस २
„ वेनिला	Oil venila	„ „
„ निरोली	„ Niroli	„ „

ऊपर तीन प्रकारके तेलसे बनाये पोमेड बताये गये हैं। अब नीचे बिलायती खूशबू मिलाकर बिलायती पोमेडके सामान बनानेकी क्रिया लिखाजाती है। इसकी खुशबू बिलायती पोमेडके समान हो जाती है।

सुगन्धित पोमेटम।

नं० ४ No. 4

सादा पोमेटम	Simpel ointment	सेर	ऽ४
हिको लवेण्डर	Heiko lavendar	औंस	२
„ निरोली	„ Niroli	„	„

सुगन्धित पोमेटम।

पोमेटमका सादामल्हम	Simpul ointment	सेर	ऽ४
हिकोमस्क	Heiko musk	औंस	१
„ जैसमिन	„ Jasmin	„	१

सुगन्धित पोमेटम।

पोमेटमका सादा मलहम	Simpel ointment	सेर	ऽ४
हिको सुरंगी	Hiko surangi	औंस	१
„ नरसिस	Nurcess	„	१

सुगन्धित पोमेटम।

पोमेटमका सादा मलहम	Simpel ointment	सेर	ऽ४
हिको लवेण्डर	Heiko lavender	औंस	१
„ ह्वाइटरोज	„ White Rose	„	१

पोमेटम की मलहम चाहे वेसलोन वालीहो चाहे नरियल तेल वाली। हिकोके साथ मिलाकर अगर ठीकसे बनाया जाय तो विलायतीसे भी बढ़िया खुशबू या वैसीही स्थायी रहने वाली खुशवू हो जाती है।

—*—

कास्मेटिक पोमेन्ट

कास्मेटिक पोमेन्ट मोमबत्ती की तरह कड़ी होती है, यह पोमेटम की तरह मलहमके समान नहीं होती है। यह केवल बालों को जमाकर रखनेके लिये काममें आती है। विशेषतः इसे व्यौहारमें स्त्रियां ही लाती हैं, कारण कि जिस भी प्रकार का बाल आप बनावें इसकी मददसे जमाकर रख सकते हैं। नीचे लिखी विधीके अनुसार इसे तय्यार कर सकते हैं। साथ ही यह भी बात ध्यान रखनेके योग्य है कि अगर इसको तय्यार करने की इच्छा हो तो पहले इसका सांचा बनवाना होगा। सांचा एक फुट लम्बी सागवान की लकड़ी मँगाकर उसका बराबर सम चौरस टुकड़ा करवावे, उसके बीचमें सोमबत्तीके समान एक छेद रखना चाहिये। फिर उसको बराबर बीचसे दो टुकड़ा करवा देना, भीतरमें जो पोला रहेगा वह बराबर दो टुकड़ोंमें आधा आधा रहेगा। उन दोनों टुकड़ों को पालिस-पेपरसे अच्छी तरह खराद कर साफ करवा देना चाहिये जिसमें रूखड़ा न रहे। जब कास्मेटिक बनाना हो तब दोनों टुकड़ों को रस्सीसे कसकर बांध दे और उसमें नीचे बतलाया हुआ कास्मेटिक बनाने का तैयार किया हुआ रस डालकर ठँडी जगहमें २-३ घण्टे रख दे जब यह ठण्डा होकर खूब जम जावे तब सांचेमें से निकालकर इसकी बत्तीके २ या ३-३ इँचके टुकड़े काट लें, अगर बाजारमें बेचना हो तो अन्दर सफेद कागज पर लपेट कर बोर्ड के बाक्स बनवा उनपर सुनहरे कागज का पैकिङ्ग लगा लेबिल तथा अपना ट्रेडमार्का (Trade mark) देकर चलावें।

कास्मेटिक पोमेन्ट का मलहम बनाने की रीति

सफेद मोम विलायती	White wax	औंस	४८
नारियल का तेल	Cocoanut oil	„	२०

दोनों चीजों को कलई किये लोहेके बर्तन या चीना मट्टीके बर्तनमें डालकर गर्म करे जब दोनों चीजें मिलकर एक हो जाव तब जिस ढँग की सुगन्धि डालनी हो डालकर लकडी से चला दें। सांचा नीचे तय्यार ही रहेगा उसी सांचेमें डालता जाय, डालकर सांचे को तीन चार घण्टा पड़ा रहने दे तब जम जाने पर चक्कियें काटकर काममें लावे। इसे व्यौहार करने वाला इसके टुकड़े को जरा सा गरम करके फिर बालोंमें लगावे।

कास्मेटिक पोमेन्ट बनाने की विधी

नं०—१

कास्मेटिक का मलहम	Casmetic ointament	१	सेर
आयल लवेन्डर	Oil lavender	॥	औंस
„ निरोली	Oil niroli	॥	„

सुगन्धित कास्मेटिक नं०—२

कास्मेटिक का मलहम	Casmetic ointament	१ सेर
हिको सुरङ्गी	Heiko surangi	॥ औंस
„ नरसिस	„ Nurcissus	॥ औंस

नं०—३

कास्मेटिक मलहम	Casmetic ointament	१ सेर
हिको मस्क	Heiko musk	॥ औंस

नं०—४

कास्मेटिक मलहम	Casmetic ointament	१ सेर
हिको लवेंडर	Heiko lavender	॥ औंस
,, निरोली	,, Niroli	॥ औंस

नं—५

कास्मेटिक मलहम	Casmetic ointament	१ सेर
हिको जसमिन	Heiko jaismin	॥ औंस
ह्वाइट रोज	,, White rose	॥ औंस

लवेन्डर वाटर

लवेन्डर वाटर की खुशबू बहुत ही मीठी तथा ठण्डी तासीर होती है। खुशबूके लिये इसे पानीमें मिलाकर कपड़े पर छिड़कते हैं, गर्म्मीके दिनोंमें लोग तरावटके लिये पानीमें मिलाकर इसे माथे पर भी छिड़कते हैं जिससे मगज को तरी भी मिलती है, तबियत प्रफुल्लित हो जाती है। विशेष कर लोग इसे गर्म्मीके मौसिममें व्यौहारमें लाते हैं, जैसे गर्म्मीसे सिर दर्द होना, मूर्छा आ जाना, दिमाग गर्म हो जाना इन सब व्याधियोंके लिये गर्मियोंके मौसिममें यह बड़ा ही लाभदायक होता है, इसकी खुशबू बड़ी ही मस्त होती तथा हवामें उड़ती है इसलिये रईस लोग इसे अपने कपड़ों पर भी सुगन्धिके लिये छिड़कते हैं।

लवेन्डर वाटर बनाने की विधी

नीचे बतलाये नुसखोंके अनुसार स्पिरिटमें सब प्रकारकी सुगन्धि मिला कांचके बर्तनमें बन्द करके एक महीने तक मुंह बन्द करके छोड़ दे। उसे दिनमें २-३ बार हिला दिया करें, इस रीतिसे सुगन्धि अच्छी तरह स्पिरिटके साथ मिल जावेगी। एक महीना बाद नीचे लिखे अनुसार जल मिलाकर उसका यन्त्र द्वारा अर्क निकालकर बोतलमें भरके काग लगा देना; लवेन्डर वाटर तय्यार हो जावेगा। जैसी सुगन्धी तथा जैसे रङ्गका बनाना हो नीचे लिखे अनुसार अपनी पसन्द का बना लें।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

लवेन्डर वाटर नं०—१

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifiedspirit	३ सेर
आयल बर्गामोट	Oil burgamot	१॥ औंस
„ लवेन्डर	„ Lavender	३ „
„ मन्था	„ Mantba	१॥ „
साफ जल	Rectified water	१॥ सेर

लवेन्डर वाटर नं०—२

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifiedspirit	२ सेर
आयल लेमन	Oil of len on	२ आउन्स
आयल आफ निरोली	„ „ Niroli	४ „
आयल आफ लवेन्डर	„ „ Lavender	४ „
साफ जल	Rectifiedwater	२ सेर

यह तो आपको तेलके साथ मिलाकर बतलाया अगर ज्यादा बढ़िया बनाना हो तो हिको (Heiko) देकर भी बना सकते हैं। प्रणाली ऊपर समझाये अनुसार ही होगी, केवल आयल (Oil) की जगह हिको (Heiko) देना होगा।

Lavender water 3

रेक्टीफाइडस्प्रिट	Rectifeidspirit	सेर ४
हिको मस्क	Heiko musk	ड्राम ४
„ लवेन्डर	„ Lavender	आउन्स २
आयल लेमुन	Oil of lemon	„ „

आयेल लौग	Oil Cloves	आउन्स	२
„ मन्था	„ Mantha	„	„
साफ़ जल	Rectified water	सेर	„

4

रेक्टीफाइडस्प्रिट	Rectifiedspirit	सेर	२
हिको हूवाइट रोज	Heiko White rose	ड्राम	२
„ लवेन्डर	„ Lavender	औंस	१
आयल लेमुन	Oil of lemon	औंस	१
आयल वर्गामोट	„ „ Bargamot	„	१
साफ पानी	Rectified water	सेर	१

5

रैक्टीफाइड स्प्रिट	Rectified spirit	सेर	३
हिको मस्क	Heiko musk	ड्राम	२
„ लवेन्डर	„ Lavender	औंस	२
„ निरोली	„ Niroli	ड्राम	२
आयल आरेञ्ज	Oil orange	औंस	२
„ बर्गामोट	„ Bargamot	„	१
„ लौंग	„ Cloves	„	१
साफ पानी	Rectifiedwater	सेर	२

ऊपर बताई प्रणालीके अनुसार बनाना चाहिये, अगर सुगन्धिमें कमी बेशी करना हो तो स्पिरिट और पानीमें कमी बेशी हो सकती है। पहिले नमूनेके अनुसार उपरोक्त बिधिसे थोड़ा बनाना चाहिये;

महक कम या वेशी मालूम होनेसे और स्पिरिट व महक मिलाकर वना सकते हैं। लवेन्डर वाटरके लिये छोटी बड़ी तरह २ की बोतलें आती है इच्छानुसार भर कर फैन्सी लेबिल [illegible] [illegible] बेंच सकते हैं।

◆

PERFUMED TABLET

(खुशबूदार टिकिया)

यह टिकिया यूरोपमें इत्र की जगह व्यौहार की जाती है। इसकी खुशबू बहुत समय तक ठहरती है, इसके लगानेसे इत्र लगाने की आवश्यकता नहीं रहती, कपड़ोंमें लगानेसे इसकी खुशबू स्थाई रहती है यहां तक कि बिना धोबीके यहां गये इसकी महक नहीं छुटती इसकी टिकिया अगर एक छोटी सी डिबियामें रहे तो भी उसकी गमक दूर २ तक फैलती है। इसके बनाने कीं बिधि नीचे लिखी जाती है।

सोलह आउन्स हार्ड पैराफिन (Hard perafin) को एक चीनी मिट्टीके बर्तन या चीना कलई किये (Enamel) के बर्तन में डालकर इसे अग्नि पर गरम करना चाहिये। खूबसूरतीके लिये इसमें रङ्ग भी मिला दिया जाता है; इसलिये १३ आउन्स हार्ड पेराफिन (Hard perafin) में ४ ग्रेन तेलमें मिलानेका रंग मिला देना चाहिये। जब दोनों आगपर एक साथ मिलकर गरम हो जांय तो लकड़ीसे चलाकर नीचे उतार लेना चाहिये, फिर उसमें नीचे लिखे अनुसार खुशबू डालकर अच्छी तरह मिला देना। अगर बाजारमें बेचना हो तो खूबसूरत सांचेकी डिबिया बनाकर उसीमें ढाल ले फिर डिबियामें बन्दकर अपना मार्का लगा कर बाजारमें बेंचे।

सुगंधित टिकिया ।

नं०—१

हार्ड पेराफिन	Hard Perafin	आउन्स	१६
हिको जैसमिन	Heiko Jasmin	„	२

नं०—२

हार्ड पेराफिन	Hard Perafin	आउन्स	१२
हिको नरसिस	Heiko Nurcissus	„	१
„ सुरंगी	„ Surangi	„	१

नं०—३

हार्ड पैराफिन	Hard Perafin	आउन्स	१२
हिको निरोली	Hiko Niroli	„	१
„ व्हाइटरोज	„ White Rose	„	१

नं०—४

हार्ड पैराफिन	Hard Perafin	आउन्स	१२
हिको लवेन्डर	Heiko Lavender	„	२

क्रीम (CREAM)

यह एक तरहकी सुगन्धित मलहम है जो कि मुंहके रुखड़ेपन को तथा त्वचा सम्बन्धी रोगोंको दूर कर चेहरे पर कान्ति लाती है। इसकी तासीर ठंढी कीटाणु नासक होती है इसको नित्य व्यवहार करनेसे झाँई मुंहासे; रुखड़ापन, झुर्रियें दूर होकर मुख चन्द्रकान्ति के समान हो जाता है। यह स्त्रियोंके शृंगारमें एक खास चीज है इसलिये व्यवसाय प्रेमी इसे बनाकर खूब लाभ उठा सकते हैं।

चन्द्रमुखी क्रीम

बढ़िया मक्खन	Fresh butter	१ छंटाक
रेक्टीफाइड ग्लीसरीन	Rectified glycrin	१ ,,
ओटो रोज	Otto rose	६ मासे

बनाने की विधीः—

पहिले मक्खनको गर्म करके पिघला लेवे फिर उसमें ग्लिसरीन मिला देवे! ठंडा होने पर ओटो रोज मिलाकर फेन्सी सीसियोंमें भरकर लेविल देकर बाजारमें चलावे।

नं०—२

बेलेका तेल बढ़िया	Bela oil	१ छंटाक
असली नीबूका तेल	Lemon oil	२ तोला
ग्लीसरीन	Glycrin	२ तोला

यह तीनों चीज मिलाकर रख लेवे, इसके उपयोगसे चेहरेका रङ्ग स्वच्छ सुन्दर, कोमल; सफेद;होता चला जावेगा, झाईं मुहासे मिटकर चेहरा चन्द्र-कान्तिके ऐसा हो जावेगा।

कोल्ड क्रीम ३

बादाम का तेल	३ आउन्स
सादा मोम	१० ड्राम
स्पार्मा सिटि	१ आउन्स
सुहागा	२० ग्रेन
हिको ह्वाइट रोज	७ बूंद

ऊपर बताई हुई तीनों चीजोंको चीना मट्टीके या चीना कलई किये बर्तनमें डाल आग पर चढ़ाओ जब तीनों मिलकर एक जान हो जाय तब फ्लालेनसे छान लो। तब दूसरे बर्तनमें जलके साथ सुहागा मिलाकर उन तीनों चीजमें मिला दो, इसके बाद इसमें हिको ह्वाइटरोजको डालकर लकड़ीसे चलाकर अच्छी तरह मिला दो। बस क्रीम तय्यार हो जावेगा; बाजारमें बेचना हो तो सुन्दर शीशी पैकिंग वगैरह देकर बेच सकते हैं।

ब्यूटी (Beauty)

संसारमें आजकल फैसन की बड़ी ही भरमार हो रही है, योरोपियन सभ्यताके सन्सर्गसे हमारे देशमें योरोपियन सौन्दर्य वर्द्धक चीजें लाखों रुपयोंकी हर साल आती है। अगर हमारे देशके नवयुवक तथा नवयुवतियें इसे घरोंमें अपने व्यवहार या व्यवसाय के लिये बनाना चाहें तो बनाकर देशका लाखों रुपया बचा सकते हैं। अतः इस अध्यायमें खूबसूरती बढ़ाने वाली (Beauty) जितनी चीजें हैं उन्हीं का वर्णन है।

गुलाब का दूध (Rose milk)

शुद्ध गन्धक	१ ड्राम	ग्लिसरीन	४ ड्राम
गुलाबजल असली			६ आउन्स

बनाने की बिधी:—

उपरोक्त लिखी गन्धक को गुलाबजलमें डालकर खूब घोंटे जब दूध सा तय्यार हो जाय तब उसमें ग्लीसरीन डालकर अच्छी तरह दोनों चीजमें मिला दे, बस गुलाबका दूध तय्यार हो जावेगा। यह नित्य व्यवहार करनेसे झांई, मुंहासे, खुजली, चेहरेका फटना सब दूर होता है, इसके व्यवहार करनेसे चेहरा कोमल तथा चमकदार और गोरा हो जाता है।

ब्लूम आफ रोज (गुलाबी गाल करना)

इसे स्त्रियें अपने गालों पर गुलाबी रंग लानेके लिये व्यवहारमें लाती हैं।

कारमाइन नं० ४०	१ ड्राम	गुलाबजल	४ आउन्स
वाटर आफ एमोनियां	२ ड्राम	एसेन्सरोज	२ ड्राम

कारमाइनको एमोनियांके जलमें मिलाकर बाकी दोनों चीजों को भी उसमें मिला दीजिए फिर व्ववहारमें लाइये।

ओठों की-लाली (Red lips)

भारतीय शिक्षित समाजमें ओठोंको लाल करनेका प्रचार बहुत ज्यादा है। पारसी तथा भारतीय स्त्रियोंमें शिक्षित समाज की स्त्रियें इसे व्यवहारमें लाती हैं उसके बनाने की बिधि नीचे लिखी जाती है।

बादामका तेल	१ छंटाक
सादामोम	१ आउन्स
हिको ह्वाइट रोज	१ आउन्स
रतनजोत	।। तोला

बनाने की विधिः—

छँटाक भर बादामके तेलमें एक आउन्स सादामोम डालकर किसी कलईदार चीनामट्टीके बर्तनमें गर्म करो; गर्म होने पर उसमें रतनजोत मिला दो। तीनों मिलकर एक जान हो जाने पर हिको ह्वाइट रोज मिलाकर शीशियोंमें भर लो; इसके लगानेसे लब खूब लाल हो जावेंगे!

गुलाबी नाखून बनाना Rose Nail

रेक्टीफाइड स्पिरिट	१ सेर
चपड़ा	१ पाव
बढ़िथा गुलाबी रङ्ग	आधा पाव

बनाने की बिधीः—

चपड़ेको महीन पीसकर तथा रङ्गको स्पिरिटमें घोलकर दोनों चीज स्पिरिटमें मिलाकर अच्छी तरह हिला दे। फिर मजबूत कार्ग लगाकर रख देवे। यह बात अच्छी तरह ध्यान रक्खें कि इसमें पानी न पड़ने पावे।

चन्द्रमुखी अर्क।

बादाम की मींगी १ छँटाक लेकर गुलाबजल जो कि बहुत बढ़िया हो उसमें खूब बारीक पीस लो, पश्चात चन्दन का तेल ६ मासे, इत्र केवड़ा; इत्र हिना, इत्र गुलाब; तीनों चीज ६-६ मासे, रसकपूर पिसा हुआ १ रत्ती इन सबको खलमें डालकर खूब मिलाकर एक

कर लो। जरूरतके समय किसी अच्छे साबुनसे मुंह साफ करके इसे मलो; चेहरा चन्द्रकान्तिके समान निकल आवेगा, बदसूरत आदमी भी खूबसूरत लगने लगेगा।

सौन्दर्य उबटन ।

बालछड़, इलायची, कपूर, कचरी, लौंग कुलंजन; मौलश्री, चिरौजी-रीठा, इन सब चीजोंको बराबर बराबर लेकर कूट-पीस कर कपड़-छान करके रख लो, जब काममें लाना हो बढ़िया चमेली के तेलमें मिलाकर शरीर पर मालिश करनेसे शरीर की कान्ति और तेज बढ़ेगा और सौन्दर्य की उन्नति होगी ।

बालों को गिरने से रोकना ।

चाय की पत्तियां और त्रिफला दोनों चीजों को कूटकर पानीमें उबालो, जब उबलकर दोनों का सार निकल आवे तब मल और छान कर ठंडा कर इससे सिरके बाल धोये जांय तो बालों का गिरना बन्द हो जायगा ।

महावर या अलता ।

यू० पी० बिहारमें इसे महावर तथा बंगालमें इसे आलता कहते हैं। सौभाग्यवती स्त्रियाँ इसे अपने पैरोंमें खूबसूरतीके लिये लगाती हैं। इसका लगाना भी सौभाग्य चिन्हमें गिना जाता है ।

बनाने की बिधी:—

किरमिची रंग को पानीमें घोल आग पर चढ़ाकर पका ले फिर छानकर बोतल या शीशीमें भरकर अगर बेचना चाहे तो बक्स बनवा लेबिल लगा बेच सकते हैं,और अपने निजी व्यवहारमें भी ला सकते हैं

मुख दुर्गन्धि नाशक मसाला।

तज, कपूर, बच; कूट; नागकेशर; कमलकी जड़, सबको बराबर बराबर लेकर कूट पीसकर कपड़छान करले, फिर सहतके साथ मिला कर चनेके बराबर गोलियां बना ले और शीशीमें भरकर रखलें। एक दो गोली नित्य चूसनेसे मुख दुर्गन्धि दूर होकर सुगन्धि आने लगती है।

कोलन वाटर।

अब आपलोगोंको कोलन वाटर के विषयमें बताते हैं। इसके बनाने की क्रिया भी लवेन्डर वाटर की ही तरह है केवल फर्क इतना है कि इसमें पानी कम पड़ता है और स्पिरिट ज्यादा। इसकी तासीर बहुत ठंडी होती है और खुशबू भी बहुत तेज होती है। इसे सिरमें लगानेसे मगज ठंढा होता है तथा इसकी मनमोहनी खुशबू से दिमाग तर रहता है। कोलनवाटर को भी ठीक लवेन्डर वाटरकी की जगह काममें लाते हैं, इसके गुण भी प्राय वैसे ही हैं पर इसे पानीमें मिलाकर व्यौहारमें लाते हैं।

बनानेकी बिधी।

एक कांचके भाड़में नीचे लिखी सब चीजें भरके बन्द करके पन्द्रह दिन तक पड़े रहने दें। दिनमें दो तीन बार उसे हिला दिया करें, फिर भबका यन्त्र (जो कि अर्क निकालनेका आयुर्वेदिक यन्त्र होता है) में डाल अर्क निकाल कर शीशियोंमें भर लें।

कोलन वाटर नं० १

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectifid spirit	सेर	१
आयेल लवेन्डर	Oil lavender	औंस	१
„ मन्था	„ Mantha	ड्राम	२
„ लौंग	Cloves	„	४
साफ पानी	Rectified water	औंस	१०

कोलन वाटर नं० २

रेक्टीफाइड स्पिरिट	Rectified spirit	सेर	१
फ्लोरा रोज	Flora rose	ड्राम	२
हिको निरोली	Hieko niroli	औंस	१
„ रोजमरी	„ Rose murri	औंस	१
„ मश्क	„ Musk	ड्राम	१
आयल औरेंज	Oil orrange	औंस	१
साफ पानी	Rectifeid water	औंस	१०

कोलन वाटर नं० ३

रेक्टी फाइड स्पिरिट	Rectified spirit	सेर	३
ओयल वर्गामोट	Oil of bargamot	औंस	१
„ निरोली	„ Niroli	„	१
लेमुन	„ Lemon	„	२
लवेन्डर	„ Lavendr	„	१
साफ पानी	Rectified water	„	१०

—o—

गुलाबजल Rose water

गुलाब जल भी बड़ी मशहूर चीज है, इसे गुलाबका अर्क भी कह सकते हैं। इसको बनाने की विधी नीचे लिखी जाती है।

गुलाबके ताजा फूलों की कली १ सेर खस आधा पाव

इन दोनों चीजोंको अधकचरा कूटके एक कांचके भांडमें चारसेर साफ पानी भरकर उसीमें ऊपर लिखी दोनों चीजोंको मिलादें, फिर कांच के भांड़का मुंह बन्द करके दो दिन तक धूपमें पड़ा रहने दें फिर उसका अर्क खीचने वाले भवका यन्त्र से अर्क निकाल लें, बस गुलाब जल तयार हो गया, अगर और महकदार तथा कीमती बनाना हो तो उसमें गुलाबका इत्र भी मिला दें। कांचके वर्तनका मुंह ऐसा बन्द रहना चाहिये कि उसमेंसे हवा न निकल सके नहीं तो खुशबू कम हो जावेगी।

दूसरी बिधी।

आधासेर गुलाबकी ताजी पत्ती २ सेर साफ पानी दोनोंको एक वर्तनमें डालकर आधा घंटे तक खूब उबालें। उबल जानेके बाद नीचे उतार कर उसे अच्छी तरह मल कर छान लें और शीशियोंमें भरलें, बस गुलाब जल तैयार हो गया। ज्यादा कीमती बनाना हो तो उसमें गुलाबाका इत्र या (Hieko white rose) मिला दें।

फूलोंके तेल बनाने की रीति।

जिस प्रकारके फूलोंका तेल बनाना उसी प्रकारके ताजे फूल एक पाव लाओ लेकर उसे अधकचरा कर लो। एक पाव फूल पीछे १ सेर साफ किया हुआ तिलका तेल (Rectified til oil)

लो इसे एक कांचके कड़े ढक्कनदार बर्तनमें भर कर उन फूलोंको इस तेलमें डुबा दो। फिर बन्द करके उस बर्तनको पन्दरह दिन रात धूप तथा ओसमें पड़े रहने दो, पन्दरह दिन बाद उसे खोलकर छान तथा फूलोंको निचोड़ कर निकाल लेना, फिर शीशियोंमें भर लेना।

यह तेल बढ़िया होता है मगजको ठंडा रखता है, असमयमें बालों का पकना रोककर बालोंकी जड़ को काला करता है। मगर खुशबू ज्यादा तेज नहीं होती इसलिये जिस चीजका फूल हो उसीका इत्र या उसी की (Hoiko) उसमें डाल कर तेज महकदार बना लेना चाहिये।

दूसरा विधी।

धोई तिल्ली साफ की हुई किसी कपड़े के ऊपर बिछा दो चमेली के फूलोंको जो खूब सुगन्धिदार हों लेकर उस तिल्लीके ऊपर बिछा दो फिर इसके ऊपर तिल्ली बिछाओ और फिर चमेलीके फूल बिछा कर २४ घन्टे बराबर रक्खा रहने दो जब फूल बस जावें तब उन फूलोंको निकालकर नवीन फूल उसी तरह बिछा दें। जब यह फूल भी बस जावें तब सबको लेकर कोल्हूमें पिलवा लो, बढ़िया तेल तय्यार हो जावेगा।

साबुन बनानेकी रीति (Soap system)

आजकल भारतवर्षमें तरह तरहके साबुन जैसे कपड़ा धोनेके घटिया और बढ़िया बदनमें लगानेके घटिया बढ़िया तथा दवाइयोंके साबुन, कार्बोलिक और नीमका साबुन वगैरह अनेकों तरहके बाजारों में चल रहे हैं। अधिकांश आदमी जो ऐसे उपयोगी कामको करते हुये भी असफल हो जाते हैं, इसके कई एक कारण हैं एक तो बाजार के मारकेटमें प्रतिद्वन्दिता (Campetition) (२) नीयत ठीक न होनेसे प्रतिद्वन्दिताके फेरमें पड़कर मालको खराब कर देना (३) खुद भी साबुनके बनानेसे अनभिज्ञता, तथा जो कारीगर हैं उनकी भी अनभिज्ञता और कुछ लापर्वाही । इन्हीं तीन प्रधान कारणोंसे वह साबुनके काम असफल होते हैं । हमारी पुस्तकमें अनुभवी तथा विद्वान लेखकोंके अनुभव-सिद्ध प्रयोग लिखे हैं जिसके अनुसार बनानेसे न तो असफल ही हो सकते है न अनभिज्ञता ही रह सकती है। हम अपने पाठकोंसे यह अनुरोध करते हैं कि अगर इसमें कोई त्रुटि रह गई हो तो इसमें क्या त्रुटि रह गई है इसे लिखकर हमारे विज्ञ पाठक हमें सूचित करेंगे तो अगले एडीसनमें हम इन त्रुटियोंको सुधार देंगे, साबुन ठंडी रीतिसे; तथा उबाल कर गर्म रीत्तिसे; दो प्रकारके बनते हैं जिनका वर्णन आगे आवेगा। प्रथम काम शुरू करनेके पहिले किन २ चीजों की आवश्यकता पड़ती है वह आपको बतलाई जाती है।

साबुन बनानेके पात्र तथा सामान।

कई छोटे मोटे चीनीके कलईदार तथा टीन और लोहेके बर्तन चौड़े मुंह की गहरी कढ़ाई; साबुन ढालने की पेटी जो कि लोहे की मोटी चद्दर की बनवाई जा सकती है। यह पेटी लम्बाईसे तिहाई कम यानी तीन फुट लम्बी पेटीके लिये १ फुट या डेढ़ फुट चौड़ी और दो फुट ऊंची पेटी बनवाना चाहिये। पेटीके पांचो पल्ले इच्छानुसार जोड़े और अलग किये जा सकते हों ऐसी पेटी होनी चाहिये साबुन ढालते समय सबको जोड़कर इनके दराजों को गीले साबुन (जो कि बहुत गाढ़ा गूंधे आटेके समान हो) से अच्छी तरह वन्द कर देते हैं अगर ऐसा न किया जावेगा तो ढीला साबुन सब वह जायगा।

साबुन चलानेकी लकड़ी।

यह सीसम की लकड़ीकी बनवानी चाहिये। दूसरे एक मथानी होनी चाहिये। मथानी भी आवश्यकतानुसार बनवा लेना चाहिये एक लोहेके छड़में एक सिरेपर पकड़नेके लिये हैन्डिल और दूसरी ओर मथनेके लिए छता चाहिये (जिस प्रकार दही मथनेकी मथानी होती है) यह मथानी सोडा मिक्शचर बनानेके लिये लकड़ी या कलछुलसे ज्यादा उपयोगी होती है।

(१) चलनी या (छन्नी) चाहिये (२) साबुन की लम्बी छड़ियों के बत्ती काटनेके लिये तार लगे हुये यन्त्र जो कि लोहारोंसे बनवा लिये जाते हैं। एक और दूसरा यन्त्र होता है उसमें जितनी बड़ी

बट्टिया काटनी होती हैं, उतनी २ दूर पर तार लगे रहते हैं। पहिलेसे काटकर रखे हुए बड़े छड़ोंको लोहेकी चादरके चट्टे पर यन्त्रसे दबाने पर इच्छित टुकड़े सैकड़ोंकी तादादमें कट जाते हैं।

साबुनकी बट्टी बनानेकी यन्त्र।

साबुनके टुकड़े की बट्टी बनानेके यन्त्र दो प्रकारके होते हैं। (१) स्क्रू प्रेस (अर्थात् पेंचदार छापा) (२) स्टाम्पिंग प्रेस (ठप्पा मारनेका छापा) उमदा मुलायम साबुनमें यदि गहिरा नक्शीदार छापा देना हो तो पेंचदार छापा काममें लावें और मामूली वजनदार साबुनके लिये स्टाम्पिंग प्रेससे काम लेते हैं।

कपड़ा धोनेका साबुन (Washing soap)

सबसे सस्ते साबुनका नुक्सा।

सज्जीमट्टी	१ सेर	नारियल तेल	आधा सेर
पानी	५ सेर	बेबुझा चूना कलईवाला	आधा पाव

बनानेकी बिधी—

पहिले सज्जी मट्टीके ढेलेको फोड़कर उसमेंसे कंकड़ चुन कर फेंक दीजिये, पीछे पीतलके वर्तनमें उपरोक्त पानी डालकर फिर सज्जी डाल दें। चूनेको पीसकर और नारियलके तेलको भी उसी वर्तनमें डाल दें, सब चीजों को मिलाकर पांच मिनिट तक सीसमके डन्डे या मथानीसे चलाइये फिर आगपर चढ़ाकर वर्तनका मुंह खूब कसके बन्द कर देवें। आगपर खूब खौल जानेके बाद जब उसमें चड़ चड़के ऐसा शब्द होने लगे और पानी जलकर थोड़ाही रह जावे तब वर्तनको नीचे उतार लेवें और ढक्कन हटाकर उसमें धीरे

धीरे पानीकी धार छोड़िये। ऐसा करनेके साबुनमें यदि कुछ कूड़ा कर्कट भी होगा तो ऊपर आ जायगा, जब पानी बर्तनके बाहर बहने लगे और उसके साथ सब कूड़ाकर्कट भी बह जाय तब पानीका डालना बन्द कीजिये और बर्तन ज्योंका त्यों पड़ा रहने दीजिये, लगभग एक घण्टेके बाद साबुन जम जायेगा। जमनेके बाद गोल या चौखून्टी या चपटी जैसी भी इच्छा हो बट्टियां बनालें।

नोट—बर्तन पीतलके अतिरिक्त लोहे या तांबेका भी काममें लाया जा सकता है। बट्टी किसी दूसरे बर्तनमें काटनी हो तो जमा साबुन दूसरी चीजमें उलट लें, पानी गिरा दें तब बट्टियें काट लें। इस साबुन का रङ्ग तो मैला होगा पर कपड़ा साफ करनेमें अच्छा होगा।

सस्ता सफेद साबुन।

साबुन बनानेके कामके लिये ९८ डिगरी का कास्टिक सोड़ा सबसे अच्छा होता है सोडा भले प्रकार जांच लेना चाहिये। सर्दीमें रक्खे हुये टीनका सोडा तथा खुले हुये टीनका सोड़ा खराब हो जाता है कारण कि हवा लगनेसे इसकी गैस निकल जाती है।

पहिले सोडेको किसी लोहे या तांबे या पीतलके बर्तनमें तीन गुना पानी डाल सीसमकी लकड़ीके डंडे या मथानीसे खूब घोंटना चाहिये। (भले प्रकार न घोंटनेसे सोडेके ढेले रह जाते हैं।) सोडेका मिकश्चर बनानेमें यदि पानी ज्यादा मालूम पड़े तो आगपर चढ़ा अन्दाजका ज्यादा पानी उड़ा देना चाहिये। इसे कास्टिक मिकश्चर भी कह सकते हैं।

साबुन बनाने का नुसखा।

कार्ष्टक सोडा ९८ डिगरी वाला	१	सेर
पानी	३	,,
महुये का तेल	२	,,

उपरोक्त तीनों चीजोंको एकमें मिलाकर कढ़ाईको भट्ठी पर चढ़ाकर मन्द मन्द आगमें गरम करना तथा लकड़ी की मथानीसे इसको चलाते रहना चाहिये। जब मिश्रित पदार्थ गाढ़ा होने लगे आंच परसे उतार तुरत ठंढ़े बर्तनमें उड़ेल देना चाहिये; बस थोड़ी देर बाद साबुन जमकर तैय्यार हो जावेगा। इस साबुनकी सुन्दर गोल बट्टियां बना ली जायँ, अगर बेचना हो तो ऊपरसे अपनी कम्पनी का नाम छपा हुआ कागज सुन्दर रीतिसे पैक करके बेचे; यह साबुन बाजारू साबुनोंसे बहुत अच्छा होगा।

काष्टिक सोडा द्वारा ठँडी रीतिसे साबुन बनाना

सरसोका तेल	३ सेर	काष्टिक सोडा	॥। सेर
पानी	२॥ ,,	गंधकका तेजाब	१ तोला

बनानेकी बिधीः—

पहिले किसी बर्तनमें सोडेको डालकर पानी मिलाकर हल करना चाहिये। किसी लकड़ी या कलछुलसे चलाते रहने पर लगभग दो घण्टेमें सोडा घुलकर पानीमें मिल जावेगा। इस पानीको सोडा मिकश्चर भी कह सकते हैं, सोडामिकश्चर तैय्यार हो जानेके बाद कढ़ाई या बर्तनमें तेल डालकर उसमें धीरे धीरे मिकश्चर धार बांधकर

डालते जायँ और किसी लकड़ीसे साथही साथ मिलाते भी जायें। जब चलाते २ गाढ़ा हो जावे, सब चीजें मिलकर एक हो जावे तब जिस बर्तनमें जमाना हो साबुन उड़ेल दें। बारह घण्टे बाद जम जावेगा। जाड़ेका दिन हो तो गरम जगहमें रखकर कम्बलसे ढक देना चाहिये, यदि गर्मीका दिन हो तो कहीं भी रखकर खुला छोड़ दें। गर्द धूल इत्यादिसे बचनेके लिये सादे कपड़ेसे ढांक देवें।

नोट—कार्यारम्भ करनेके पहिले ही तेल वाले बर्तनमें तेजाब छोड़ देनी चाहिये, जबतक दो घण्टेमें सोडा मिकश्चर तैयार रहेगा। तेल भी साफ हो जावेगा तब तेलको छानकर दूसरे बर्तनमें निकाल लें अगर ऐसा न कर उसी बर्तनमें डालोगे तो नीचे मैला जम रह जावेगा। ऐसा करनेसे साबुन एक दम साफ तैय्यार होगा।

सोप स्टोनके प्रयोग द्वारा भारी साबुन बनाना:—

कड़ुआ तेल	१० सेर	काष्टिक सोडा	२। सवा दो सेर
सोप स्टोन	४ ,,	पानी	१५ सेर
गंधकका तेजाब	२ तोला		

बनानेकी विधी:—

पीछे बतलाये अनुसार तेलमें तेजाब छोड़कर रख छोड़ना चाहिये दो घण्टे बाद तेल छानकर उसमें खूब बारीक पीसा तथा छाना हुआ सोप स्टोन धीरे २ तेलमें छोड़ते हुये लकड़ीसे चलाता जाये। जब दोनों मिलकर एक हो जाय तब काष्टिक मिक्शचर तैय्यार करे। मिक्शचर तैय्यार करके पीसे हुये पत्थरको जो तेलमें पहिले ही

पड़ा हुआ है डालकर धीरे धीरे कलछुले या लकड़ीसे चलावें। जब सब चीजें मिलकर एक हो जावें तब साचोंमें या जिस चीजमें चाहो डालकर जमा लो २४ घण्टे पड़ा रहनेसे जम जायगा।

मैदा मिलाकर साबुन बनाना।

कड़ुवा तेल	१	सेर	काष्टिक सोडा	६।।	छंटाक
मैदा	१	पाव	गंधकका तेजाब	१।।	मासा
पानी	२	सेर			

बनानेकी बिधी;—

पहिले १ सेर पानीमें मैदा अच्छी तरह मिलाकर घोलकर रखदो इसे मदा मिक्शचर कहते हैं, फिर बाकी बचे १ सेर पानीमें सोडा मिलाकर सोडा मिक्शचर भी बनाकर रखदें। पूर्वोक्त बनाये ढ़ँगके अनुसार दोनों मिक्शचरोंको तैय्यार करनेके पहिलेही तेलमें तेजाब डालकर तेल रख देना चाहिये जिससे दोनों चीज तैय्यार होते २ तेल भी साबुन हो जावे।

साफ हुये तेलको दूसरे बर्तनमें छानकर ऊपर लिखा मैदा मिक्शचर डालकर धीरे २ मिलाओ, जब यह दोनों मिलकर एक हो जावे तब उसमें सोडा मिक्शचर भी डालकर अच्छी तरह मिलाकर घोंटो तीनों चीजें अच्छी तरह मिलाकर एक घंटे तक घोंटी जाय इसके बाद जिस चीजमें चाहें जमा दें लगभग १२ घण्टेमें जम जायेगा। जाड़ेका दिन हो तो गर्म जगहमें रखकर कम्बल डाल दे यदि गर्मीका दिन हो तो गर्द या धूलसे बचानेके लिये सफेद पतले कपड़ेसे ढँक दे।

हार्ड सोप (Hard soap)

अर्थात ठँडो रीतिसे सादा साबुन बनाना।

नारियलका तेल ४ सेर   ३० डिग्रीका काष्टिक मिक्शचर २ सेर
तेजाब   २ तोला

बनानेकी विधी:—

पीछे बताई विधीके अनुसार तेल साफ करके छान लें फिर काष्टिक मिक्शचरमें तेल मिलाकर शीशमकी लकडीके डँडे या कलछुलसे चलाते जायं। चलाते २ जब गाढ़ा हो जाय उसमें तार बँधने लगे तब समझिये कि साबुन तैय्यार हो गया। १ घण्टा घोंटने के बाद जिस बर्तनमें चाहे डालकर जमा लें, २४ घण्टेमें हार्ड सोप तैय्यार हो जायेगा।

दूसरी विधी:(Hard soap)

नारियल का तेल ५ सेर   सूखा काष्टिक सोडा ६८ डिग्रीका १ सेर
साफ पानी   ३ सेर

बनानेकी विधी:—

चीना मट्टके बर्तनमें काष्टिक सोडेको पानीमें मिलाकर तीन चार दिन तक रख छोड़िये। चार दिन बाद सोडा गल कर पानी हो जावेगा। इस पानीको छानकर दूसरे बर्तनमें रख लेना। तेलको निर्गन्ध करके एक बर्तनमें रक्खें फिर उसमें काष्टिक सोडेके पानी की पतली धार डालते हुये लकड़ीसे चलाता जावे, जब सब मिक्शचर तेलमें दे दिया जाय तब लकड़ीसे अच्छी तरह चलाकर आगपर धीमी २ आंचपर पकाना, जब गाढ़ा हो जाय तब पेटीमें या दूसरे

बर्तनमें डाल जमा दे । २४ घण्टेमें यह हार्ड सोप (Hard soap) तैय्यार हो जावेगा, हर एक बढ़िया साबुन बनानेमें यही हार्ड सोप काममें आवेगा ।

बढ़िया साबुन बनानेमें आवश्यकीय नाप तथा कार्यदायक यन्त्र (Womi hydro meter)

बढ़िया साबुन बनाने वालोंको चाहिये कि (Womi hydro-meter) नामक यन्त्रको अपने पास जरूर रक्खें कारण कि पानी तथा सोडा मिलाकर जो सोडा मिक्शचर तैय्यार होता है । वह कितनी डिग्रीका है यह अन्दाजसे बनानेमें भूल भी हो जाती है, जिससे बना हुआ माल खराब होकर पासकी लगी लागत भी नष्ट हो जाती है । (Womi hydro meter) में सून्यसे लेकर ५० डिग्री तकके चिन्ह होते हैं पर साबुन बनाने वालोंके काम ४० डिग्री तकका ही यन्त्र काममें आता है । जब सोडा और पानी मिला सोडा मिक्शचर (Soda mixture) तैय्यार करते हैं उसमें कितनी डिग्रीका यह मिक्शचर तैय्यार हुआ है यह देखनेके लिये यह यन्त्र काममें आता है ।

हाइड्रोमीटरको पानीमें छोड़ते ही जितनी डिग्रीका गाढ़ापन उस पानीमें होगा उतनी ही डिग्री पर हाइड्रोमीटर रुक जावेगा । शेष-भाग उसका पानीके अन्दर चला जावेगा । आगे डिग्री, सोडे वगैरहका चार्ट भी दिया जाता है उसीके अनुसार मिक्शचर बना कर डिग्री नाप लिया करें ।

इस चार्ट के समझानेके लिये नीचे नक्शा देते हैं ।

काष्टिक सोडेका उपयोग करनेवाला चार्ट ।

कास्टिक सोडेके पानीके डिग्री० वोमे और उसमें फी सैकड़ा सूखा काष्टिक डालनेका प्रमाण ।

विष्टि गुरुत्व	डिग्रीबोमे	डिग्री ड्राडल	सूखा काष्टिक
१, १६२	२०	३२, ४	१४, ३३
१, १३१	२१	३४, २	१५. १३
१, १८०	२२	३६, ०	१५, ९१
१, १९०	२३	३९, ०	१६. ७७
१, २००	२४	४०. ०	१७, ६७
१, २१०	२५	४४, ०	१८, ५८
१, २२०	२६	४४, ०	१९, ५८
१, २३१	२७	४६, २	२०, ५९
१, २४१	२८	९, २	२१, ५२
१, २५२	२९	५०, ४	२२, ६४
१, २६२	३०	५२, ६	२३, ६७
१, २७४	३१	५४, ९	२४, ८१
१, २८५	३२	५७, ०	२५, ८०
१, २९७	३३	५९, ४	२६, ८३
१, ३०८	३४	६१, ६	२७, ८०
१, ३२०	३५	६४,	२८, ८३
१, ३३२	३६	६६, ४	२९, ९३
१, ३४५	३७	६९,	३१, २२
१, ३५७	३८	७१, ४	३२,४७
१, ३७०	३९	७४, ०	३४, ९५
१, ३८५	४०	७९,४	३७, ४७

मान लो कि हमें ३७ वोमे कास्टिक सोडेका पानी तैयार करना है तो इसे तैय्यार करनेमें ३१, २२ सूखा काष्टिक सोडा और पानी लेना होगा यह पानी ६९ डवाडल और १,३४५ विशिष्ट गुरुत्वका होगा

ठँडी रीतिसे सुगन्धित साबुन तैय्यार करनेकी बिधी।

आगे जो साबुन बनानेकी बिधी बतलाई जायगी उसमें लिखेतुसार नारियल तेल को अगर वह जमा हुआ है तो गरम करके पीछे ३८ वोमे काष्टिक सोडेका पानी तय्यार करके प्रमाणके साथ तेलमें काष्टिकके पानीकी पतली धार डालकर लकड़ीसे चलाते जाना। इस प्रकार काष्टिकका पानी तेलमें डालनेसे दोनों चीजें मिलकर सफेद हो जायँगी (कभी २ थोड़ा ही काष्टिक का पानी तेलमें डालनेसे मिश्रित वस्तु सफेद हो जाती है फिर भी धीरे धीरे सब काष्टिकका पानी तेलमें मिलाकर लकड़ीसे चलाते जाने पर दोनों चीज मिलकर गाढ़ी और एक समान हो जायेंगी। उस समय इस मिक्शचरमें से थोड़ा भी निकालने पर धागेके समान तार बंधने लगे तब इस मिक्शचरमें सुगन्धि और रङ्ग मिलाकर इसे लकड़ीसे चलाता जावे। एक घण्टेमें सब मिलकर जब गाढ़ा हो जावे तब पेटी में जमानेके लिये ढाल ले। और ऊपरसे एक साफ कपड़ा ढक देवे इस रीतिसे इसमें गर्मी बनी रहती है। कुछ घण्टा बाद साबुन जमने लग जाता है, २४ घण्टे पेटीमें पड़ा रहने दे. साबुन जम जावेगा तब उसे पेटीसे निकाल कर दो घण्टे खुली हवामें छोड़ दे जिससे और भी कड़ा हो जाय।

फिर उसके लम्बे २ टुकड़े पिछले साबुन प्रकरणमें बताये यन्त्रसे काट लेवे, उन टुकड़ोंको थोड़ी देर तक हवामें सुखा कर उसके कोने कतर लेना। फिर उसके वजन तथा नापसे बराबर बराबरके टुकड़े काटकर साबुन छापनेके यन्त्रमें डालकर उसकी बट्टियां बना लेना।

साबुन की तय्यार बट्टियोंको एक दिन हवामें सूखते रहने देकर उसकी बढ़ी तथा छिटकी हुई कोरको सावधानीसे छीलकर बराबर कर लेवें। एक कपड़ेको मद्यसारमें भिगोकर साबुनकी बट्टियोंको उसमें डाल रगड़ते हैं इस रीतिसे साबुन चिकना होकर देखनेमें सुन्दर लगता है। अगर बाजारमें बेचना हो तो मोमी कागज (आयल पेपर) में लपेट सुन्दर लेबिल तथा नाम वाले कागजोंमें लपेट लें फिर कार्ड बोर्ड के बाक्समें तीन तीन चक्कियें रखकर सुन्दर लेबिल बक्स पर लगाकर बाजारमें चलाइये।

नारंगी की खुशबूका साबुन (Orrange soap)

३६° बोमेका कास्टिक सोडेका पानी	२०	सेर
साफ़ किया हुआ रेंड़ीका तेल	२	सेर
रिफाइन्ड नारियल का तेल	३८	सेर
मीठा नारंगी का तेल	१०	तोला
नारंगी रंग घोल कर	६	„
पेतिग्रेन का तेल	३	„
लावेन्डर का तेल	६	„
अजवाइनका तेल	१	„
नीबूका तेल	८	„

रायल सोप (Royal soap)

३८° वोमेका कास्टिक सोड़े का पानी	१० सेर
नारियलका तेल	१६ सेर
रिफाइन रेंड़ी का तेल	१ सेर
जापानी मोम	१ सेर
क्यासिया का तेल	४ तोले
लौंग का तेल	४ "
सौंफका तेल	४ "
गुलाबी रंग घोल कर	६ "
हिको मश्क	४ औंस

लौंगका साबुन (Cloves soap)

३७° वोमेका काष्टिक सोड़े का पानी	६ सेर
नारियलका तेल	१२॥ सेर
क्यासियाका तेल	२ तोले
वर्गा मोटका तेल	२ तोले
लौंगका तेल	६ तोले
तमाकू रंगका रंग	१० मासे

सफेद गुलाबका साबुन (Whiterose soap)

नारियल का तेल	१२॥ सेर
३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	६ सेर
जीरेनियमका तेल	२॥ तोले
नीबूका तेल	२ तोले

र्गमोटका तेल	२॥ तोले
वेन्डरका तेल	३ तोले
सका तेळ	२ तोले
को ह्वाइट रोज	२ औंस
लाबीरंग	२ तोला

युनिवर्सल सोप (पीलारंग) Universal soap

७° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	५ सेर
रियलका तेल	१२ ,,
फाइन रेंड़ीका तेल	१ ,,
जवाइनका तेल	३ तोले
वेन्डर का तेल	३ तोले
र्गमोट का तेल	३ तोले
ंगका तेल	२ तोले
लारंग	३ तोले

नोट—इसी तरह अगर पीले रंगका युनिवर्सल सोप बनाना हो पीला रंग, नारङ्गी का बनाना हो नारंगी रंग, लाल रङ्ग का ना हो तो कार्डीनल रेड (लालरंग) ब्राउन रंग का बनानेमें ल्यिेन्ट (ब्राउनरंग) काममें लाना होगा, नुसखा यही रहेगा, र्फ रङ्ग भेदके लिये तरह तरहके रङ्ग जैसे लिखे हैं ला कर लेवें।

दालचीनी सोप।

३८° वोमेका कस्टिक सोडेका पानी	२०	सेर
नारियलका तेल	२५	सेर
रिफाइन ताड़का तेल	८	सेर
दालचीनीका तेल	५	तोले
क्यासियाका तेल	५	तोले
सासाफ्रांस का तेल	५	"
वर्गामोट का तेल	५	"
ब्राउन रङ्ग घोलकर	४	"

नीबू का साबुन (Leman soap)

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१५	सेर
नारियलका तेल	३२	"
रेंड़ीका त्तेल रिफाइन	१॥	"
चाइना येलो रङ्ग (पीला रङ्ग)	२	तोले
नींबूका तेल	१०	"
लवेन्डरका तेल	३	"
वर्गामोटका तेल	८	"
लौंगका तेल	४	"

बादशाही साबुन।

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१०	सेर
नारियलका तेल	२०	"
जापानी मोम	॥	आधा सेर

वर्गामोटका तेल	२॥ तोले
लवेन्डरका तेल	३ तोले
इनसका तेल	२ तोले
हिको ह्वाइट रोज	२ औंस
गुलाबीरंग	२ तोला

युनिवर्सल सोप (पीलारंग) Universal soap

३७° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	५ सेर
नारियलका तेल	१२ ,,
रिफाइन रेंड़ीका तेल	१ ,,
अजवाइनका तेल	३ तोले
लवेन्डर का तेल	३ तोले
वर्गामोट का तेल	३ तोले
लौंगका तेल	२ तोले
पीलारंग	३ तोले

नोट—इसी तरह अगर पीले रंगका युनिवर्सल सोप बनाना हो तो पीला रंग, नारङ्गी का बनाना हो नारंगी रंग, लाल रङ्ग का बनाना हो तो कार्डीनल रेड (लालरंग) ब्राउन रंग का बनानेमें ब्रीलियेन्ट (ब्राउनरंग) काममें लाना होगा, नुसखा यही रहेगा, सिर्फ रङ्ग भेदके लिये तरह तरहके रङ्ग जैसे लिखे हैं ला कर बना लेवें।

दालचीनी सोप ।

३८° वोमेका कस्टिक सोडेका पानी	२०	सेर
नारियलका तेल	२५	सेर
रिफाइन ताड़का तेल	८	सेर
दालचीनीका तेल	५	तोले
क्यासियाका तेल	५	तोले
सासाफ्रांस का तेल	५	,,
वर्गामोट का तेल	५	,,
ब्राउन रङ्ग घोलकर	४	,,

नीबू का साबुन (Leman soap)

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१५	सेर
नारियलका तेल	३२	,,
रेंड़ीका त्तेल रिफाइन	१॥	,,
चाइना येलो रङ्ग (पीला रङ्ग)	२	तोले
नींबूका तेल	१०	,,
लवेन्डरका तेल	३	,,
वर्गामोटका तेल	८	,,
लौंगका तेल	४	,,

बादशाही साबुन ।

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१०	सेर
नारियलका तेल	२०	,,
जापानी मोम	॥	आधा सेर

रिफाइन रेंड़ीका तेल	१	सेर
हिको मश्क	५	तोले
सेडार लकड़ीका तेल	१०	„
वर्गामोटका तेल	५	„
सुलताना पीला रङ्ग	२॥	मासे

बादशाही सोप नं०—२

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	५	सेर
नारियलका तेल	११	„
सेरेसिन	॥	आधा सेर
क्यासियाका तेल	१	तोले
पाम रोज	२	„
वर्गामोटका तेल	५	„
हिको सुरङ्गी	आधा	आउन्स
„ जैसमिन	१	आउन्स

रायल सोप (Royal soap)

३८° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	५	सेर
नारियलका तेल	८	„
जापानी मोम	॥	„
रिफाइन रेंड़ीका तेल	७	„
सौंफका तेल	२	तोले
हिको मश्क	२	आन्स
क्यासियांका तेल	२	तोले

लौंगका तेल	२	तोला
गुलाबी रङ्ग	३	,,

जैसमिन सोप Jasmin soap

३८° वोमेका कास्टिक सोडेका पानी	१०	सेर
नारियलका तेल	२०	सेर
जापानी मोम	३	पाव
रिफाइन रेंड़ीका तेल	१	सेर
इत्र चमेली	४	तोले
जिंजर ग्रासका तेल	२	तोले
पेरुबियन बालसम	४	,,
जीरेनियम का तेल	६	तोले

विन्डसर सोप WIndsor soap

३७° वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१०	सेर
नारियलका तेल	२५	,,
ब्राउन रङ्ग	४	तोले
लवेन्डरका तेल	६	,,
जीरेका तेल	४	,,
सांसा फ्रांसका तेल	४	,,
सिन्ट्रोनेलाका तेल	३	,,
रिफाइन रेंड़ीका तेल	२	सेर

नोट – इसे भी जिस जिस रङ्गका बनाना हो पहिले बताये हुये रङ्ग तथा भिन्न भिन्न खुशबू डालकर तरह तरहका बना सकते हैं।

राइस फ्लावर सोप

(धानके फूलकी महक)

३७ वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	५	सेर
नारियल का तेल	१०	,,
चावलका मैदा	१	,,
वर्गामोटका तेल	३	तोले
मीठी नारंगीके फलका तेल	२	,,
जीरेनियमका तेल	२	तोले
मिर्वनका तेल	२	,,
गुगुलका अर्क	५	,,

लिली मिल्क सोप (Lily milk soap)

३८ वोमेका काष्टिक सोडेका पानी	१०	सेर
नारियलका तेल	१८	,,
रिफाइन रेंड़ीका तेल	२	,,
सोहागाका पानी	१	पाव
जीरेनियमका तेल	७	तोले
पामरोजका तेल	४	,,
नीबूका तेल	४	,,
हिको लीली	३	आउन्स

* * *

साबुन तथा तेलोंमें मिलाये जाने वाले सुगन्धित तेलोंका हाल।

हम अपने पाठकोंको बता देना चाहते हैं क्योंकि वह आश्चर्यमें होंगे कि तरह २ के विचित्र नामके तेल कौन कौनसे हैं तथा उनके क्या गुण हैं। यह तेल वही काममें आ सकते हैं जो कि इन्हीं वनस्पतियों तथा जङ्गली जड़ी बूटियोंसे रूहके तौर पर निकाले जाते हैं। हिन्दुस्तान तथा उसके आस पासके द्वीपोंमें बहुत सी घास और जङ्गली फूल पत्तियां ऐसी पाई जाती हैं जिनमें इत्र या सुगन्धित तेल मौजूद रहते हैं। इन घासों और जंगली फूल पत्तियोंसे अनेक प्रकारके तेल निकाले जाते हैं। जैसे, खसका तेल, लवेन्डरका तेल, तुलसीका तेल, पाम रोजका तेल, जिंजरग्रासका तेल इत्यादि, इसके अलावे, लौंगका तेल, जीरेका तेल, सौंफका तेल, और नीबू नारङ्गीके छिलके इत्यादिके तेलोंका हाल भी लिखा गया है। नीचे लिखे परिचयसे आप सब प्रकारके तेलों को कि वे किस व्यवहारमें आते हैं तथा उनकी क्या पहिचान है जानकर आप समयोचित व्यवहारमें ला सकते हैं।

पाम रोजका तेल (Indian grass oil)

इसे हिन्दुस्तानी घासका तेल भी कह सकते हैं; यह तेल हिन्दुस्तानमें बहुतायतसे पाया जाता है। यह तेल एक प्रकार की घाससे निकाला जाता है। यह घास पश्चिम अफ्रीकामें बहुतायतसे पाया जाता है इसका तेल कुछ गाढ़ा और बादामी रँग लिये हुये होता है,

इसकी सुगन्ध बहुत देर तक ठहरती है। इस तेलमें कई एक चीजों के तेल का मिलान भी होता हैं जैसे, गुर्जन, नारियल, टारपीन, सेडार और मट्टीके तेल इत्यादि।

खस का तेल।

खस नामक जड़ बड़ी ही सुगन्धित होती है, और यह हिन्दुस्तानमें ही विशेषतः पाई जाती है। इसकी जड़से इत्र और तेल दोनों ही तैय्यार होते है। इनका तेल गाढ़ा गहिरे रंगका होता है, इसकी सुगन्धी बड़ी ही मीठी तथा देर तक ठहरने वाली होती है। इसको सस्ता बनानेके लिए दूसरे सस्ते तेल भी इसमें मिलाये जाते हैं। अपनी खुशबूके लिये खस इतनी मशहूर है कि गर्मीके दिनों इसकी जड़ोंका पर्दा बनाकर कमरेके आगे टांगते हैं जो कि हवा लगनेसे बड़ी मनमोहक गंध देता है।

लवेण्डरका तेल।

यह तेल दक्षिण फ्रांसमें एक प्रकारके जंगली फूलोंसे निकाला जाता है; इसकी खुशबू कड़ी होती है और स्वादमें भी कड़ुआ होता है। यह हलके पीले रँगका तथा पानीके सदृश्य पतला होता है। यह तेल विलायती भी आता है जिसमें कुछ कपूर की बास होती है। इस तेलमें सेडारकी लकड़ीका तेल, टारपीनका तेल, तथा अन्य तेल भी मिलाये जाते हैं। लवेन्डर तेल भाफसे उड़ाकर निकालते हैं। यहां तेल नहीं आता है केवल "लवेन्डर एसेन्स" आता है जो कपड़े पर छिड़कनेके काममें आता है, उसे भी फूलों द्वारा वैज्ञानिक रीतिसे तैय्यार करते हैं।

जिञ्जर ग्रास तेल ।

पंजाबमें एक तरहकी घास होती है जिसे अगिया घास कहते हैं। इसी घाससे यह तेल निकाला जाता है। इसकी वास ज्यादा कड़ी नहीं होती, इसको सस्ता बनानेके लिये इसमें ह्वाइट आयल नारियलका तेल, भी मिलाते हैं।

सिन्ट्रोनेला का तेल ।

मलक्कामें एन्ड्रोपोगन नरडस (Andropogan nardus) नामकी एक घास होती है। इसका तेल निकाला जाता है, इसकी महक तारपीनके तेल जैसी होती है। कभी कभी इसमें तांबेका अँश होनेसे इसका रंग हरा हो जाता है, इस तेलमें १० परसेंट सेन्ट्रोनोला नामक पदार्थका भी अंश रहता है इसीलिये इस तेलका नाम सेन्ट्रोनोला का तेल पड़ा। इसको सिंघापुरी तेल भी कहते हैं इसमें दूसरे मामूली तेल तथा ह्वाइट आयल भी मिला देते हैं। मिलावटी अशुद्ध तेल मद्यसार मिला देनेसे शुद्ध हो जाता है।

जीरेनियनका तेल ।

यह तेल फ्रांस स्पेन और अफ्रीकामें निकाला जाता है। इसकी बास गुलाबसे मिलती जुलती है, इसका रँग हरा बादामी होता है। यह तेल कई प्रकारकी पत्तियोंसे निकाला जाता है, हिन्दुस्तानमें इसे रोसाका तेल भी कहते हैं।

पचूलीका तेल ।

यह तेल एक प्रकारके पौधेसे निकाला जाता है जो कि सिंघापुरमें पैदा होता है। इसके तेलमें तुलसीके पत्तोंकी सी महक

आती है, इसका तेल हरा, सुनहरा, और बादामी भी होता है। यह पौधा सुखाकर सिँघापुरसे दूसरे देशोंको भी भेजा जाता हैं। सूखे पौधेसे बादामी रँगका तेल तथा गीलेसे हरे रंगका तेल निकलता है। इसके पौधेके साथ तुलसीकी पत्तियें मिलाकर भबकेसे इसका तेल निकालनेसे तेल पीले गाढ़े रँगका होता है। इसकी गन्ध बहुत तेज होती है।

दालचीनीका तेल।

इसका तेल दालचीनीके पेड़की छालसे सीलोनमें तय्यार किया जाता है। सीलोन (Cylon) के तेलका स्वाद मीठा और कडुआ होता है, किन्तु जीभ पर धरनेसे जलन मालूम होती है। इसके तेलका रंग गहरा कत्थई होता है, दालचीनीकी छालको भाफके साथ गरम करके भबकेसे इसका तेल निकालते हैं। साबुनमें यह तेल मिलानेसे दालचीनीकी महक आती है तथा सिर दर्दमें और बादीके मसूढ़े फूले हुयेके दर्दमें लगाने पर भी यह फायदा दिखाता है।

नोट—इसी तरहसे दालचीनीका तेल; लौंगका तेल; खसका तेल; अजवाइनका तेल; गुलाबका तेल, बेंजोइन (गुगुल , का तेल; सौंफ पेरुवेयिन बालसमा जूनियरका तेल; जीरेका तेल; सौंफका तेल, क्यासियाका तेल, वगैरह अनेक तरहके तेल आते हैं जो कि साबुन में सुगन्धि मिलानेके काममें आते हैं। इन तेलोंसे आप सादे तेलोंको भी सुगन्धित करके उन्हें भी महकदार बनाकर बेंच सकते हैं।

पत्तियों तथा छिलकोंसे निकाले हुये तेल।

अनेक प्रकारके छिलकोंसे भी तेल निकाले जाते हैं। जैसे नीबूका छिलका; नारंगीका छिलका; बर्गामोटका छिलका इन सबोंका

तेल प्रेससे दबाकर या स्पँजसे निकाला जाता है। अगर यही गरम रीतिसे उबालकर भवकेसे तेल निकाला जाय तो इसकी गंध बहुत कुछ नष्ट हो जाती है। स्पंज या प्रेससे निकाले गये तेलकी गंध स्थाई रहती है लेकिन इसे शीशियोंमें वन्द रखकर ठंडे स्थानमें रखना चाहिये ऐसे रखनेसे यह तेल खराव भी नहीं होता तथा गन्ध भी स्थाई रहती है।

पैतिग्रेनका तेल।

यह तेल पैतिग्रेनकी हरी पत्तियों और ताजे अखुओंसे भाफ की सहायतासे निकालते हैं, इसकी खुशबू भी बड़ीही मस्त तथा मनमोहक होती है इसकी गँध नीबू नारंगीकी सी होती है, स्वादमें एक प्रकारका कडुआपन रहता है।

वर्गामोटका तेल।

यह तेल विदेशोंसे आता है। वहां यह (स्ट्रिशवर्गमिया) नामक फलके छिलकेसे निकाला जाता है। इसकी खुशबू भी नीबू नारंगीके तेलके ही माफिक होती है।

* * *

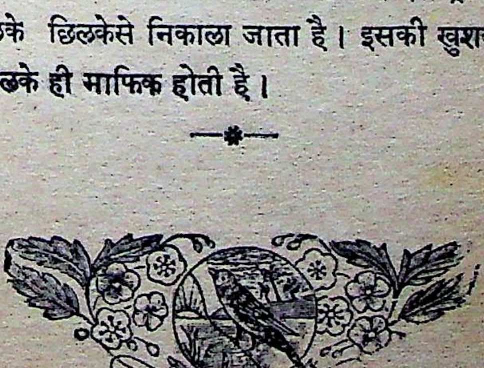

ठंडी रीतिसे सुगन्धित साबुन तैय्यार करना।

हम अपने पाठकोंको पीछे कपड़ा धोने वाले साबुनोंमें ठंडी रीतिसे हार्ड साबुन बनाना बता चुके हैं, उसी रीतिसे हार्ड सोप तय्यार करके रख लीजिये। जब जिस सुगन्धका साबुन बनाना हो तब हार्ड सोपको गलाकर उसमें वही सुगन्ध तथा रङ्ग और खुशबू मिलाकर बना लेना चाहिये। दूसरे हार्ड साबुन बनानेके साथही साथ रँग, महक, खुशबू मिलाकर मनमाना बनाते हैं; जैसी इच्छा हो बना लें। किस चीजके साबुनमें किस चोजकी महक तथा रंग किस प्रमाणमें डालना चाहिये यह आप नीचे लिखे पर अगर ध्यान देंगे तो सुविधासे बना सकेंगे।

गुलाबका साबुन नं०—१

हार्ड सोप (सादा साबुन)	६	सेर
ओटो रोज	२	ड्राम
हिको मस्क	२	„
ग्लिसरीन	२	आउन्स
इत्र गुलाब	२	तोले
रँग गुलाबी	४०	ग्रेन

गुलाबका साबुन नं०—२

हार्ड सोप	२॥	सेर
ग्लीसरीन	२	आउन्स
गुलाबका तेल	२	„

ओटो रोज	२	ड्राम
ह्वाइट रोज	”	”
रँग गुलाबी	१७	ग्रेन

इसी तरह अगर गुलाबकी खुशबू अलग २ तरहकी बदलनी हो तो तेल रोजमरी. हिकोह्वाइट रोज; क्लोरा रोज बदल बदल कर दे सकते हैं अगर तेज खुशबू बनानी हो तो इत्र गुलाव भी दे सकते हैं।

विन्डसर सोप (Windsor soap)

हार्ड सोप	३	सेर
पिपरमेन्टका तेल	२	ड्राम
हिको ह्वाइट रोज	।।।	आउन्स
” वेनिला	१	”
बादामी रँग	२२	ग्रेन

विन्डसर सोप नँ०—२

हार्ड सोप (सादा साबुन)	४	सेर
ग्लीसरीन	४	आउन्स
पीपरमेन्टका तेल	५	ड्राम
हिको लवेन्डर	२	आउन्स
” नरसिस	२	”
रँग बादामी	२५	ग्रेन

ग्लिसरीन साबुन कड़ा करने को देते हैं, अगर इसकी कई एक (Quality) या प्रकार बनाने हों तो पिछले बतलाये साबुनोंके अनुसार तेल तथा हिको अलग अलग देकर भिन्न २ सुगन्धिमें बना

सकते हैं। विन्डसर सोप (Windsor soap) में प्रधान पीपरमेन्टका तेल तथा बादामी रँग है, सुगन्ध तथा तेल मनके अनुसार २ नं० के तेलोंके प्रमाणके अनुसार बदल सकते हैं।

लवेन्डर सोप (Lavender soap)

हार्ड सोप (सफेद साबुन)	२	सेर
ग्लीसरीन	३	आउन्स
आयल लवेन्डर	२	„
„ निरोली	२	„
„ वर्गामोट	२	„
हिको ह्वाइट रोज	२	„
फिरोजी रँग	१५	ग्रेन

टाईलेट साबुन (Toilet soap)

हार्ड सोप (सादा साबुन)	२	सेर
ग्लीसरीन	२	आउन्स
ओटो रोज	४	ड्राम
आयल रोजमरी	८	„
लवेन्डर तेल	१	आउन्स
वादामी रंग	१०	ग्रेन

टाईलेट सोप नं०—२

हार्ड सोप (सादा साबुन)	२	सेर
आयल आफ निरोली	„	आउन्स
„ वर्गामोट	„	„

सौंफका तेल	२	आउन्स
रोजमरी	१	„
रंग बादामी	३०	ग्रेन

कपूरका साबुन(Camphor soap)

हार्ड सोप (सादा साबुन)	२	सेर
कपूर	१	औंस
रेक्टीफाइड स्पिरिट	२	„
रोजमरी	२	„

बनानेकी बिधी:—

पहिले हार्ड सोपको किसी बर्तनमें डाल थोड़े जलके साथ उसे पिघलाना, जब पिघलकर पानीमें मिल जाये तब उसे नीचे उतार लेना। रेक्टीफाइड स्पिरिटमें कपूर डाल देनेसे गलकर उसीमें मिल जावेगा; फिर कपूर मिलाये हुये स्पिरिट और रोजमरीको गीले साबुनमें डालकर लकड़ीसे चलावे। जब गाढ़ा हो जावे, बर्तनमें डाले, जम जानेके बाद ठंडा हो जावेगा, उसके बाद लम्बे टुकड़े काटकर सांचे द्वारा बट्टियां बना लेना। इस साबुनमें रंग नहीं दिया जाता यह सादा ही रहता है।

कार्बोलिक सोप (Carboljc soap)

हार्ड सोप (सफेद साबुन)	३	सेर
कारबोलिक एसिड (Carbolic acid)	।।	आउन्स
रेक्टीफाइड स्पिरिट	१।।	„
कपूर	१।।	तोला
रँग बादामी	३०	ग्रेन

यह भी उपरोक्त बिधीसे बनाना होगा अगर कड़ा करना हो तो ग्लिसरीन भी प्रमाणके अनुसार मिला लें।

सस्ता कार्बोलिक सोप।

कोयेका तेल	३	सेर
जापानी मोम	१॥	,,
कार्बौलिक आयल	३	आउन्स
काष्टिक सोड़ा	१॥	पाव
पानी स्वच्छ	१।	सेर

बनानेकी बिधीः—

पहिले सोडे और पानीको मिलाकर मिक्शचर बना लें। फिर तेल और मोमको कड़ाहीमें डालकर गरम करें। जब पिघलकर अच्छी तरह मिल जावे तब उतार कर नीचे रख लें, इधर सोडा मिक्शचर कार्बौलिक आयल डालकर लकड़ीसे चलाकर मिला दें। जब दोनों मिल जावें तो धार बांधकर धीरे २ कढ़ाईमें छोड़ें और चलाता जाय; जब गाढ़ा हो जावे तब किसी बर्तनमें निकाल जमालें। ठँडा होकर जम जाने पर बट्टियें बना लेवे, अगर रंगीन करना हो तो ब्राउन रँग स्पिरिटमें घोलकर साबुनकी लेईमें घोंटते वक्त मिलाकर चला दें।

नीमसोप (Neem soap)

नीमका तेल	५ सेर
काष्टिक सोडा	१४ छाटांक
स्वच्छ जल	४॥ सेर
रंग ब्राऊन	

बनाने की विधी—

यह भी कार्बोलिक साबुन बनानेकी विधी के अनुसार ही बनाना होगा।

पियरसोप (Pear soap)

पियर सोप एक बाजारमें बिकने वाला बड़ाही प्रसिद्ध साबुन है। इसे पियर साहब नामक अंग्रेजने बनाया था, तभी से उसके नामपर इसका नाम पड़ा। यह साबुन मुंहकी फुन्सियां तथा मुहांसे वगैरह हटाकर सौन्दर्य बनानेके लिये प्रसिद्ध है।

नारियल का तेल	५ सेर
काष्टिक सोडा	१।। „
पानी स्वच्छ	१।।। „
आमला	।। आधासेर
इत्रहिना	१ तोला

बनानेकी विधीः—

पहिले आँवलेको पानीमें तीन चार दिन तक भिगो द बाद मींजकर छान ले, पानी एक बर्तनमें करके उसकी लीसी निकालकर फेंक दें। आँवलेके पानीको एक घण्टे बाद किसी दूसरे बर्तनमें निथार लें ऐसा करनेसे जो मैल नीचे बैठी रहेगी वह भी साफ हो जावेगी। इसके बाद सोडेको आमलेके पानीमें धीरे धीरे डालता और चलाता जाये। जब आमलेके पानीमें सोडेका मिक्शचर तैय्यार हो जावे तब तेलमें मिक्शचर डालकर धीरे २ छोड़ता जाये और घोंटे, जब कुछ गाढ़ा होने लगे तब उसमें जिस प्रकारका रंग और

इत्र छोड़ना हो छोड़ दे और खूब घोंटे। जब खूब गाढ़ा हो जावे तब बर्तनमें डालकर जमा ले, जम जाने पर छड़ियें काटकर सांचेमें डालकर बट्टियें काट लें।

सनलाइट सोप (Sunlight soap)

गरीका तेल	५	सेर
अंडीका तेल	१२॥	„
सोडा मिक्शचर ३७´ बोमे डिग्रीका	६	„
लवेन्डर आयल	२॥	तोले
अजवाइनका तेल	५	„
थर्मामेट आयल	५	„
पीला रँग विलायती	२॥	„
स्पिरिट	१	छटांक

बनानेकी विधीः—

दोनों तेलको पहिले बताई विधीके अनुसार निर्गन्ध करके एक कढ़ाईमें डाले फिर हाइड्रोमीटर (जो कि पीछे विवरणमें आ चुका है) से नापकर ३७´ बोमे डिगरीका सोडा मिक्शचर बना लें। सोडा मिक्शचर को तेलवाली कढ़ाईमें धीरे २ डालकर चलाता जावे जब गाढ़ा होने लगे तो स्पिरिटमें रंग घोलकर छान ले और साबुनमें डालकर अच्छी तरह फेंट दे। जब एक दम गाढ़ा हो चले तब और भी तेल डालकर अच्छा तरह फेंटकर किसी बर्तनमें डालकर जमा ले। जम कर ठंडा हो जाने पर छड़ियें काटकर सनलाइट सोपके सांचेमें डाल बट्टियां बना ले फिर वैसा ही पैकिंग तथा बाक्स बनवाकर जो लाइट नाम देना हो देकर बाजारमें चलावे।

सस्ता सनलाइट (Cheap sun light)

काष्टिक सोडा	१॥	सेर
पानी	४॥	,,
तेल अंडीका	७	,,
लवेन्डर आयल	॥।	तोला

बनानेकी विधीः—

काष्टिक मिक्शचर बनाकर अंडीके तेलमें डालते और चलाते जावें गाढ़ा होने लगे तो लवेन्डर आयल छोड़कर खूब चलाकर वर्तनमें जमा दें। जब जमकर ठंडा हो जावे तब छड़ियें काटकर सांचेमें डाल बट्टियें काट ले। यह साबुन कपड़ा धोनेके योग्य भी होता है और असली सनलाइटसे सस्ता भी पड़ता है।

बाल उड़ानेका साबुन Hair distroyer soap

हार्ड सोप (सादा साबुन)	१	सेर
बैरियम सल्फाइड (Barium sulphyd)	१	छटांक
नारियल अथवा सरसोंका तेल	१	पाव

बनानेकी विधीः—

पहिले हार्ड सोपको तेलमें मिलाकर आगपर गलाओ। जब तेल और हार्ड सोप गलकर एक हो जावे तब नीचे उतारकर उसी कढ़ाईमें बैरियम सल्फाइड मिला दो, अच्छी तरह घोंटकर मिला देनेके बाद जमानेके लिये छोड़ दो २४ घण्टेमें जमकर तैय्यार हो जावेगा, फिर बट्टियें काट लो।

उपयोग विधीः—

जब बाल उड़ाने हों तो अन्दाजसे बट्टीमेंसे उतनाही काटो जितना बाल उड़ानेकी जगहके लिये उपयुक्त हो। उतना ही काटकर पानीमें घोलकर बाल साफ करने वाली जगहमें गाढ़ा २ लेप करदो, ५-१०, मिनिटके बाद कपड़ेसे पोंछ दो, बाल सब गिर जायंगे।

बाल उड़ानेका साबुन नं०—२

चूल्हेकी जली मट्टी	१२	छटांक
बेरियम सलफाइड	१	"

वेसलीन ८ छटांक (अगर कम हो तो और बढ़ा सकते हैं)

बनानेकी विधीः—

मिट्टी और बैरियम सलफाइड को वेसलीनमें आंटेकी भांति खूब गूंध ले, जब तीनों मिलकर कड़ा २ आंटे सा हो जावे तब सांचेमें बट्टियां बनाकर रांगेकी पन्नीमें पैक करके, अगर बेंचना हो तो सेवन विधीका कागज ऊपरसे लगाकर कार्डबोर्ड बक्समें पैक कर लेबिल लगा दें।

सूचना—

जो इसे बनाकर बेचना चाहें उन्हें नीचे लिखी बातों पर पूरा २ ध्यान देना चाहिये।

१—इसे बनाकर खुला नहीं रहने देना चाहिये नहीं तो इसकी महक उड़ जावेगी तथा इसकी कार्य्य-शक्ति भी मारी जावेगी।

२—अधिक दिन न बिकने पर यह साबुन खराब हो जाता है। इसलिये अधिक मात्रामें न बनाकर थोड़ा २ बनाना चाहिये।

३—अगर ज्यादा दिन तथा गुणवान रखना हो तो इसे रांगेमें लपेट डिब्बेमें रख चारों तरफसे अच्छी तरह बन्द कर देना चाहिये जिसमें इसे हवा न लगे।

—*—

सबत (Syryp)

आयुर्वेदमें लिखा है कि शबत पीनेसे तृष्णाकी शान्ति होती है, शर्बत मूर्छा और उन्मादको दूर करता है तथा उदर विकारोंको दूरकर नेत्रकी ज्योतिको बढ़ाता है। शर्बत पीनेसे चित प्रसन्न रहता है और चित्त प्रसन्न रहनेसे खूनको बृद्धि होती है। खूनकी बृद्धि होनेसे शरीर बलवान होता है गर्मी के दिनोंमें इसका उपयोग करते हैं यह तीन प्रकारसे बनता है। जो कि नीचे लिखते हैं।

(१) मिश्री से जो सबंत बनाया जाता है वह उपरोक्त बताये गुणोंसे पूर्ण होता है।

(२) दानेदार चीनी या पिसाई चीनी द्वारा यह मिश्रीके सर्बत से सस्ता तथा गुणमें भी नं० २ का होता है.

(३) बाहरी देशोंसे चीनीका सत्त बना आता है, जिससे Cycrin या Special power of sugar भी कह सकते हैं, यह सब से सस्ता पड़ता है, यहां तक कि १० सेर पानी में चार तोला भी भी डाल देनेसे यथेष्ठ मीठा हो जाता है कारण कि इसमें चीनीसे चार सौ या पांच सौ गुना मिठास ज्यादा रहती है। इस लिये सर्बत बेचने वाले बाजारू दुकानदार इसीमें एसेन्स मिलाकर बनाते हैं। यह डाक्टरी दवा बेचनेवालोंके यहांसे ले सकते हैं।

(४) सर्बत सुगन्धित दो प्रकारसे होते हैं,

(१) वैज्ञानिक प्रणालीसे बाहरी देशोंसे फूलोंका सत जिसे अंग्रेजी में Asseunce of fruit भी कहते हैं, यह हर प्रकारके जैसे केला अंगूर सन्तरा अनारस, अनार, सहतूत इत्यादि हरप्रकार का होता है, बाजारोंमें शर्वत जो बिकते हैं, वह इन्हीं फलोंके सत या Assence द्वारा सुवासित किये हुये । यह एसेन्स ५) दर्जन मिल सकता है ।

(२) वास्तविकमें जो फायदेके शर्वत हैं वह फलोंके रस द्वारा बनाये हुए ही शर्वत होते है, फलोंको गुणागुणके अनुसार उनके भी गुणागुण होते हैं । रोगी या फायदेके लिये पीने वालोंको फलों के रस द्वारा बने सर्बत ही काममें लाने चाहिये । जो कि आप बाजारोंमें नहीं पा सकते यातो स्वयं बनावें या बनवाले तभी पा सकते हैं । अब नीचे सर्बत बनानेकी विधी लिखते हैं जिसके द्वारा सरलता से आप सब प्रकारके सर्बत बना सकते हैं, या तो आप स्वयं पीनेके लिए बनावें या बेचनेके लिये तो बेचकर भी लाभ उठा सकते हैं ।

—*—

मिश्रीका शर्बत ।

मिश्री	५ सेर	पानी	१२॥ सेर
दूध	१ पाव		

बनानेकी विधी ।

प्रथम कड़ाहीमें मिश्री और पानी डालकर धीमी आंचमें गरम करें, साथ ही पावभर दूधमें आधासेर पानी मिलाकर तीन पाव की लस्सी बना कर रख लें। जब चासनीमें उफान आने लगे तब लस्सीमें एक साफ कपड़ा भिगोकर थोड़ा थोड़ा चासनीमें निचोड़ें। इससे मैल जो चासनीमें होगा वह ऊपर आता जावेगा, उस मैलको छन्नेसे निकालकर अलग वर्तनमें फेंकते जावें। इसी तरह मैल साफ होकर जब १२॥ सेर पानीका ६॥ सेर पानी जल जावे और ६ सेर पानी ही रह जावे तब समझो कि सर्बत तैय्यार हो गया नीचे उतार ठंडाकर जिस ढंगकी खुशबूका एसेन्स देना हो देकर शीशियोंमें भर लेबुल लगाकर बेच या निजी व्यवहारमें ला सकते हैं।

दानेदार चीनी ।

जिस प्रकार मिश्रीका सर्बत बनाया जाता है उसी प्रकार इसका भी बनावे। इसमें फर्क इतना ही रखना होगा कि ५ सेर चीनीमें दस सेर पानी डाल ५ सेर पानी जल जाने पर उतार लेना होगा। सादी चीनी या बूराका सर्बत भी बन सकता है पर यह इतना साफ न होगा, इसलिये अगर मिश्रीका न हो तो उसकी जगह दानेदार चीनी ही बर्तना सर्वश्रेष्ट होगा।

नोट—चीनी या मिश्रीके सर्बतकी एक बोतलके लिये किसी भी एसेन्सकी महकसे सुगन्धित करनेके लिये ८-१० बूँद एसेन्स काफी होगा। जिसे बोतलमें डालकर खूब हिला देनेसेही सुगन्धित हो जायगा।

फलोंके रसोंसे शर्बत बनानेकी बिधी।

शबत अनार

मिश्री	१० सेर	गुलाब जल	१। पाव
अनारका रस	२॥ पाव	पानी	७५ सेर
दूध	२॥ ,,		

बनाने की बिधी:—

मीठे अनारके दाने निकाल कर कूटले और इसे मोटे कपड़े द्वारा दबाकर उसका रस निकाले फिर ऊपर बताये ढंगके अनुसार चाशनी बनाकर उसी उबलती चाशनीमें अनारका रस डाल दें फिर नीचे उतार कर ठंडा कर गुलाब जल मिलाकर बोतलोंमें भर ले।

अनार रस तैय्यार करनेकी दूसरी बिधी:—

अनारके दाने निकाल कर कूट ले और एक सेर दानेमें तीन सेर पानी मिलाकर धीमो २ आंचमें गरम करें। जब २ सेर पानी जल जावे तब मलकर उतार कर छान ले, इस प्रकारसे तैय्यार किया हुआ रस शर्बत अनारमें बतलाये प्रमाणसे दूना रस डालना होगा। इस तरहसे रस तैय्यार करनेसे रस बिलकुल बेकार नहीं जाता।

चन्दनका सर्बत (Sandal syryp)

मिश्री	५	सेर
चन्दन सफेद	२॥	पाव
पानी	२०	सेर
गुलाब जल	१	पाव
दूध	२॥	पाव

बनानेकी विधीः—

चन्दनको कूटकर बुकनी बना लें। पानी और मिश्री कढ़ाईमें डाले, चन्दन की बुकनी को साफ कपड़ेमें पोटली बनाकर कढ़ाई में लटका दे जो कि चासनीमें भींगी रहे फिर मँदी २ आंच पर चासनी पकावे। चासनी तैय्यार हो जाने पर चन्दनकी पोटलीको निकाल सर्बतमें निचोड़ कर रसको अच्छी तरह मिला दे। ठंडा होने पर गुलाब जल डाल बोतलोंमें भर कर रख लें।

अंगूरका सर्बत।

अँगूर	२	सेर
चीनी या मिश्री	३	,,
पानी	८	,,
दूध	॥	,,
गुलाब जल	॥	पाव
सालम मिश्री	१	तोला

बनानेकी बिधी—

और सब क्रियायें पिछले बतलाये सर्वतोंके अनुसार ही है। केवल रस निकालनेके लिये मोटे कपड़ेमें अंगूर डाल दूसरे बर्तनमें छानकर चासनीमें देना होगा।

नीबूका शर्बत (Lemon syryp)

कागजी नीबू	१००	चीनी दानेदार	६ सेर
दूध	१ पाव	पानी	१५ „
असली केवड़ा जल	१ छटांक		

बनानेकी बिधीः—

पहिले नीबूका रस निकाल कर साफ़ कपड़ेसे छान लें। फिर चीनी पानी और नीबूका रस डालकर मंदी आंच पर गरम करके अन्य शर्वतोंकी भांति चासनी तैय्यार कर लें फिर नीचे उतार ठण्डा करके केवड़ा जल मिलाकर बोतलोंमें भर लें।

शर्बत गुलाब (Rose Syryp)

गुलाबके फूलकी पखड़ियें	॥।	पाव
पानी	८	सेर
चीनी दानेदार	६	„
दूध	१॥	पाव
गुलाब जल	३	छटांक

बनानेकी विधीः—

पहिले गुलाबकी पँखड़ियोंको दो सेर पानीमें डालकर धीमी आंच पर पकावे, जब आधा पानी जल जावे तब मलकर छान ले। पीछे

बतलाये ढ़ँगसे चासनी बनाकर बनती चासनीमें गुलाबकारस मिलाकर उबाल दिलवावे फिर नीचे उतार ठण्डा होनेपर गुलाब जलकी सुगन्ध डालकर बोतलोंमें पैक कर दे।

बनारसी तम्बाकू की गोली।

कम्पाला तमाकूके पत्ते आधा सेर को १ सेर पानीमें डाल मट्टीके वर्तनमें भिगो दे। दो दिन भीगे रहने पर पत्तोंको हाथसे मसलकर मल छानकी पानी उसी वर्तनमें निकाल दो। एक दिन तक उस पानी को पड़ा रहने दो। बाद में एक कढ़ाई में इस पानीको इस ढंगसे नितार लोकि पानी पानी आ जावे और मट्टी उसी वर्तनमें रह जावे। तमाखू के पानी वाली कढ़ाई को आग पर रखकर औंटावें, औटते २ जब आधा पानी जलकर गाढ़ा हो जावे तो उसे नीचे उतार कर उसमें लौंग, इलायची, जायफल जावित्री, केसर, कस्तूरो, इन सबको बारीक पीस कपड़ छान करके इस गाढ़े पानीमें मिलाकर खूब चलावे बादमें इत्र केवड़ा, गुलाब, पानड़ी, मुश्क, हिना दो दो बून्द डालकर गोली बना लो। शायद गोली न बने और गीलाही रह जावे तो आगपर चढ़ाकर और गाढ़ा करके जब गोली बंधनेके लायक हो तो उतार लेंवे और गोलियां बनालें फिर उसमें चान्दीके वर्क लगाकर शीशियोंमें भर कर मनमोहनी कस्तूरी तमाकूकी गोलो नाम रख कर चलावें।

पीनेका बादशाही खमीरा तमाकू बनाना।

तमाकूके पत्तोंको सुखा कर कूट ले फिर छानले। छान कर तम्बाकू और सीरेको एकमें मिला आगपर रख कर औंटावे। जब

औंट जावे तब इसको उतार कर बर्तनमें भर कर उस बर्तनका मुंह बन्द करके रख छोड़े।कुछ दिन बाद उसमें खमीर उठ जावेगा तब उसमें नागरमोथा, छारछबीला, कपूर, लौंग, इलायची, अगर, तगर, चन्दन दोनों, पानड़ी, इन सब चोजोंको कूट छान कर के खमीरमें मिलाकर रख छोड़े। दो सप्ताह बाद काममें लाने लायक हो जावेगा।

ताम्बूल बिहार पानका मसाला।

छोटी इलायची	१ तोला	बड़ीइलायची	१ तोला
जावित्री	१ तोला	जायफल दक्खिनी	१ तोला
केशर	६ मासे	चन्दन सफेदका चूरा	१ तोला

बनानेकी विधी—

इन सब चीजोंको कूटकर कपड़छान कर इत्र मजमूएकी आधापाव गादमें अच्छी तरह फेंट, मिला डिबियोंमें भरकर रख लें।

ताम्बूल बिहार नं० २

जेठीमदका सत	आउन्स ४	सफेद कत्था	आउन्स २
लौंग	तोला २	बंसलोचन	आउन्स २
पीपरमेन्ट	काम „	हिकोमश्क	ड्राम ॥

तैयार करनेकी विधी—

पहिले कत्था, लौंग और बंसलोचन को बारीक पीस कपड़ छानकर लेना चाहिये फिर उसे जेठीमदके सतमें डालकर ऊपरसे पीपरमेन्ट और हिकोमश्क भी मिला देवें। यह सब चीजों को हाथ से मसलकर एक कर लेना चाहिये, यदि कुछ सूखा रह जाय अन्दाज से पानी मिलाकर मल्हम सा तय्यार करके शीशियोंमें भर लेवें।

ताम्बूल बिहार पानका बहुत प्रसिद्ध मसाला है । पानके साथ खानेसे पान बहुत स्वादिस्ट तथा जायके दार हो जाता है ।

खुशदार पानका बादशाही मसाला ।

बादशाही पानके मसालेमें आपको पानके साथ कत्था चूना, वगैरह अलग कुछ भी नहीं खाना पड़ता। इस मसालेमें स्वयंही कत्था तम्बाकू महक तथा सुपाड़ी वगैरह पड़ी होती है यह सफरके कामकी बड़ीही बढ़िया चीज है कि मसाला तैयार करके रख लीजिये, सादे पानमें थोड़ा मसाला अन्दाजसे डालकर खाइये स्वादिष्ट मसालेदार पानका आनन्द आवेगा ।

बादशाही पानका मसाला ।

चिकनी सोपाड़ी	८ आउन्स	चूनेका पानी	१॥ आउन्स
जनकपुरी कत्था	३ आउन्स	छोटी इलायची	१ आउन्स
लौंगकातेल	२ ड्राम	पीपरमेन्टका तेल	चौथाइ ड्राम
हिकोमश्क	चौथाई ड्राम		

बानानेकी विधीः—

पहिले चिकनी सोपाड़ी को बारीक कतरके अग्नि पर सेक लेना चाहिये । सिक जाने पर उसे चूनेके पानी में अच्छी तरह भिगो कर छायामें सुखा लेना चाहिये । फिर कत्थेको बारीक पीस कपड़ छानकर इलायचीके दाने अधकचरा कूटकर कत्थेमें मिला देना। सुखाई हुई सोपाड़ी तथा कत्था इलायची सब को एकमें मिलाकर ऊपर से लौंगका तथा पीपरमेन्टका तेल डालकर सबको एकमें

अच्छी तरह मिला दें। इसे दो तीन दिन तक छायामें सुखाकर डिब्बियोंमें भरकर काममें लावे।

नोट - अगर महक दूसरी करनी होतो, इसमें गुलाब, या केवड़ेका इत्र भी मिलाकर दूसरी खुशबूका पानका मसाला बना सकते हैं।

खुशबूदार मसालेकी मनमोहनी सुपारी।

पाठकों अब आपको मसालेकी सुपारी बनाना बताते है, इसे आप अपने मित्रोंकी खातिरके लिये या अपने लिये या बेंचनेके लिये बना सकते हैं। यह सुपारी मुखकी दुर्गन्धिको दूर कर जायकेको ठीक करती है, इसके खानेसे मुख साफ रहता तथा तबियत प्रसन्न रहती है।

मसालेकी सुपारी नं०—१

चिकनी सुपारी	८ आउन्स
लौंगका तेल	चौथाई ड्राम
कत्था सफेद	४ तोले
जेठी मदका सत	२ ड्राम
पीपरमेन्टका तेल	चौथाई „
एसेन्स ह्वाइट रोज	„ „

तैय्यार करनेकी विधीः—

पहिले चिकनी सुपारीको बारीक कतर कर एक दिन तक पानी में फूलने दे फिर दूसरे दिन जब सुपारी फूल जावे तब उसे पानीसे निकाल कपड़ेसे पोंछ लेवे फिर कत्थेको उतने पानीमें भिगोवे जिसमें सुपारी मिल जावे। सुपारीको कत्थेमें मिलाकर उसमें उपरोक्त

बाकी चीजें डाल अच्छी तरह मिलाकर उसे छांहमें सुखाने रख देवे। सूख जानेके बाद डिब्बोंमें भरकर व्यवहारमें लावें।

मसालेकी सुपारी नं० —२

चिकनी सुपारी	१० आउन्स
पीपरटण्टका तेल	चौथाई ड्राम
सफेद कत्था	२ आउन्स
जाबित्री	२ तोले
दूध	४ औंस
लौंगका तेल	चौथाई ड्राम
गुलाबका इत्र	चार आना भर

नोट—यह भी नं०-१ के ही ढंगसे बनेगी केवल फर्क इतना ही है कि इस सुपारीको दूधमें भिगोना होगा। और यह नं०-१ से ज्यादे जायकेदार तथा अच्छी होगी।

खिजाब Hair dye

आजकल बाजारमें प्रचलित सस्ते तथा भड़कीले तेल जो ह्वाइट आयल पर बने हैं, इनके लगानेसे बाल असमयमें ही सफेद हो जाते हैं। नजले तथा कमजोरीके कारण भी सफेद हो जाते हैं तब लोग अपने बालोंको काला रखनेके लिये खिजाब लगाते हैं। खिजाब भी एक बनावटी चीज है। जड़से बाल इसके लगानेसे काले नहीं होते,इसे हमेशा लगाना पड़ता है, उन्ही खिजाब प्रेमियोंके लिये या व्यापारियों को बनाकर बेंचनेके लिये इसके जो नुसखे हैं वह भी नीचे लिखे जाते हैं।

देशी खिज़ाब।

तांबेका बुरादा	।।	छटांक
हड़ छोटी	।।	„
सेलखरी	६	मासे
लौंग	६	„
सुरमा	६	„
माजूफल भुना हुआ	६	„
कसीस	१	तोले

बनानेकी विधी:—

इन सबको एकत्र कर कूट तथा कपड़छान करके त्रिफलेके रसमें डालकर एक कड़ाहीमें लोहेके घोटनेसे खूब घोंटे। जब गोली बनने लायक हो जावे तब हरे आंवलेके रसमें घिसकर सफेद बालों पर लगावे, बाल काले हो जावेंगे।

खिजाब नं०—२

माजू फल	२०	आउन्स
तांबाका चूर्ण	८	„
आंवला	१०	„
कत्था	४	„
बहेड़ा	४	„
हर्रे बड़ी	१०	„
साफ पानी	८०	„
हींग	४	तोला

बनानेकी विधिः—

प्रथम माजूफल और हींगको कढ़ाईमें डालकर धीमी २ आंचमें भून लेवे, दोनों चीज ठीक तरह भुन जाय तब उसे नीचे उतार कर अलग २ कूटकर रख लेवे। बाकी की अन्य चीजोंको कूटकर लोहे की कढ़ाईमें पानी डालकर उसीमें मिलाकर इन चीजोंको १५ दिन तक फूलने दें। पन्दरह दिन बाद लोहेके घोंटेसे इसे चार दिन तक खूब घोंटे। जब सब वस्तु मिलकर एक हो जावे और गोली बनानेके लायक हो जावे तब जङ्गली बेरके इतनी २ दो बड़ी गोलियां बना ले। इन गोलियोंको जब उपयोगमें लाना हो तो १ गोली पानीमें घिसकर रोज सफेद बालोंमें ५—७ दिन बराबर लगावे, बाल अवश्य काले होंगे।

बाल काला करनेका तीसरा नुसखाः—

त्रिफलेको पानीमें भिगो दे, जब अच्छी तरह २४ घण्टेमें भींग जावे तब मल छानकर त्रिफलेके पानीसे बालोंको धो डाले, फिर मेहदी के पत्तोंको पीसकर उसका गाढ़ा २ लेप कर देना। एक घण्टे बाद मेहदीके लेपको उतार कर धो डालना। फिर नीलके पत्तोंको पीसकर उसका लेप कर देना, एक घण्टे तक उसे भी रहने देकर उसे भी धो डालना। ऐसा करनेसे बाल काले हो जावेंगे।

नोट—इस नुसखेसे बाल तो काले हो जावेंगे पर इस बातको याद रक्खें कि रोज न लगावे नहीं तो बाल कालेकी जगह रंगीन हो जावेंगे।

डबल रोटी Cake

डबल रोटी या बिस्कुट बनानेके साधनोंमें प्रधान साधन तन्दूर है। यह तन्दूर भांड़की शक्लका होता है मगर पक्की ईटोंका बना होता है, उसमें केवल एक छोटा सा महरावदार दरवाजा बनवाना चाहिये। जब तन्दूर तैय्यार हो जावे तो उसमें १॥ या २ मन पत्थर का कोयला डालकर दहका दो जिसमें बढ़ियां तन्दूर तैय्यार हो जावे,

अगर बिस्कुट या डबल रोटी ही बनानी हो तो तीन या चार सेर लकड़ी ही तन्दूरको गर्म करनेके लिये काफी होगी।

डबल रोटी बनानेकी बिधी:—

सवा पाव सौंफ पीसी हुई, १ छटांक खाने का सोडा और आधा पाव वूरा या पिसी हुई मिश्री और २॥ ढाई सेर पानी गर्म। पहिले पानीको एक बोतलमें डाल दो फिर उसमें सब चीजें और भी डाल दो, सब भरकर बोतलमें कार्क लगाकर ४–५ दिन तक रक्खा रहने दो। बीच बीचमें बोतलको हिला दिया करो जब देखो कि पानीमें सफेदी आगई और उसमें तुरसी मालूम पड़ने लगे तब उसे छानकर अलग रख लो।

अब आप २॥ सेर मैदा उपरोक्त पानीमें डाल गूंधो जब ठीक गुंध जाय तब खूब फेंटकर रख दो। ऐसा करनेसे २४ घण्टेमें आला दर्जेका खमीर उठ आवेगा।

जब खमीर तैय्यार हो जावे तो २० सेर मैदा या सूजी या दोनों चीजें मिलाकर लो और उपरोक्त खमीरमें मिलाकर गर्म पानीके साथ खूब गूंधो। अगर मीठा रखना हो तो कुछ सक्कर, नमकीन

रखना हो तो कुछ नमक, या फीका रखना हो तो कुछ न मिलावे। गुंधाई खूब होनी चाहिये और उसको फेंट कर खूब ढीला कर लेना चाहिये; याद रखिये जितनीही ज्यादा मैदेकी फेंटाई होगी उतनी ही अच्छी और बढ़िया स्वादिष्ट डबल रोटी तय्यार होगी। जब खमीरा तैय्यार हो जावे तो डबल रोटी बनानेके टीनके साचोंमें घी का पौछारा लगाकर खमीरा मैदा सांचेमें भर लें। ऐसे ही जब सब सांचा भर जावे तब टीनके तख्तों पर साचोंको रखकर गर्म तन्दूरमें रख दीजिये और दरवाजा बन्द कर दीजिये। जब उसमें डबल रोटीके पकनेकी भीनी २ महक आने लगे तो फिर कोंचे की मददसे टीनके तख्तोंको तन्दूरमें से बाहर निकाल लो। ठंडी होने पर मक्खन हाथमें लगाकर रोटियों पर फेर २ कर रख दीजिये ऐसा करनेसे वह और भी खुशबूदार हो जावेगी।

विस्कुट बनाना (Biscuit)

बनानेकी विधीः—

१ तोला खानेका सोडा तथा १ तोला नाइट्रिक एसिड लेकर १। पाव सकरमें मिला दो। इन तीनों चीजोंको सेर भर बढ़िया मैदेमें मिलाकर सवा पाव मठ्ठा इसमें डालकर चारों चीजोंको थोड़ा नमक मिलाकर गूंधिये। कनी लानेके लिये थोड़ा दूध रख ले गूंधते २ थोड़ा २ छींटा देकर गूंधते जाइये। इसी तरह दूधके सहारे गूंधते २ उसको मलाई की सी हालतमें ले आइये।

अब आप इस गुंधी हुई लुगदीको विस्कुट बनानेके सांचोंमें भरकर एक टीनके तख्ते पर रखते जाइये। फिर तन्दूरमें उस

तख्तेको रखकर तन्दूरका मुंह बन्द कर दीजिये, १५-२० मिनटोंमें स्वयंही विस्कुट पक कर मीठी २ महक आने लगेगी तब उसे निकाल लो। ठंडा हो जाने पर निकालकर बोंतेलोंमें भर लो।

नोट—अगर और बढ़िया विस्कुट बनानी हो तो मक्खन, बादाम, दालचीनी, पिस्ता; इलायची वगैरह भी मिला सकते हैं। पानी १ बूंद भी विस्कुटकी लुगदीमें नहीं मिलाना चाहिये नहीं तो विस्कुट खस्ता न होगी।

विलायती विस्कुट (Foreign Bfscuit)

कारबोनेट आफ एमोनियां ४ ड्राम अरारोट १ आउन्स सक्कर ४ आउन्स मक्खन ५ आउन्स इन सब चीजोंको आधा सेर दूधमें मिलाकर एक कर ले। जब सब मिलकर एक हो जावे तब उसमें २ पाउन्ड मैदेको गूंधें जब खूब गूंधते २ मलाई सी हो जावे तब विस्कुट बनाकर पका लें।

आरारोटका विस्कुट।

यह भी ऊपर लिखे ही नुस्खेके अनुसार बनेगा, सिर्फ इसमें मैदेकी जगह अरारोट देना होगा। लुगदी तय्यार हो जाने पर अगर बढ़िया बनाना चाहे। तो थोड़ा सिरका भी इस लुगदीमें मिला दे, इससे बिस्कुट और भी बढ़िया तैय्यार होंगे।

नोट -अगर सोंठ (Ginger) का विस्कुट वगैरह तैय्यार करना हो तो सोंठ भी डाल दें। अगर फलोंके महककी बनानी हो तो उसीका एसेन्स मिलाकर बना सकते हैं।

*

आतिश बाजी बनाना।

आतिशबाजी बनानेके लिये चार चीजोंकी प्रधान आवश्यकता होती है। शोरा, गन्धक, लोहचूर्ण, और कोयला। लकड़ी सेजना, अरण्ड, देवदारू या अरहरकी होनी चाहिये जो कि पटाखोंके साथ लगानेके काममें आती है।

अनार बनाना।

गन्धक आधा सेर, कोला १ सेर, सोरा १॥ सेर, लोह चूण १॥ सेर, इन चारों चीजोंको लेकर अलग २ खूब बारीक पीसे। बादमें सबको मिलाकर पक्की मट्टीके बने अनारके ढांचेमें खूब ठूस २ कर भर दो; बादमें आग लगा दो तो यह आवाज देकर जोरके साथ छूटेगा।

अनार बनाना नँ०—२

शोरा १ सेर, गन्धक २ पाव, कोयला ३ पाव, इन सबको अलग अलग बारीक पीसकर एकमें मिला दो, फिर अनारके ढांचेमें खूब ठूंस २ कर भर दो।

नीले रङ्ग की महताब बनाना।

क्लोस्टट आफ पोटाश १२ औंस गन्धक ३ आउन्स कार्बोनेट आफ कापर १८ ड्राम इन सबको अलग २ खूब बारीक पीसकर एकमें मिलाकर महतावको छुड़ाओ तो इसमें नीले रंगके फूल छुटते बड़े ही सुन्दर मालूम होंगे।

सादी महताब।

शोरा ११ आउन्स गन्धक ४॥ आउन्स बन्दूककी बारूद ३ औंस नको अलग २ खूब बारीक पीसकर एकमें मिला लो फिर मह- बमें भरकर घुटाओ, बहुत अच्छी छूटेगी।

लाल महताब।

नाइट्रिक टंसिथा ११ आउन्स; लोनिया गन्धक ५ आउन्स; लाटेन्ट आफ पोटाश ५ आउन्स इन सबको अलग २ खूब बारीक सकर एकहीमें मिला दो। इसे महताब या चरखी या छूछूंदर नाना हो तो उसमें भरकर छुड़ाओ; बहुत बढ़िया लाल रङ्गकी शनी होगी।

पीले रङ्ग की बारूद बनाना।

सोडा बाई कार्बन ४ आउन्स रोसनाई २ ड्राम शोरा कलमी २॥ आउन्स गन्धक ३॥ आउन्स इन सबको अलग २ पीस तथा कमें मिलाकर; अनार या चरखी; या महताव; किसीमें भी भरकर ड़ाओ। बहुत उमदा खूबसूरत पीला रङ्ग दिखाई देगा।

हरे रङ्ग की बारूद की महताब बनानी।

नाइट्रिक आफ बायोडा १२ आउन्स, गन्धक ४॥ आउन्स, लारेड आफ पोटाश ३० आउन्स, इन सबको अलग २ खूब बारीक सकर एकहीमें मिला दें, फिर इसे जिस उपयोगमें लाना हो भर- र छुड़ावें, सुन्दर हरा रङ्ग छुटाने पर नजर आवेगा।

दाउदी अनार।

शोरा ५ भाग, गन्धक ५ भाग, लोह चूर्ण ४भाग, इनको अलग अलग पीसकर एकमें मिलाकर भरके छुड़ावे, खूब बढ़िया मन मोहन दिल पसन्द फूलदार छूटेगा।

नोट—याद रक्खें कि जिस नुसखेमें जो चीजें अलग २ पीसनेको बताई गई है वह वैसे ही पीसें ऐसा न करनेसे, सब चीजोंको एक साथ मिलाकर पीसनेसे उनके आग निकलने वाले गुणोंके कारण आग लगने या धड़ाका होनेसे खतरा हो सकता है। इसलिये अलग अलग पीसना चाहिये।

सब प्रकार की रोशनाई बनाने की विधी

(Ink)

स्याही बनानेमें नीचे लिखी बातोंका खूब ध्यान रखना चाहिये, ऐसा न कर अगर गलती की जायगी तो पैसा लगाकर माल बनाया खराब हो जानेगा (१) स्याही जिस रङ्गकी बनाई जावे उसका रङ्ग भड़कीला होना चाहिये, जिसमें लिखनेके बाद भी उसमें चमक रहे। (२) स्याही बराबर होनी चाहिये, जिसमें लिखनेके समय उसमें चोप न बँधे। (३) स्याही ऐसी बनानी चाहिये कि ज्यादा दिन हो जाने पर उसका रंग फीका न पड़े जैसे लिखा जावे वैसाही रहे, यह तभी हो सकता है कि जब किताबमें बताई तरकीबके अनुसार आप काम करें।

सादी महताब ।

शोरा ११ आउन्स गन्धक ४॥ आउन्स बन्दूककी बारूद ३ औंस इनको अलग २ खूब बारीक पीसकर एकमें मिला लो फिर महताबमें भरकर घुटाओ, बहुत अच्छी छूटेगी ।

लाल महताब ।

नाइट्रिक टंसिथा ११ आउन्स; लोनिया गन्धक ५ आउन्स; क्लाटेन्ट आफ पोटाश ५ आउन्स इन सबको अलग २ खूब बारीक पीसकर एकहीमें मिला दो। इसे महताब या चरखी या छूछूंदर बनाना हो तो उसमें भरकर छुड़ाओ; बहुत बढ़िया लाल रङ्गकी रोशनी होगी ।

पीले रङ्ग की बारूद बनाना ।

सोडा बाई कार्बन ४ आउन्स रोसनाई २ ड्राम शोरा कलमो १२॥ आउन्स गन्धक ३॥ आउन्स इन सबको अलग २ पीस तथा एकमें मिलाकर; अनार या चरखी; या महताव; किसीमें भी भरकर छुड़ाओ। बहुत उमदा खूबसूरत पीला रङ्ग दिखाई देगा ।

हरे रङ्ग की बारूद की महताब बनानी ।

नाइट्रिक आफ ब्रायोडा १२ आउन्स, गन्धक ४॥ आउन्स, क्लारेड आफ पोटाश ३० आउन्स, इन सबको अलग २ खूब बारीक पीसकर एकहीमें मिला दें, फिर इसे जिस उपयोगमें लाना हो भरकर छुड़ावें , सुन्दर हरा रङ्ग छुटाने पर नजर आवेगा ।

दाउदी अनार।

शोरा ५ भाग, गन्धक ५ भाग, लोह चूर्ण ४भाग, इनको अलग अलग पीसकर एकमें मिलाकर भरके छुड़ावे, खूब बढ़िया मन मोहन दिल पसन्द फूलदार छूटेगा।

नोट—याद रक्खें कि जिस नुसखेमें जो चीजें अलग २ पीसनेको बताई गई है वह वैसे ही पीसें ऐसा न करनेसे, सब चीजोंको एक साथ मिलाकर पीसनेसे उनके आग निकलने वाले गुणोंके कारण आग लगने या धड़ाका होनेसे खतरा हो सकता है। इसलिये अलग अलग पीसना चाहिये।

सब प्रकार की रोशनाई बनाने की विधी

(Ink)

स्याही बनानेमें नीचे लिखी बातोंका खूब ध्यान रखना चाहिये, ऐसा न कर अगर गलती की जायगी तो पैसा लगाकर माल बनाया खराब हो जानेगा (१) स्याही जिस रङ्गकी बनाई जावे उसका रङ्ग भड़कीला होना चाहिये, जिसमें लिखनेके बाद भी उसमें चमक रहे। (२) स्याही बराबर होनी चाहिये, जिसमें लिखनेके समय उसमें चोप न बँधे। (३) स्याही ऐसी बनानी चाहिये कि ज्यादा दिन हो जाने पर उसका रंग फीका न पड़े जैसे लिखा जावे वैसाही रहे, यह तभी हो सकता है कि जब किताबमें बताई तरकीबके अनुसार आप काम करें।

(Foriegn) या विलायतो रोशनाई बनानेकी क्रियामें प्रधान चीज एक लकड़ी होती है जिसका रङ्ग लाल या भूरे रङ्गका होता है। इसे अँग्रेजीमें (Long wood) तथा हिन्दीमें पतङ्गकी लकड़ी कहते हैं। यह लकड़ी भी आती है तथा इसका सत भी आता है,इसके सतमें लकड़ीसे चार गुणा रंग होता है। लौंग उडकी लकड़ी या इसके सतके मिलानसे अनेक प्रकारकी रोशनाइयां बन सकती हैं।

ब्लू ब्लैक रोशनाई ।

साफ़ पानी	४	सेर
गोंद	२०	तोले
एसिटिक ऐसिड	४०	„
कसीस	२०	„
माजूफल	२०	„
लौंग उडका सत	१६	„

वनानेकी विधीः—

माजूफल, कसीस, गोंद, इन तीनोंको पीसकर या कूटकर एसिटिक एसिडमें डालकर १५ दिन तक गलाना चाहिये। फिर उपरोक्त पानीमें लौंग उडका सत डालकर आग पर चढ़ावे; कढ़ते २ जब आधा पानी जल जावे तब तीनों चीजों वाले एसिटिक एसिडको भी इसमें मिला दे और कुछ गरम हो जाने पर अच्छी तरह चलाकर नीचे उतार कर दो तीन दिन तक पड़ा रहने दे जब उसका कचरा नीचे बैठ जावे तब छानकर बोतलोंमें भर लें यह नं०-१ की बहुत बढ़िया चमकदार स्याही तय्यार हो जावेगी।

देशी सस्ती ब्लू ब्लैक रोशनाई।

त्रिफला	३	तोला
कसीस	१	„
लीला थोथा	२	मासे
पानी	१	सेर

बनानेकी बिधीं:—

तीनों चीजोंको खूब बारीक पीसकर कपड़छान करके १ सेर पानीमें डाल आगपर चढ़ा देवें। उबाल आने पर नीचे उतार ले ठंडा होनेपर छानकर बोतलोंमें भरकर जरूरतके वक्त काममें लाओ।

बढ़िया ब्लू ब्लैक नं०—३

साफ़ पानी	६	सेर
कसीस	५	छटांक
माजूफल	५	„
लौंग उडकी लकड़ी	५	„
गोंद	॥	सेर
टैनिक एसिड	॥	„

बनानेकी विधी:—

माजूफल, कसीस गोंद को कूटकर प्रायः ३॥ सेर पानीमें डालकर भिगो दे और १५ दिन तक पड़ा रहने दे। दो सप्ताहके बाद जब वह फूल जावे तब १ पाव पानी उसमें और डाल दे। फिर २॥ सेर पानीके साथ लौंगउढकी छालको आगपर चढ़ा कर उबाले जब २ सेर पानी रह जावे तब उसे छानकर उपरोक्त तीनों चीजोंका पानी

तथा एसिड भी मिलाकर सबको एक साथ चलाकर एक सप्ताह तक पड़ा रहने दे। जब कचरा नीचे बैठ जावे तब स्याहीको छानकर बोतलोंमें भर लें।

नोट—यह ध्यान रक्खें कि पानी ज्यादा न जल जावे नहीं तो स्याही गाढ़ी हो जायगी और लिखनेमें दिक्कत होगी। गाढ़ी होनेमें उसमें थोड़ा पानी मिलाकर ठीक कर लेना चाहिये।

काली रोशनाई (Black Ink)

कड़ुवे तेलका काजल और असली बबूलका गोंद और साफ पानी इन तीनों को कढ़ाईमें डालकर दो दिन तक खूब घोंटो यहां तक कि घुटते २ दोनों एक जान हो जावें। गाढ़ा हो जाने पर सिरकी की मोटी सीखों पर उसको लपेट कर सुखानेको रख दो, जब सूख जावे तब उसको चाकूसे छुड़ाकर रख लो ओर जब काममें लाना हो तब जलमें मिलाकर काममें लावो।

आधुनिक काली रोशनाई

माजू फल	१	सेर
गोंद	१	"
लौंग उडकी छाल	१।	"
कसीस	॥	"
वाइरो लिग्निअस एसिड	३॥	"
साफ पानी	५	"

माजूफल, कसीस, गोंद इनको अच्छी तरह कूटकर चूर्ण कर लेना। फिर एक बड़े बर्तनमें एसिडको डालकर उसमें उपरोक्त चूर्ण

मिला देवें । फिर एक बर्तनमें पानी डालकर लौंग उडके चूर्णको उस जलमें मिलाकर धीमी २ आंच पर इतना गरम करें कि उसका रङ्ग निकल आवे। चौथाई पानी जल जाने पर उसे आगसे उतार कर ठँडा करके उसीमें एसिडसे मिली हुई दवाइयां भी डाल दें, फिर इसे अच्छी तरह सबको लकड़ीसे चलाकर उन्हें (१५ दिन तक पड़ा रहने दें तथा दिनमें दो तीन बार हिला दिया करें । दो सप्ताह बाद ऐसा करनेसे सबका सत्त निकल कर बहुत बढिया स्याही तय्यार हो जावेगी, तब उसे छानकर बोतलोंमें भर लें ।

नोट—अगर इसके कचरेको भी काममें लाना चाहे तो और चीजें जो कि नीचे लिखी जाती हैं उन्हें भी मिलाकर नं०-२ की स्याही तय्यार कर सकते हैं।

Black Ink No—2

कसीस	१२	तोले
वाइरो लिग्निअस एसिड	१	सेर
गोंद	५	छटांक
साफ पानी	१	सेर

बनानेकी विधीः—

गोंद और कसीसको बारीक पीसकर ऊपर वाली कालीके कचरेके साथ मिला देना। फिर एक बड़े बर्तनमें पानी डालकर कचरा और उपरोक्त दवाइयें सब मिलाकर तथा एसिड भी उसीमें डालकर १५ दिन तक पड़ा रहने दे। दिनमें दो तीन बार इसे हिला दिया करे दो सप्ताह बाद बढ़िया स्याही तय्यार हो जावेगी, तब इसे छानकर बोतलोंमें भर लो ।

लाल स्याही (Red Ink)

लाल स्याही बनानेमें प्रधान चीज रंगीन लकड़ी होती है हिन्दुस्तानमें जो लकड़ी लाल रँगमें पड़ती है उसका नाम रतनज्योति है। अंग्रेजी ढँगसे जो स्याही बनती है उसमें एक अमेरिकन लकड़ीका चूर पड़ता है जिसे उबालनेसे लाल रँग निकलता है यह लकड़ीका चूर लाल स्याही बनानेके ही काम आता है। इस चूरको बेंजिल-उड तथा पर्नेम्बुक उड भी कहते हैं।

विलायती ढङ्ग की लाल स्याही ।

पार्नेन्बुक उड	१।। सेर	टीनसाल्ट	१ छंटाक
गोंद	१।। पाव	साफ पानी	१। सेर

बनानेकी बिधीः—

पर्नेम्बुक उड को खूब बारीक पीसकर पानीमें डालकर उबालो, जब रंग उतर आवे तब इसे छानकर रख लेना। पर्नेम्बुक उडके थोड़ेसे रंगमें गोंद खूब वारीक पीस कर भिगोदे टीन साल्ट को भी पानीमें डालकर गलावे, अगर पानीमें न गले तो (नमकका तेजाब) डालने सीघ्रही टीनसाल गल जावेगा। अब तीनों चीजोंको एकमें मिलाकर उन्हें दो दिन तक पड़ा रहने दे, उसको अच्छी तरह मिल जानेके लिये दिनमें २-३ बार हिला दिया करे। ऐसा करनेसे स्याही तैय्यार हो जावेगी। तैय्यार होनेसे साफ कपड़ेमें छान लें शायद अगर रंग गाढ़ा रहे तो थोड़ा पानी मिलाकर ठीक करलेँ। सुन्दर लाल रंग की स्याही तय्यार हो जावेगी।

देशी ढंगकी लाल स्याही।

आल	१	छंटाक	पठानी लोध	१	छंटाक
पतंग	१	छंटाक	मजीठ	१	छटाक
रतन ज्योति	१	„	कच्ची लाख	१	„
सिंगरफ	१	तोला	बबूलका गोंद	१	तोला
फिटकरी	६	मासे	सोहागा	६	मासे
कत्था	६	„			

बनानेकी बिधीः—

आल, पतंग, पठानीलोध, मजीठ, रतन ज्योति, इन पांचो चीजों को ५ छटांक लेकर कूटकर ५ सेर पानीमें भिगोदें। तीन दिन भिगोनेके बाद आगपर चढ़ाकर उबालो जब ३॥। सेर पानी रहजावे तो नीचे उतारकर छान लो। इस छने हुये पानीमें कच्ची लाख कूटकर फिर पकाबो जब आधा पानी रह जावे तब छान लो। छाननेके बाद उस पानीमें सिंगरफ १ तोले, कत्था, फिटकरी, सुहागा, बबूलकी गोंद, यह पांचों ऊपर लिखी तोलके अनुसार लेकर इन्हें कूटकर इसी पानीमें मिलाकर खूब घोटिये। अच्छी तरह घुट जाने पर गाढ़ा होने पर चाहे गोली बनालें चाहे और पानी डालकर पुनः घोंटकर मिल जाने पर बोतलोंमें भरलें। यह स्वदेशी लाल रोशनाई बहुत चमकदार तथा बढ़िया होगी।

विलायती ढंगकी लाल स्याही—नं० १

पर्नम्बुक उड	१६	तोले	गोंद	७	तोले
फिटकरी	४	„	साफपानी	१॥।	सेर

बनानेकी बिधी:---

पर्नम्बुक उड़को गर्मपानीमें उबालकर रंग निकाल लें। उसे छानकर थोड़ेसे रंगमें, गोंद और फिटकरीको पीसकर उस पानीमें गलावें। गल जाने पर सब चीजें एकमें मिलाकर एक सप्ताह तक पड़ी रहने दे बीचमें प्रत्येक दिन २-३ बार हिला दिया करें, ऐसा करनेसे सब चीजें एक साथ मिलकर लाल रंग की स्याही बन जावेगी। शायद अगर रंग कुछ लालकी जगह वैंगनीपन पर रहे तो टारटारिक एसिड मिलाकर वोतलोंमें छानकर भर लेना लाल रंगकी उमदा स्याही तय्यार मिलेगी।

नीली रोशनाई (Blue ink)

विलायती नील	१ छटाक	गंधकका तेजाब	६ मासे
पानी	१ सेर		

चीना मट्टीके वर्तनमें पहिले तेजाब डालकर पानी डालो फिर नील डालकर मिलाकर आग पर चढ़ाओ फिर उबाल दिलवाकर छानलो। बढ़िया नीली रोसनाई तय्यार हो जावेगी।

नं० २ की सस्ती ग्रीन स्याही।

पीली और नीली स्याही, या रंग बराबर २ एकमें मिला कर पानीमें घोल आगपर जोश दिलाकर उतार लें।

नं० ३ की नीली रोशनाई।

बर्डोग्रीन (जंगाली रंग)	१२ तोले
टारटरिक एसिड	६ तोले
साफ पानी	३ पाव

उपरोक्त दोनों चीजें पानीमें डालकर किसी बर्तनमें चढ़ा आगपर उबालें। जब गरम हो कर सब मिलकर रंग एक समान हो जावे तब इसे लकड़ीसे चलाकर नीचे उतार लें, ठंडा हो जानेपर छानकर बोतलोंमें भर लें।

कापिंग स्याही Coppying ink

यह स्याही आफिसोंमें नोटिश चिट्ठियों वगैरह की नकलें करने तथा वैसे भी कापिंग रंगमें लिखनेके काम आती है।

माजूफल	१। सेर	ग्रेपसूगर	१ सेर २ तोला
कसीस	१। पाव	कार्बोलिकएसिड	२ आउन्स
गोंद	१६ आउन्स	साफ़ पानी	८ सेर

बनाने की विधी—

माजूफल, कसीस, गोंद ग्रेप सूगर को कूट करके पानीमें डाल एक सप्ताह तक गलाओ। प्रत्येक दिन इसे दो तीन बार हिला दिया करें। जब सब चीजोंका सत निकल आवे तब कार्बोलिक एसिड डालकर लकड़ी से चलाकर मिला दें। मिलजाने पर ठीक हो तो छानकर बोतलोंमें भरलें अगर बहुत चमकीली मालूम दे तो ऊपर लिखी चीजोंमें ग्रेपसूगर तथा गोंदको छोड़कर अन्य चीजों की स्याही बनाकर उसमें और मिला दें ठीक हो जावेगी।

सस्ता तथा मामूली ढंगसे बनानेकी विधीः—

सफ़ेद बूरेकी चासनीमें बैंगनी रंग सूखा मिलाकर खूब घोंट लो दोनों एक जान होनेपर उतार लो। नकल लेनेकी स्याही तय्यार हो जावेगी।

Stamping Ink रवर स्टाम्पकी स्याही

बैंगनी रंग	२ तोले	मैथलियेटेड स्पिरिट	१० आउन्स
ग्लिसरीन	,, ,,	तारपीनका तेल	

बतानेकी विधीः—

थोड़ीसी स्पिरिटमें रंग घोलकर बाकी स्पिरिटमें ग्लीसरीन डाल तथा स्पिरिट मिला हुआ रंग मिलाकर तीन दिन तक पड़ा रहने दे, बीच बीचमें प्रत्येक दिन २-३ बार हिला दिया करें। जब सब मिलकर एक हो जावे तब छानकर शीशियोंमें भरलेवें।

नोट—रवर स्टाम्पकी स्याही अगर आप लाल बनाना चाहें तो बैंगनीकी जगह लाल रङ्ग अगर नीली बनाना चाहे तो नीला रंग डालना होगा।

लीथो प्रेस की कापी लिखनेकी स्याही

Litho press ink

साबुन सफेद	१ तोला	मोमसफेद	१ तोला
चर्बी सफेद	२ तोला	चपड़ाः	१ तोला
रूमी मस्तगी	३ तोला	काजल	४ तोला

बनानेकी विधीः—

पहिले लाखको किसी वर्तनमें डालकर आगपर पिघलाओ पिघल जाने पर उसमें रूमीमस्तगी मोम, चरबी, साबुनका चूर खूब बारीक छीलकर इन चारों चीजोंको लाखके साथ खूब गरम करो।

जब चारों चीजें गलकर एक रस हो जावें तब नीचे उतारकर काजल डालकर खूब घोंटो, घोंटते घोंटते गाढ़ी हो जाने पर डिबियोंमें भर कर रख लो।

नोट—जब कापी लिखनी हो तो थोड़ीसी रोशनाई गरम पानीमें घोलकर कापी लिखो। यह रोशनाई उतनीही तय्यार करो जितनी लिखनेके काममें आवे ज्यादा दिन बनी हुई पड़ी रहनेसे रोशनाई बिगड़ जाती है, इस लिये ताजी स्याहीसे ही लिखना चाहिये।

अंगूठेके निशान लेनेकी स्याही

कड़वे तेलका काजल ६ मासे, ग्लीसरीन १ छटाक, ताड़पीनका तेल १ तोला। इन सब को खूब अच्छे प्रकारसे घोंटो। घुट जानेपर डिबियामें भर रख लो और समय पर काममें लाओ।

कपड़ों पर निशान देनेकी स्याही

MarKing Ink

इस स्याहीको वासिङ्ग कम्पनी या धोबी लोग ग्राहकोंके कपड़ों की पहचानके लिये मार्का देनेके काममें लाते हैं, इसका मार्का पक्का होता है, उठता नहीं। लेकिन जब इसे प्रयोगमें लाना हो तो गोंदका पानी या सोडेका पानो पहिले वहां लगाकर तब मार्किंग स्याहीसे निशान देना चाहिये।

मार्किङ्ग इङ्क

नाइट्रेट आफ सिलभर	६	तोले
कज्जल	२	,,
गोंद	६	,,
पानी	६०	,,

बनाने की विधीः—

पहिले गोंदको कूटकर थोड़ेसे पानीमें भिगोकर गला ले। गल जाने पर उसी पानीमें कज्जळको अच्छी तरह घोलकर उसमें नाइट्रेट-आफ सिलभर और बाकी बचा हुआ पानी भी डालकर सबको एकमें लकड़ीसे चलाकर मिळा देना। इसे चार दिन तक पड़ा रहने दें। बीच २ में दिनमें २-३ बार हिला दिया करें जिसमें सब चीजें मिलकर एक हो जावे तब छानकर शीशियोंमें भर लेवें।

नोट—अगर कज्जळ न मिले और काली बनाना हो तो पक्का काळा रंग और कोई रंगका बनाना हो तो वह पका रंग लेवे।

सूखी स्याही Ink Pwder

ब्लू ब्लैक स्याही।

हर्र, बहेड़ा, कसीस, तीनों २ तोला, अंग्रेजी नील १२॥ तोला, सबको कूट पीस छानकर पाउडर बना लें। जब स्याही बनानी हो गरम पानीमें घोलकर काममें लावें।

नोट—इसी तरह अगर लाल बनाना हो तो पक्का लाल रंग या लौंग उडकी लकड़ीका सत मिला दे।

—✱—

बर्तनों पर एनामेल चढ़ाना Enamul

तांमचीनी या एनामेलके बर्तन विदेशोंसे लाखों रुपयोंके यहां आते हैं। इन बर्तनोंमें टीन या लोहे पर एक प्रकारकी गिल्ट होती है उसका मसाला हम नीचे लिखते हैं यह हर प्रकारके धातुके बर्तन पर चढ़ सकता है।

खरिया मट्टी	१	तोला
सफेदा काशगरी	२	"
बोराक्स एसिड	६	"
कार्बोनेट आफ सोडा	१०	"
सफेद शीशेका बारीक सफूफ	३०	"

इन चारोंको एक हांड़ीमें रखकर आगमें एक साथ भूने फिर उतार कर ठंडा करके सिल पर डालकर बहुत बारीक पीस ले। पीसनेके बाद साफ पानी उतना ही मिलावे जितनेमें वह बर्तन पर लेप करनेके लायक हो जावे इसका बर्तन पर लेप चढ़ाकर आगमें रख दे। यहां तक कि बर्तन तपिससे लाल हो जावे फिर उसे उतार कर ठंडा कर लें।

सोने चांदी की कलई।

बर्तनमें कलई इसलिये की जाती है कि कई प्रकार की धातुओंके बर्तनमें खट्टी या खारकी चीज रख देनेसे वह खराब हो जाता है, अगर उसमें कलई या गिल्टी की हुई होती है तो वह खराब नहीं होती। नीचे आपको कलई करने की तरकीब बताते हैं जिसके नुस्खेसे प्रत्येक मनुष्य अपने घरमें कलई कर सकता है। कलईके

सामानोंमें चीना मट्टीका बर्तन मुख्य है,काम करनेके पहिले इसे मंगवा कर रख लेना चाहिये।

सोने की कलई।

गोल्ड क्लोराइड	२	ड्राम
बाई कार्बोनेट आफ पुटास	१०	आउन्स
साफ पानी	४०	,,

बनाने की विधीः—

चीना मट्टीके बर्तनमें पानी डालकर उसमें गोल्ड क्लोराइड डालकर कांचकी सलाईसे चलाकर दोनों वस्तुओंको एक कर देना। फिर उसमें कार्बोनेट आफ पोटाश (Carbonate of potas) डालकर अग्नि पर धीमी २ आंच पर पकाना। जब पानी जलकर मिश्रित वस्तु गाढ़ी हो जावे तब उसे नीचे उतार लेवे और ठंडा होने पर कलई करनेके काममें लावे।

जिस बर्तन पर कलई करनी हो अगर उस पर दाग हो या बर्तन में जङ्ग लग गया हो तो सलफ्यूरिक एसिड (Sulphuric acid) या गंधकके तेजाबको लगाकर साफ कर लेना। साफ करनेके बाद कलई थोड़ी सी उस बर्तनमें लगाकर कपड़ेसे उस बर्तनमें खूब घसिये ऐसा करनेसे कलई चढ़ जावेगी।

नोट—यह याद रक्खें कि कलई उसी स्थान पर तैय्यार करनी चाहिये जहां ज्यादा प्रकाश न हो।

नकली सोना बनाना।

शुद्ध तांबा १०० भाग, रांगा १७ भाग, म्यागनेसिया ६ भाग, पीसा नौसादर ३, ६ भाग, चूना पीसा हुआ १, ८ भाग, टार्टार ९ भाग।

बनानेकी विधी:—

पहिले तांबेको चीनी मट्टीके वर्तनमें आगपर चढ़ाकर गलाओ, फिर म्यागनेसिया मिला दो। किसी चम्मच वगैरहसे तब तक चलाते जाओ जब तक कि मिल न जावे, फिर जस्तेको टुकड़े टुकड़े करके मिलाओ जब सब मिलकर धूंआ निकलने लगे तब मट्टीके ढकनेसे ढंक कर ३५-४० मिनिट आग पर रहने दो। जिस चीजको बनाना हो सांचेमें ढालकर बना लो, ढली हुई वस्तु बनानेके लिये यह सोना बहुत उत्तम होता है। इसमें चमक भी खूब होती है, यह कभी काला नहीं पड़ता और देखनेमें ठीक सोने की तरह होता है।

नकली चांदी बनाना।

रांगा ३ आउन्स तांबा ४ पाउन्ड, दोनों धातुओंको टुकड़े टुकड़े करके चीना मट्टीके वर्तनमें डाल आग पर गलाओ, दोनों जब गलकर एक हो जावे तो उपरोक्त विधिसे ढलवां गहने या जो बनाना हो बना सकते हैं।

सब प्रकार की पालिस बनाने की विधीः—

आधुनिक युगमें ऐसा कोई आदमी न होगा जो कि यह न जानता हो कि "पालिस क्या चीज है ?" कारण कि नवीन ढंगके बूट या चमड़े के सामान पर पालिस करनेकी आवश्यकता सबको होती है। यह दो तरहकी बनाई जाती है (१) एक तो मलहमके सदृश्य (२) पतली, जिसे कूंचीसे लगाया जाता है। (३) धातुओं के बर्तन जैसे चांदी, सोना, पीतल, ताम्बा, कांसा इत्यादि पर पालिस करना। यह तीनों तरहकी पालिस बनाना नीचे बताया जाता है जिसे तय्यार कर आप अपना भी काम चला सकते तथा व्यापारके उद्देश्यसे करनेसे धन भी कमा सकते हैं।

काली बूट पालिस ।

सफेद मोम	३०	आवन्स
मेसलीन	४५	"
साबुनका चूर्ण	२४	"
टर्पेण्टाइन	२४	"
कज्जल	४५	"

तैय्यार करनेकी विधीः—

चीना मट्टीके बर्तनमें सफेद मोम; साबुन और मेसलीन तीनोंको मिलाकर धीमी २ आंच पर गरम करना। जब तीनों पिघल कर एक हो जावे तब टर्पेण्टाइनमें कज्जल घोलकर उसे भी उसमें मिला देना। फिर लकड़ीसे पांचो चीजोंको मिलावे एकमें मिल जानेपर उतार कर ठंढा करके डिब्बियोंमें भर लेना।

बादामी बूट पालिश

सफेद मोम	१५	आउन्स
साबुनका चूरा	१५	"
भेसलीन	३०	"
टर्पेण्टाइन	२४	"
पीला रंग	३	"

बनानेकी विधीः—

ऊपर जो काली बूट पालिस बनानेकी विधी बतला चुके हैं, उसी ढंगसे यह भी तय्यार की जाती है।

तरल बादामी बूट पालिस

मेथलियेटेड स्पिरिट	४०	आउन्स
कपूर	३	"
चपड़ेका चूणै	१५	"
पीला रंग	३	"

बनानेकी विधीः—

चीना मट्टीके बतनमें स्पिरिट डालकर चपड़ेके चूर्णको उसमें डाल देना, फिर थोड़ेसे स्पिरिटमें रंगको भी अच्छी तरह घोलकर मिला देना। बाकी बची स्पिरिट तथा कपूर भी मिलाकर लकड़ीसे चलाकर १० दिन तक इसे पड़ा रहने दें सिर्फ दिनमें २-२ बार हिला दिया करें। पालिस तैय्यार हो जावेगी तब शीशियोंमें भर लें।

सफेद बूट पालिश

सफेद खड़िया मट्टी	१	सेर
सफेद सरेश	८	आउन्स
पानी	४०	”

बनानेकी बिधीः—

चीना मट्टीके बर्तनमें पानी डालकर और उसमें सरेश मिलाकर धीमी २ आंच पर गरम करें। जब सरेश गलकर पनीके साथ मिल जावे तब खड़िया मट्टीको पीस कपड़छान कर उसे भी इसमें मिला देना जब सब मिलकर एक समान हो जावे तब नीचे उतार कर ठंडा होने पर डिब्बियोंमें भर लेना।

व्यवहार करनेकी बिधिः—

जिस चीजमें यह पालिश लगानी हो उसे पहिले कपड़े या ब्रुससे साफ कर लेवे। साफ कर लेने पर पालिसको थोड़े से पानीमें घिसकर उस चीजमें लगा दो और थोड़ी देर तक हवामें सूखने दो, पालिस हो जावेगी।

—:o:—

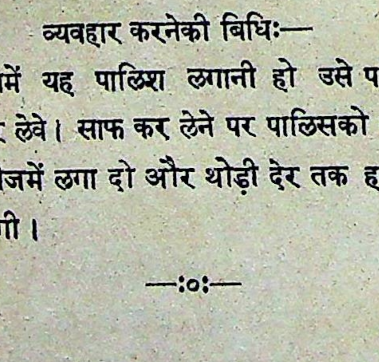

धातुओंकी पालिश बनानेकी बिधी

दो तरहकी पालिशकी आवश्यकता पड़ती है एक तो पीतल, कांसा, अल्युमिनियम, तांवा इत्यादि, के बर्तनोंको साफ करनेके लिये। दूसरी सोना, चांदीके वर्तन तथा जेवरोंको साफ करनेके लिये पहिली पालिशको बर्तनों पर लगा कर कपड़ेसे रगड़कर पोंछ देनेपर बर्तन झकझकाने लग जाते हैं, दूसरी सोना, चांदीके गहने या वर्तनों पर लगाकर साफ कर देनेसे वह साफ और चमकीले नये जैसे मालूम पड़ने लगते हैं। नीचे दोनों तरह की पालिशोंके बनानेकी क्रिया दी जाती है, उसीके अनुसार बनाकर फायदा उठाइये।

चांदीके बर्तनोंको साफ करनेकी पालिश।

साइनेट आफ पोटाश	आधा	पाउन्ड
साल्ट आफ टारटर	,,	,,
पानी	१	गैलन

इन तीनों चीजोंको किसी लकड़ीके डंडेसे एकमें मिला लेवे फिर जिस चांदीके बर्तन या गहने को सफा करना हो उसे कोई चीजसे पकड़ कर इस मिक्शचर में आध घण्टे तक पड़ा रहने दे। आध घन्टे बाद निकालकर गर्म पानीमें डाल कर बुरुससे धो डालो। सावधान यह पानी घावमें या आँख और मुंहमें न लगने पावे।

पालिश नं० २

नौसादर का पानी	२	ड्राम
स्पिरिट कैम्फर	१	ड्राम
करेटा प्रीपरेटा	६	आउन्स
रेक्टीफाईड स्पिरिट	६	,,

बनानेकी बिधी—

ऊपर लिखी चारों चीजोंको किसी शीशे की बड़ी बोतलमें डालकर मिलादें और दो दिन तक इसे पड़ा रहने देवें । दिनमें दो तीन बार इसे हिला दिया करें बस यह पालिस तैय्यार हो जावेगी । जिस बर्तनमें पालिस लगानी हो पहिले उसे पानीसे अच्छी तरह धो लेना चाहिये तब उसमें उपरोक्त तरल पालिस अच्छी तरह लगाकर छायामें सूखनेके बाद सावेके चमड़ेसे या मोटे कपड़ेसे रगड़ कर पोंछ देनेसे बर्तन एकदम नयेके समान चमकने लगेंगे ।

चाँदीके जेवरोंके लिये पालिश

Silver polish

क्रीम आफ टारटार	१	आउन्स
फिटकरी	१	”
पांगा नमक	आधा	आउन्स
पानी	१	सेर

बनानेकी बिधी—

उपरोक्त तीनों चीजोंको पानीमें मिलाकर जो गहने साफ करने हो वह भी उसमें छोड़ देना चाहिये । दो घंटे बाद निकाल कर जेवरोंको बुरुससे साफ कर ले, ऐसा करनेसे चांदीके जेवर बिल्कुल नये सरीखे मालूम होंगे ।

Brass polish पीतल पालिश ।

जापानी मोम	८	आउन्स
सलफ्यूरिक एसिड	४	आउन्स
लाल ईंटकी बुकनी	८	आउन्स

बनानेकी क्रिया—

लाल ईंटको खूब बारीक पीसकर कपड़छान कर लेना चाहिये। मोमको आगपर चढ़ाकर गला लेवे जब गल जावे तब सलफ्यूरिक ऐसिड तथा लाल ईंटकी बुकनी दोनों मिला कर लकड़ीसे चलावे, जब सब वस्तुऐं मिलकर एक हो जावें तब नीचे उतार ठंडाकर डिब्बियोंमें भर लेवे। अगर वर्तन में मोर्चा लग गया हो तो किरासिन तेलमें भिगोकर साफ कर लेवे फिर उपरोक्त पालिश वर्तनपर लगाकर एक घंटा तक सूखनेदे, फिर किसी मोटे कपड़ेसे रगड़ कर पोंछ देनेसे वर्तन सफा हो जावेंगे। यह तांबां, पीतल, जर्मन सिलवर तीनों तरहके बर्तनमें काम आ सकती है।

सोनेके जेवर साफ करनेकी पालिस ।

शोरा	१	आउन्स
नमक	१	„
फिटकरी	१	„

वनानेकी विधी—

इन तीनों चीजोंको पानीमें डालकर आगपर चढ़ादें जब यह औंट जावेगा तब इसका बहुत बढ़िया तेजाब तैयार हो जावेगा। जिन जेवरोंको सफा करना हो इस तेजाबमें डाल दें, करीब १ घंटे बाद

इसमेंसे निकाल कर गरम पानीसे धो बुरुससे सफा कर लेवें । फिर पोंछ कर सिन्दूर लगाकर सूखने दें । बादमें कपड़े या सावेंके चमड़े से पोंछ देनेसे जेवर एकदम नयेके समान हो जावेंगे ।

मोती पालिश Pearl polish

सोरा	२ तोला	सिंगरफ	२ तोले
सज्जी	२ ,,	चर्बी	२ ,,
समुद्रफेन	२ ,,	मैन्सिल	२ ,,

इन सब चीजोंको पानीमें डाल आग पर पकावो, पकते २ जब फेन उठने लगे तब उसमें मोती डालकर १०–१५ मिनिट बाद निकाल लो । ठंडा होनेपर रुईके गालोंसे सफा करो बहुत बढ़िया चमक आ जावेगी ।

— —

बार्निश प्रकरण।

प्रिय पाठकों,

आपको प्रत्येक तरहकी बार्निश बनाना इस प्रकरणमें बताया जावेगा। बार्निश ऐसी कोई चीज नहीं है जिसे कोई न जानता हो, यह दो तरहकी बनती हैं एक तो लकड़ीकी चीजोंको चमकदार तथा टिकाऊ बनानेके लिये, दूसरी चमड़ेपर लगाने की बार्निश।

साधारण बार्निश।

चपड़ा	३२	आउन्स
मेथेलियेटेन्ड स्पिरिट	२॥	सेर

तैयार करनेकी विधी—

चपड़े को बारीक पीसकर स्पिरिटके भांडमें मिलादें, इसे मिलाकर २-३-दिन तक पड़ा रहने दें। दिनमें २—३ वार इसे हिला दिया करें, ऐसा करनेसे बढ़िया बार्निश तैयार हो जावेगी। जब इसे लकड़ीपर पालिश करने को लगाना हो तो पहिले सैण्ड पेपर थानी बालूके कागजसे लकड़ीको घिसकर कपड़े की पोटलीसे लगावें। अगर इसे लाल रंगका करना हो तो मटिया कत्थई रंग या खून खरावी और एलकानेट रूट मिलाना होगा।

कोप्याल बार्निश।

अफरीकन गमकोप्याल	८	पाउन्ड
तीसीका तेल	२	गैलन
ताड़पीनका तेल	३	गैलन

बनानेकी बिधी ।

अफरीकन गमकोप्यालको पानीकी तरह गलालो । फिर तीसी के तेल को आग पर चढ़ाकर खूब खौलने दो तब अफरीकन गमकोप्याल को उसमें छोड़ दे, दोनों मिलकर जब औंटकर गाढ़ा होने लगे तब ताड़पीनका तेल मिलाकर छान लो बढ़िया बार्निश तैयार हो जावेगी । अगर बार्निस बनाते वक्त गाढ़ी हो जावे तो और तारपीन का तेल गरम करके उसमें मिलाकर पतला कर सकते हो ।

फ्रेंच पालिश ।

मेथलिमेटेड स्पिरिट	२५	आउन्स
राल पीसी हुई	२	आउन्स
चपड़ा	८	आउन्स

बनानेकी बिधी :—

उपरोक्त तीनों चीजे एकमें मिलाकर कांचके भांड़में भर कर लकड़ीसे चलाकर भांड़का मुंह बन्द कर दें और १५ दिन तक उसे रख छोड़ों । दिनमें २—३ बार उसे हिला दिया करें, पन्द्रह दिनमें जब तीनों चीज गलकर एक हो जावेगी तब महीन चलनीसे छानकर बोतलोंमें भर लेवें । यह वार्निश फैन्सी फर्नीचरमें पालिस करनेके काममें आता है, जब लगाना हो तो पहिले पालिश पेपरसे इलमारी या पलङ्ग साफ करके लगाना चाहिये ।

फ्रेंच पालिश नं०—२

चपड़ा	२४	आउन्स
बबूलका गोंद	७	„

मास्टिक	१	आउन्स
राल	६	„
मेथिलियेटेड स्पिरिट	२	सेर

बनाने की विधी :—

स्पिरिटमें चारों चीजें पीसकर मिलाई जावेंगी। बनानेकी क्रिया नं० १, फ्रेंच पालिश ही की तरह है। यह पालिश महीन नकाशीदार लकड़ी पर लगाई जाती है।

सफेद बार्निस

गम कोप्याल	७।।	आउन्स
कपूर	१	„
अलकोहल	१	पाव
म्यासटिक	२	आउन्स
टार्पेण्टाइन	१	„

बनानेकी विधीः—

गम कोप्याल तथा कपूरको अलकोहलमें डालकर आगपर चढ़ाकर गलाओ जब तीनों चीज एक हो जावे तब म्यास्टिक और टार्पेण्टाइनको मिलाकर उतार कर छान लो। अगर यह गाढ़ी रह जावे तो गरम करके आलकोहल और मिला देना यह बार्निस बहुत सफेद होती है और सूखने पर यहां तक कड़ी हो जाती है कि इस पर पालिश भी की जा सकती है। यह काठके खिलौने या तस्वीरोंके फ्रेमके काम आती है।

सफेद बार्निस नँ०—२

बेरूबियन बालसम	४	आउन्स
सेन्ड्राक	८	”
टार्पेन्टाइन	४	”
मास्टिक	१२	”
मेथेलियेटेड स्पिरिट	२	सेर

बनानेकी बिधिः—

ऊपरकी हर एक बस्तुको कूटकर स्पिरिटमें डालकर कांचके बर्तनमें डाल उसका मुंह बन्द करके १५ दिन तक रख छोड़े। दिनमें २-३ बार हिला दिया करे ऐसा करनेसे सब बस्तुयें मिलकर एक हो जावेंगी तब छानकर बोतलोंमें भर कर समयानुसार काममें लावे।

काठकी तस्वीरोंके लिये मास्टिक बार्निस

मास्टिक	॥	आधा सेर
टार्पेन्टाइन	१	सेर

बनानेकी विधीः—

पहिले टार्पेन्टाइन तथा मास्टिकको किसी बर्तनमें भरकर उसका मुंह बन्द कर देना होगा फिर एक इतने बड़े बर्तनमें पानी खूब खौलावे, कि जिस बर्तनमें मास्टिक तथा टार्पेन्टाइन वाला बर्तन आ जावे। गर्म पानीके बर्तनमें इसे रखनेसे दोनों गलकर एक जान हो जावेंगे, बस वार्निश तैय्यार है। यह वार्निस काठकी तस्वीरों पर लगाई जाती है।

सुनहरी पालिश Golden polish

जाफरान	१	ड्राम
ड्रागन्स ब्लड	॥	„
चपड़ा (लाह)	२	आउन्स
सोक्रोटाइन एलोज	२	ड्राम
स्पिरिट	१	पाइन्ट

बनानेकी क्रिया:—

जाफरान तथा ड्रागन्स ब्लडको स्पिरिटमें मिला दो। मिलाकर उस बर्तनको आगपर चढ़ाकर चपडा तथा सोक्रोटाइन एलोजको भी इसीमें मिला दो, फिर मन्द २ आंच पर गलाओ जब सब मिलकर एक हो जावे तब उतार छानकर बोतलोंमें भर लो। पीले रंग पर यह बार्निश करनेसे एक दम सुनहरा रंग दिखलाई देगा।

देवदारू काठ पर की काली बार्निश

राल	३॥	पाउन्ड
तारपीनका तेल	१	ग्यालन
सूखा काजल	१	पाउन्ड

बनानेकी क्रिया:—

राल तथा काजलको तारपीनके तेलमें मिलाकर एक बर्तनमें मुंह बन्द करके १५ दिन तक रहने दें। दिनमें २-३ बार हिला दिया करें ऐसा करनेसे सब चीजें मिलकर एक हो जावेंगी, बस काली पालिश तैय्यार है। अगर जल्दी बनाना हो तो तारपीनका तेल किसी बर्तनमें डाल उसमें उपरोक्त चीजें मिला आगपर चढ़ाकर औंटा कर बना लें।

तस्वीरकी बार्निश

Picture Barnish

गम स्याण्डारक	२	आउन्स
गम म्यास्टिक	४	"
सफेद टारपेन्टाइन	३	"
स्पिरिट टारपेन्टाइन	४	"
म्यालस मस्क्वायीमी	२	"
एलकोहल	५०	"

बनानेकी विधिः—

एलकोहलमें सब चीजें मिलाकर आगपर चढ़ाकर गला लो, जब सब चीजें गलकर एक हो जावे तब शीशीमें भर कर रखलो। जब तस्वीरपर वार्निश करनी हो एक चमचा बार्निश लेकर तस्वीर पर लगाकर सुखा लो बार्निश हो जावेगी।

बार्निस नं०—२

मधु (शहद)	१	पाइन्ट
२४ अण्डेका छिलका		
आइसिंग ग्लास	१	आउन्स
हाइड्रेट आफ पोटासियम	२०	ग्रेन
नमक	।।	आउन्स ।

बनानेकी विधिः—

सबको मिलाकर मन्दी आंचपर गलावो जब अच्छी तरह मिल जावे तब उतार तथा छानकर शीशियोंमें भर लो। जब काममें लाना

हो तो १ चमचा यह वार्निश आधा चमचा तारपीनके तेलमें मिलाकर तस्वीर पर लगाओ।

वार्निश नं०—३

सूगर आफ लेड	१	आउन्स
साफ तीसीका तेल	४	"

बनाने की विधिः—

सूगर आफ लेडको पीस तथा कपड़ छान करके तीसीके तेलमें अच्छी तरह मिलाकर उपरोक्त विधीसे काममें लाओ।

Leather Bornish

चमड़े को बार्निश।

चपड़ा	१२	आउन्स
सफेदटार्पेनाइन	५	आउन्स
स्यांडारक	२	"
सूखा काजल	१	"
स्पिरिट आफ टारपेनाइन	४	"
एलकोहल या (रेक्टी फाईडस्पिरिट)	९६	"

बनानेकी विधि—

एलकोहल या स्पिरिट जिसमें बनाना हो उसमें स्यांडारक और चपड़ा खूब महीन पोस कर डाल दें। फिर काजलको टार्पेन्टाइनमें घोलकर उसे भी स्पिरिटमें मिला दें, इन सबको एकमें मिलाकर शीशेके बड़े बर्तनमें रखकर मुंह बन्द कर दें तथा एक सप्ताह तक पड़ा रहने दें। दिनमें २-३ बार इसे हिला दिया करें ऐसा करनेसे

यह सब चीजें मिलकर एक हो जांय तब छानकर शीशियों या बोतलोंमें भर लेवें। यह चमड़ा बार्निश नं० १ तैयार हो गई।

नं० २ लाल बार्निश।

लाल चपड़ा	७	आउन्स
सेन्ड्राक	१	”
पतला लाख	१	”
घी	४॥	”
लालरंग	१	”
थस	१	”
मेथ लियेटेड स्पिरिट	१	सेर

बानाने की विधि—

लाल चपड़ा, पतला लाख, सेन्ड्राक, थस इन चारों चीजोंको महीन पीसकर स्पिरिटमें मिला देना। लालरंग भी थोड़ी स्पिरिटमें घोलकर मिला देना यह सब चीजें एक कांचके भांड़में डालकर घी को भी उसीमें मिलाकर भांड़का मुंह बन्द करके १५ दिन तक पड़ा रहने दें बीच बीचमें २-३ बार दिनमें हिला दिया करें। बस लाल बार्निश तैयार हो जावेगी, छानकर बोतलोंमें भर कर समथानुसार काममें लावें।

चांदी सोने की कलई।

कलई भी एक अत्यन्त जरूरी चीज है, कितनी ही धातुके बर्तन हैं जिसमें खटाई वगैरह की चीजें रखनेसे खराब हो जाती हैं। अगर हर एक बर्तनोंमें कलई कर दी जावे तो उनमें बनी चीजें

बिगड़नेका डर नहीं रहता। आपलोगोंकी जानकारीके लिये बहुत ही सरल तरीका कलई करने का नीचे दिया जाता है, जिसके जरिये आपलोग अपने घरमें भी सफलता पूर्वक कलई कर सकते हैं।

नोट—कलई करनेके पहिले जिनसे कलई तैय्यार की जावेगी, उन सामानोंमें १ चीना मट्टीका वर्तन तथा १ कांच की सलाई या डंडेकी आवश्यकता पड़ेगी। इसलिये यह मंगा लेना जरूरी है।

चांदीकी कलई।

नाईट्रेड आफ सिलवर	२	ड्राम
पांगा निमक	१	आउन्स
क्रिम आफ टारटार	२	„
साफ पानी	८	„

बनानेकी क्रिया।

एक चीना मट्टीके बर्तनमें चार आउन्स पानी डाल उसमें पांगा निमक मिलाकर आगपर गरम करना चाहिये, फिर एक दूसरे बर्तनमें बाकी चार आउन्स पानी कर उसमें नाइट्रेट आफ सिलवर मिलाकर आगपर गलाना, जब गल जावे तब क्रिम आफ टारटार उसमें डालकर उपरोक्त पांगा निमक वाला गरम पानी भी मिला देना। तीनों चीजोंको एक साथ मिलाकर लकड़ीसे चलाते जायं। एक साथ सब मिल जाने पर नीचे उतार लें

कलई करनेकी रीतिः—

जिन बर्तनोंमें कलई करनी हो उन्हें पहिले अच्छी तरह मट्टीसे मांज लेवें अगर उसमें फिर भी जंग या मुरचा लगा रहे तो गंधकके तेजाबसे साफ कर लें। साफ करनेके बाद जो पालिश तैय्यार की

गई है चीना मट्टीकी प्यालीमें अन्दाजसे थोड़ी डालकर उसमें कपड़े की पोटली बना भिगोकर बर्तनमें सब जगह अच्छी तरह घस देवें। चारों तरफ घसकर रख दें थोड़ी देर बाद दूसरे कपड़ेसे पोंछकर रखते जावें कलई हो जावेगी।

नोट—यह कलई वहां तैय्यार करनी चाहिये जहां अधिक प्रकाश न हो। और चमड़ेमें भी नहीं लगनी चाहिये, अगर चमड़ेमें यह पालिश लग जायगी तो वहां काला दाग पड़ जावेगा।

सोने की कलई

गोल्ड क्लोराइड	२	ड्राम
बाई कार्बोनेट आफ पोटाश	१०	आउन्स
साफ पानी	४०	,,

बनानेकी विधिः—

चीना मट्टीके बर्तनमें पानी डालकर उसमें उपरोक्त सब चीजें मिलाकर कांचकी सलाईसे चला देवें। फिर इन्हें आंचपर रखकर मन्द २ पकावें जब पककर पानी जल जावे और मिश्रित वस्तु गाढ़ी होने लगे तब उसे नीचे उतार लें। ठंडा होनेके बाद इसे व्यौहारमें लाना चाहिये, व्यौहारमें लानेकी क्रिया चांदीकी कलईके ही समान है।

दांत मंजन Tooth Powder

यह भी मनुष्यके जीवनकी बड़ी ही उपयोगी चीज है। अगर कीटाणु-नाशक दवाइयोंसे युक्त मंजन न किये जावें या हमारी पुरानी प्रणालीके अनुसार दतुअनसे रोजाना साफ न किये जावें तो दांतोंके

जरिये ही पायरिया तथा अनेकानेक रोग हो जाते हैं। जिनसे मनुष्यका जीवन तथा सौन्दर्य दोनों ही नष्ट होता है, इसलिये कुछ अच्छे चुने हुये देशी तथा परीक्षित नुसखे दांतमंजनोंके दिये जाते हैं। अगर इससे जनताका कुछ भी उपकार हुआ तो मैं अपने परिश्रमको सफल समझूंगा।

आयुर्वेदिक दांतमंजन।

काली मिरच	१ तोला	नीलाथोथा	आधा तोला
पीपल	१ ,,	हरदी	१ ,,
बायवडिंग	१ ,,	माजूफल	१ ,,
सोंठ	१ ,,	पाचों नमक	१ छटांक

वनाने की विधि—

इन आठों चीजोंको उपरोक्त नापकी मंगाकर कुटवा कर कपड छान करलें। खूब महीन एक दम मैदे सरीखी होनेपर इन्हें शीशी या बोतलमें भर लें और समय पर काममें लावें। यह मंजन दांतोंको सफा तथा मजबूत बनाता है तथा हिलते दांतोंको भी जमा देता है।

दांत मंजन नं० २

मौलश्री की सूखी छाल	आधा पाव	वजदन्ती	२ तोले
अकरकरा	२ तोला	फिटकरी फूली हुई	२ तोले
कपूर	१ ,,		

वनानेकी विधि—

इन्हें मंगवा कुटवा पिसाकर कपड़छान करवा ले तब समय पर काममें लावे। यह सड़े हुए दातों को ठीक करता है तथा कीड़ोंको मार पायरियासे दांतोंकी रक्षा करनेमें अद्वितीय है।

गई है चीना मट्टीकी प्यालीमें अन्दाजसे थोड़ी डालकर उसमें कपड़े की पोटली बना भिगोकर बर्तनमें सब जगह अच्छी तरह घस देवें। चारों तरफ घसकर रख दें थोड़ी देर बाद दूसरे कपड़े से पोंछकर रखते जावें कलई हो जावेगी।

नोट—यह कलई वहां तैय्यार करनी चाहिये जहां अधिक प्रकाश न हो। और चमड़े में भी नहीं लगनी चाहिये, अगर चमड़े में यह पालिश लग जायगी तो वहां काला दाग पड़ जावेगा।

सोने की कलई

गोल्ड क्लोराइड	२	ड्राम
बाई कार्बोनेट आफ पोटाश	१०	आउन्स
साफ पानी	४०	,,

बनानेकी विधिः—

चीना मट्टीके बर्तनमें पानी डालकर उसमें उपरोक्त सब चीजें मिलाकर कांचकी सलाईसे चला देवें। फिर इन्हें आंचपर रखकर मन्द २ पकावें जब पककर पानी जल जावे और मिश्रित वस्तु गाढ़ी होने लगे तब उसे नीचे उतार लें। ठंडा होनेके बाद इसे व्यौहारमें लाना चाहिये, व्यौहारमें लानेकी क्रिया चांदीकी कलईके ही समान है।

दांत मंजन Tooth Powder

यह भी मनुष्यके जीवनकी बड़ी ही उपयोगी चीज है। अगर कीटाणु-नाशक दवाइयोंसे युक्त मंजन न किये जावें या हमारी पुरानी प्रणालीके अनुसार दतुअनसे रोजाना साफ न किये जावें तो दांतोंके

अमीरी दांतमंजन नं० ३

स्याह मिर्चा	२	तोला	धनियां	२	तोला
सफ़ेद जीरा	२	„	मस्तगी	२	„
नागरमोथा	१॥	„	सेंधा नमक	२	„
सेलखडी	२	„	सोंठ	२	„

बनानेकी विधि—

उपरोक्त आठों चीजोंको कूट पीसकर मोटे कपड़ेसे छानकर उपयोगमें लावें। मगर धनियां जीरा, सोंठ, सेलखड़ी इन्हें आगपर भूनकर ही कूटे पीसें नहीं तो यह खड़ी रह जाती हैं। सरलतासे कुटती नहीं। इसके प्रयोगसे दांत बहुत सुन्दर तथा मजबूत हो जाते हैं।

विलायती दांत मंजन।

फूलखड़ी	२०	आउन्स	मेग्नेसियाकार्ब	१०	आउन्स
पीपरकेन्टका तेल	१	ड्राम	कार्बोनेट आफ सोड़ा	२	आउन्स
हिकोह्वाइट रोज	१	ड्राम			

बनाने की विधि—

फूलखड़ी मेगनेसिया, और कार्बोनेट आफ सोडे को खूब बारीक पीस कपड़छान करके रख लो, फिर उसमें हिकोह्वाइट रोज़ तथा पीपरमेन्टका तेल डाल अच्छी तरह मिलाकर डिब्बे या शीशियोंमें भर लो तब काममें लाओ।

पिंक टूथ पाउडर

कटलफिस बोन पाउडर	॥	पाउन्ड
अरिस रूट पाउडर	॥	”
सिनकोना पाउडर	२	आउन्स
चाक खड़िया	॥	पाउन्ड

बनाने की क्रियाः—

इन्हें एकमें मिलाकर बोतलों या शीशियोंमें भरकर रख लो।

कार्बोलिक दांत मंजन

Carbolic tooth powder

सफेद खली	१	पाउन्ड
मैग्नेसिया कार्ब	१॥	”
कार्बोनेट सोडा	५	आउन्स
कार्बोलिक एसिड	१	ड्राम
पीपरमेन्टका तेल	॥	”
ओटो रोज	१	”

तैय्यार करने की विधिः—

सफेद खली, कार्बोनेट सोडा मैग्नेसिया कार्बको बारीक पीसकर उसमें कार्बोलिक एसिड मिलाकर एक दिन तक पड़े रहने दो। दूसरे दिन, पीपरमेन्टका तेल, ओटो रोज मिलाकर मोटे कपड़ेसे छानकर व्यवहारमें लाओ।

गुलाबी दांत मंजन Rose tooth powder

मैग्नेसिया कार्ब	१	सेर
बंसलोचन	३	तोले
कार्बोनेट सोडा	७	आउन्स
पीपरमेन्टका तेल	१०	ड्राम
गुलाबका इत्र	॥	तोला
गुलावी रङ्ग	३	ग्रेन

बनानेकी क्रियाः—

मैग्नेसिया, बंसलोचन, कार्बोनेट आफ सोडा, तीनोंको खूब बारीक पीस लेना, रङ्गको जारासे पानीमें घोलकर इसमें मिला देना चारोंको मिलाकर २४ घण्टे तक सूखने देना फिर उसमें पीपरमेन्टका तेल, इत्र गुलाब दोनोंको अच्छी तरह हाथसे मसलकर मिलाकर मोटे कपड़ेसे छानकर व्यवहारमें लाना।

गीला दांत मंजन Toota paste

कटलफिश बोन पाउडर	॥	पाउन्ड
आरिस रूट पाउडर	॥	„
चाक खड़िया (पीसी छानी हुई)	॥	„
सिनथोना पाउडर	२	आउन्स
आयल आफ क्लोव्ज (लौंग)	६०	बूँद
आयल आफ सिनेमन	१५	बून्द
आयल आफ रोज	६०	बून्द

आयल आफ़ लेमन	६० बून्द
कपूर	३ आउन्स
सहद	१ पाव

बनानेकी क्रिया—

उपरोक्त चीजें कूट पीस और सब एकमें मिला मोटे कपड़ेसे छान कर शहदमें मिलाइये। (शहद इतनी होनी चाहिये कि जिसमें वह चीजें गाढ़ी होकर अच्छे रूपमें मिल जावें) शहद अगर कम पड़े तो काम चलानेके लिये और मिलालें बस यह टूथ पेस्ट तैय्यार हो जावेगा। अब इसे चाहे निज प्रयोगमें लावें या इसे बेंचें, इस टुथ पेस्टसे दांत मोतीके समान चमकदार और निरोग हो जावेंगे।

TOOTH PASTE No. 2

चिकनी सुपारी (जलाकर चूर करके)	२ ड्राम
खड़िया पीसो छानी हुई	२ आउन्स
कोचनील	॥ ड्राम
कपूर	॥ „
क्लोमस (लौंग) आयल	१ ड्राम
शहद (आवश्यकता नुसार)	

बनानेकी विधि—

टुथपेस्ट नं० १ की ही विधिसे इसे भी बनाना होगा।

Sented powder सुगन्धित पाउडर।

यह पाउडर स्त्रियों तथा बच्चोंके व्यवहारमें विशेषतः आता है। इसके लगानेसे गर्मके कारण जो छोटी छोटी फुन्सियें मुंहपर हो

जाती हैं। वह छुट जाती हैं। इसके प्रयोगसे फुन्सियां मुहांसे दूर होकर मुखमण्डल कान्तियुक्त हो जाता है। इसके बनानेकी रीति नीचे लिखी जाती है।

Pearl powder सुगन्धित पाउडर।

चाक मट्टी (पीसी तथा छानी हुई)	१	पाउन्ड
जिंक आक्साइड	२	आउन्स
बिस्मिथ आक्साइड	२	„

बनानेकी विधि—

इन सबको एकमें मिलाकर डिब्बोंमें भरकर रख लो फिर काम के वक्त रूईके फाहोंसे इसे गालोंपर लगाओ। अगर बेचना हो तो सुन्दर डिब्बे छपवा अपना ट्रेड मर्का देकर बेंच सकते हैं।

सुगन्धित पाउडर नं० २

साबूदाना		आधासेर
बोरिक एसिड	४	आउन्स
फूल खड़ी	४	„
बांसकपूर	३	„
गुलाबका इत्र	॥	तोला

बनानेकी विधि—

पहिले बांसकपूर, साबूदाना, फूलखड़ी तीनों चीज को बारीक पीसकर कपड़छान कर लेना चाहिये फिर इसमें गुलाबका इत्र तथा बोरिक एसिडको हाथसे अच्छी तरह उपरोक्त तीनों चीजोंके साथ मिला देना चाहिये।

Smeling Bottel Ameonia

सिर दर्दकी अचूक दवा।

आयेल लेवेन्डर	१	ड्राम
„ वर्गमोट	१	„
„ आरेंज	८	बूंद
„ सिनेमन	४	बून्द
„ निरोली	२	„
एमोनियाकार्ब	२	आउन्स

बनाने की विधि—

एमोनिया कार्बके बहुत छोटे २ टुकड़े करके विलायती शीशी खूब कडे शीशेके ढक्कन वाली में डाल बाकी चीजें भी उसीमें मिला ढक्कन लगा रख दें २४ घंटे में यह सब चीजें एकमें मिलकर दवा तैयार हो जावेगी। इसके सूंघते ही सिर दर्द आराम होता है।

जवाहरात प्रकरण।

इस प्रकरणमें आप लोगोंकी जानकारीके लिये नकली हीरा पन्ना, चुनो, पुखराज, लाल यह सब बनानेको रासायनिक क्रिया संग्रह की गई है। मेरे संग्रहसे आप लोग अगर लाभ उठा सके तो मैं अपना परिश्रम सार्थक समझूंगा।

पन्ना बनाना।

स्ट्रास ४६०८ हिस्सा, आक्साइड आफ कैमियम दो हिस्सा मोन आक्साइड आफ कापर ४२ हिस्सा, इन तीनों चीजोंको मिलाकर

आगपर गर्म करो। २४ घंटे तक कमसे कम जोस दो. बढ़िया चमकदार पन्ना तैय्यार हो जावेगा।

चुन्नी बनाना।

स्ट्रास ५०० हिस्सा, आक्साइड आफ मैंगनीस २ हिस्सा आकसाइड आफ कोबाल्ट दो हिस्सा, इन सब चीजोंको मिलाकर आगपर २ दिन २ रात जोस दो। फिर ठंडा कर लो, बहुत अच्छी चुन्नी तय्यार हो जायगी।

हीरा बनाना।

शुद्ध सलेका ८ आउन्स, कार्बोनेट आफ पोटाश २४ आउन्स इन दोनों को मिलाकर आग पर गर्म करो पश्चात उसे उतार कर नाइट्रिक एसिड (डाइल्यूटेड) में डाल दो जब खदखदाना बन्द हो जावे और ढंडा हो जावे तो पानी के द्वारा एसिड निकालकर साफ कर लो, फ़िर सुखाकर उसमें कार्बोनेट आफ लेड १२ आउन्स मिला दो। अब इसमें ३॥ आउन्स बोटेक्सको मिलाकर बढ़िया पत्थरके खरलमें खूब घुटवाओ, जब घुटते २ लेई सी हो जाय तब पानी डालकर आगपर चढ़ा दो तथा हिलाते रहो। पानी जब जलने लगे तब उतारकर सबको ठंडाकर साफ पानीमें धोकर फिर आगपर चढ़ा दो। ऐसे ही ६ बार करनेके बाद सातवीं बार थोड़ासा सोरा और मिला कर जब खुश्क होने लगे उतारकर ठण्डा हो जाने दो, ऐसा करनेसे बहुत ही चमकदार हीरा तय्यार हो जावेगा।

लाल बनाना

स्ट्रास १४४० वां हिस्सा, आकसाइड आफ मैंगनीज ३६ भाग दोनों चीजोंको मिलाकर गर्म करो। जब खूब लाल हो जावे तब उतार लो, लाल बन जावेगा।

पुखराज बनाना

स्ट्रास १०५० हिस्सा ग्लास आफ एन्टीमनी ४४ हिस्सा परेल आफ कासेस १ हिस्सा। इन सब चीजोंको मिलाकर आगपर खूब गरम करो, खूब बढ़िया चमकदार नकली पुखराज तय्यार हो जावेगा।

मुंह देखनेका शीशा तैयार करना।

यह भी एक अच्छे फायदेका व्यवसाय है; इसमें थोड़ी हाथकी सफाई तथा ध्यान देनेकी आवश्यकता पड़ेगी। इसमें आपको सादे शीशे मँगाकर या पुराने शीशोंको खरीद कर कलई करनी होगी। यह कलई कैसे और किन २ सामानोंकी मददसे करेंगे, आपको वतलाते हैं। साथ ही यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि यह वैज्ञानिक क्रिया है, इसमें नाप जोख तथा सावधानी की ही जरूरत विशेष है। अगर आप हमारी लिखी प्रणाली पर मनोयोग देंगे तो निश्चय ही अपने कार्य्यमें सफल होंगे।

कलईदार शीशा बनानेके पहिले इन सामानोंको जुटा एक ताम चीनीका बड़ासा बर्तन जिसमें २-३ सेर पानी आ सके लेना जरूरी है। (२) दो शीशेके डाक्टरी गिलास दो नापके लेने होंगे। एकतो

जिस पर केवल ड्रामके निशान खूब साफ हों, दूसरे जिसमें आउन्स तथा ड्राम दोनोंके निशान खूब स्पष्ट बने हों। (३) एक लोहेकी अंगीठी (४) एक ताम चीनी या शीशेकी तेल डालने या छाननेकी कुप्पी या (छुच्छी) (५) नीले रंगकी दो बोतलें जिसमें आधा सेर पानी आ जाय (६) फिल्टर पेपर (यह दवाईयें छाननेके काममें आता है (७) एक पीतलका छोटा कांटा तथा पीतलके दुअन्नी भर या चवन्नी भर तक नापने तौलनेवाले नये बटखरे।

बस इतना सामान सबसे पहिले जरूर जुटाकर रख लेना चाहिये अब नीचे वह मसाला लिखते हैं जिससे कलई होगी।

कलई करनेका मसालाः—

नाइट्रिक आफ सिलवर क्रिस्टल Nitric of silver crystel	दो आने भर
सोडा टाटरेटा Soda tatreta	चार आने भर
लिक्कर एमोनिया फोर्ड Liquor amonia ford	५-६ बूंद
वार ब्रौक Barbreck टीन क्लोराइड Tin cloride पेटरोल Petrol	यह शीशा साफ करनेके काम आता है

शीशेपर पालिश करनाः—

अगर पुराना शीशा हो तो वारब्रेकसे साफ कर लें, अगर नया हो तो टीन आक्लोराइडसे सफा कर लें। अगर साफ न किया जायेगा तो कलई ठीक न होगी पैसा लगा लगाया व्यर्थ ही जावेगा

जब साफ हो जावे तो एक मेज या सन्दूक पर बराबरमें वह शीशा रख दे फिर उसका मसाला तैय्यार करके रख ले तब कलईका काम शुरू करे।

शीशेकी पालिशका सोल्यूशन

पहिले १२ आउन्स पानी डाक्टरी गिलाससे नापकर तामचीनी वाले बर्तनमें डाले। पानी डालनेके पहिले फिल्टर पेपरसे छान लेना चाहिये, फिर और बारह आउन्स पानी नापकर नीले रंगकी बोतलमें डाल दो। जब पानी गरम होने लगे और भाफ निकलने लगे तब कांटेसे नापकर दो आने भर नाइट्रिक आफ सिलवर तामचीनी वाले बर्तनके खौलते पानीमें डाल दो और किसी शीशेकी सलाईसे वहां तक चलाते जाओ जब तक कि दोनों चीज मिलकर एक जान न हो जावे फिर उसमें चार आने भर सोडा टार्टरेटा डालकर १ मिनिट बाद आग परसे उतार लो, और ठंडा होने दो।

फिर दो आनेभर नाइट्रिक आफ सिलवर तथा ५-६ बूंद फिल्टर वाटर लेकर शीशे वाले गिलासमें डाल दो ऊपरसे लिकर एमोनिया फोर्ड जो कि शीशीमें अच्छी तरह बन्द रहती है। उस शीशीके लिये एक कार्ककी डाट खूब सख्त होनी चाहिये जिसमें वायु न प्रवेश कर सके, उस कार्ककी डाटमें ऐसा एक छेद करना चाहिये जिसमें शीशेकी नली इतने पतले छेदकी लगानी चाहिये जिसमें से १-१ बूंदसे ज्यादा दवा न निकले। जिस गिलासमें नाइट्रिक आफ सिलवर तथा पानीकी ५-६ बूंदे है उसमें लिकर एमोनिया फोर्ड वो

शीशे वाली नली जो कि उसकी शीशीमें लगी है उससे लगातार तबतक बूंद २ करके गिराते जाओ जब तक कि वह काला होकर सफेद न हो जावे, बीच २ में इसे हिलाते जाना होगा। इसके बद ऊपर जो नीले रंगकी बोतलमें १२ आउन्स फिल्टर वाटर रक्खा है उसीमें यह मिक्शचर भी मिला दो और एक मजबूत काकसे उस बोतलका मुंह बन्द कर दो। ऊपर बताये ताम चीनी वाला बर्तन जो ठंडा होनेको रक्खा गया था उसमेंकी सब चीजें दूसरी नीले रंगकी बोतल कुप्पी लगाकर उसमें ऊपरसे कुप्पीपर फिल्टर वाटर बांधकर उस दवाको थोड़ा २ डालते जाओ जिससे कि छनता हुआ सब बोतलमें चला जावे। आप शीशेपर कलई करनेका यही मसाला जिसे सेल्युसन कहते हैं तैय्यार हो गया।

अब साफ किये हुये शीशेके चारों तरफ मोमकी दीवार बनाकर फिर साफ कर लो; फ़िर एक बरोबर न ऊंची न नीची ऐसी मेजपर यह शीशा रखकर इस पर पानी डालो इससे तुमको मालूम हो जावेगा कि शीशा किधर टेढ़ा है और कहांसे पानी मोमको पार करके बह रहा है। जब तुमको यह मालूम हो जावे तो शीशेके नीचे जहां नीचा हो वहां बोर्ड (दफ्ती) या कागज रखकर उसको सतह (Label) ठीक कर लो, और जहांसे पानी बहता हो वहाँ मोम लगा दो। फिर एक बोतलसे मेजरमेट ग्लास उतना ही सेल्युसन निकालो जितना कि दूसरे बोतलसे भी उतना ही निकालने पर शीशे में कलई करनेके लिये काफी हो जाय। तब दोनों बोतलोंमेंसे निकालकर गिलासमें कर लो तब गिलासको अच्छी तरह हिलाकर शीशेके

ऊपर बीचमें एक धारसे छोड़ो, जब छोड़ चुको और वह समस्त शीशेमें लग जाय तब उसको किसी चीजसे ढक दो जिसमें धूल गर्दसे बचा रहे। २४ घण्टेके बाद इसको खोलकर शीशेको धीरे २ उठाओ ताकि उसका पानी जो कि कलई जम जानेके बाद ऊपर तैरता रहता है गिर जावे, तब मोमको भी अलग कर दो। फिर उसे अन्धेरे स्थानमें आध घण्टे तक सूखने दो। अब उस बार्निशको पक्की करनेके लिये बार्निश और सेन्दुर मिलाकर रख लो जब देखो कि शीशेकी कलई सूख गई है तो बार्निशमें मिले सेन्दुरको कलई वाले शीशेके ऊपरसे डालकर शीशेको इस भांति घुमाओ कि बार्निश शीशेके चारों ओर भली भांति लग जावे। इस बातका ध्यान रखना कि किसी ब्रुस या कपड़े या हाथसे बार्निश कभी न लगाना नहीं तो शीशेमें रेशे २ या धारियें पड़कर शीशेकी कलई बनानेमें जो लागत लगी है वह भी नष्ट हो जावेगी। कलई ५-६ घण्टेमें सूख जावेगी, यह सब कार्य साफ तथा बन्द स्थानमें होने चाहिये जिससे कि धूलके कण वगैरह उसपर न पड़ सकें। अगर आप उपरोक्त लिखेनुसार कार्रवाई पर अमल करेंगे तो बहुत बढ़िया विलायती कलई हो जावेगी। आप फ्रेमिंग करके उसे बेंच भी सकते हैं।

शीशेके ऊपर बेल बूटे निकालना या लिखना

जो महाशय ड्राइङ्ग जानते हों उनका लेख सुलेख तथा फूल-पत्तियें या बेल बूटे बना सकते हों वही इस काममें हाथ डालें।

शीशेको भली प्रकार बारब्रेक या टीन क्लोराइडसे साफ करनेके

बाद थोड़ी मोम पिघलाकर उसके ऊपर पतली २ पोत देनी चाहिये। फिर जिस प्रकारकी फूल पत्तियां या नाम लिखना हो मोमपर लिखकर किसी नोकदार तिरछी कटी हुई चीज (नहन्नी आदि) से जो नाम या बेल बूटा हो जैसा वह बना या लिखा हो उतनेपर मोम लगी रहने दे बाकी अगल बगल या फालतू स्थानकी मोम हटा दे फिर अक्षरों पर या बेल-बूटों पर थोड़ी सी फ्लोरिक एसिड लगा दें दस मिनिट बाद पानीसे धो दें। फिर मोमको भी साफ करके पूरे शीशेको सोडे से साफ कर लें, लिखी हुई बात या बेल-बूटे साफ २ दिखलाई देंगे।

शीशे फिट करनेमें काम आने वाली पोटीन।

फ्रेमोंमें कील लग जानेके कारण या जरा शीशेकी कोर जो काटनेमें छोटी रह जाती है, उसे बन्द करनेके काममें पोटीन आती है उसको बनानेकी बिधि नीचे लिखते हैं।

खड़िया मट्टी बारीक पीसकर कपड़ेमें छान लो, फिर उसे अलसीके तेल या बार्निशमें मिलाकर खूब कड़ा २ सानकर एकजान कर लो। यह सादी बार्निश तैय्यार हुई; अगर किसी रंगीन लकड़ीके या खुरदरे स्थान पर भरनेके लिये पोटीन बनानी हो तो उसी लकड़ीके रंगका रंग लेकर पहिले खड़िया मट्टीमें मिला लो और फिर सानकर रंगीन पोटीन बना लो।

* * *

कभी फेल न होने वाली कुछ शर्तिया पेटेन्ट दवायें

आमलासार गन्धक	१	पाव
नैनुआ गन्धक	॥	„
सुहागेका सत (जौहर सुहागा)	१	„
राल सफेद	१	छटांक
तूतिया भुना हुआ	१।	तोला
बौरिक एसिड	१	पाव
भेसलीन	(जितनेमें उपरोक्त चीजें मिलाई जा सकें)	

बनानेकी विधिः—

उपरोक्त सब सामानको खूब बारीक पीसकर छानकर भेसलीन खूब फेंटकर एक जान करके डिब्बियोंमें भरकर बेंच सकते हैं।

खाज खुजली की दवा

एक पाव गायका असली घी (यदि गायका न मिल सके तो भैंसका ही असली घी काममें ला सकते हैं) एक छटांक नैनुआ गंधक बारीक पीसलें फिर एक बड़ा सा मट्टी या पीतलका दीया (दीपक) जिसमें उपरोक्त दोनों चीजें आ जावें मंगालें या घनवाले उस दियेमें दोनों चीजें छोड़कर रूई की मोटी सी बत्ती घीमें भिगोकर उसमें रखकर उसे जला दें। चिराग को जरा टेढ़ा करके रक्खें, गन्धक गलकर घी में मिलेगा और बत्ती द्वारा टपक कर काला तेल नीचे गिरने लगेगा तब चिरागको किसी ऊंचे स्थान पर रखकर नीचे कोई चौड़े मुंह की शीशी या कोई शीशेका

बर्तन रख दें जिसमें औषधि टपक टपककर एकत्र हो। औषधि को जल्दी टपकानेके लिये धीरे धीरे गंधक को किसी लकड़ी से दीयेकी लपटके पास खिसकाते रहना चाहिये। जब सब गंधक जल कर सब घी टपक जावे तो छान कर एक एक छटांक की शीशी बनालें, जिसमें सुन्दर लेबिल बक्स वगैरह बनवाकर १) ।।।) की आप बखूबी बेंच सकते हैं। चाहे जैसी भी खाज खुजली होगी दो तीन दिनमें समूल नष्ट हो जावेगी अगर पकने फूटने वाली खुजली होगी तो एक सप्ताह लगेगा। यह शर्तिया आजमूदा चीज है।

खुजली की दवा नं०—२

गाय या भैंसके एक पाव घी को लेकर १०८ पानी से कांसेकी थालीमें डालकर १०८ बार खूब फेंटिये। फेंट लेनेके बाद पानी निकाल कर एक दवा जो कि कलकत्तेके “बटो क्रिष्टोपाल, नं० ६, बनफील्डस लैन” से “ Amzin ” आमजिन नामक =) तथा ।) की डिबियामें सूखे पाउडरके रूपमें आवेगी उसकी एक डिबिया १ पाव धोये घीमें अच्छी तरह फेंट कर मिला दें। बस यह दवा तैयार हो गई अब इसे डिब्बियोंमें बन्दकर चला सकते हैं, यह कभी भी फेल नहीं हो सकती। कैसी भी खाज या जलन होती हो लगाने ही ठंडक पड़ जावेगी।

सिर दर्द की अचूक दवा Pain Balm

मेन्थल	२ ड्राम
सिनेमल आयल	४० ड्राप (बून्द)

क्लोफस (लौंग) आयल	४० ड्राप (बून्द)
अलकोहल	२ आउन्स

सबको एकमें मिला तथा फेंटकर शीशियोंमें पैककर लेविल लगाकर चलावें।

अनिद्रा नाशक दवा।

पर्ल दि हाइड	३ ड्राम
नारंगी का सर्बत	३ आउन्स
साफ पानी	३ आउन्स

उपरोक्त तीनों चीजें मिलाकर चार खुराक बनेगी। इसकी एक खुराक सोते वक्त पीनेसे आराम पूर्वक नींद आवेगी।

जूड़ी बुखार की दवा।

लाइकर स्टिकनिया	१८ अट्ठारह बून्द
मैगनेसिया सल्फ	२। सवा दो आउन्स
टिंचर कोयसिया	२। ” ”
नौसादार	२। ड्राम
फेरी सल्फ (हिराफस)	३६ छतीस ग्रेन
शुद्ध कार्वोलिक एसिड	९ नौ बून्द
स्वच्छ जल	१६ आउन्स
एसिड सल्फ डिल	१॥ डेढ़ ड्राम
कुनेन सल्फ	३६ ग्रेन

बनाने की विधि—

डाक्टरी गिलासमें कुनैन रक्खें फिर उपरोक्त पानीमें से थोड़ा पानी छोड़कर हिलावें, फिर एसिड डालकर हिलावें जब कुनैन गल गलकर पानीके रूपमें हो जावे तब इस मिक्चर को १ साफ़ बोतलमें डाल दें। फिर फेरीसल्फ को कूटकर खलमें बराबरका पानी देकर घोंटे और बादमें उसी कुनैन मिक्सचरमें इसे भी छोड़ दें। फिर नौसादर को भी जलमें घोल कर उसो बोतलमें छोड़ दें। इसके बाद किसो दूसरे बर्तनमें मैग्नेसिया सल्फको जलमें घोलकर महीन कपड़ेसे छान उसी बोतलमें मिला दें। फिर टिंचर कोयसिया और लाइकर स्टिकनिया भी छोड़कर अन्तमें कार्बोलिक एसिड मिलाकर बोतल को खूब हिला दें। फिर बाकीका भी जल जो बचा हो इसमें मिला कर बोतल खूब हिला दें। और कार्क लगा कर बोतल बन्द करके रखदें। अगर बेंचना हो तो लेबिल, बाक्स वगैरह बनवाकर आकर्षक नाम रखकर बेंच सकते हैं।

प्लीहाकी औषधि।

आयोडिन आफ पोटाश	८ ग्रेन
आयोडिन	८ ग्रेन
प्रूफ स्पिरिट	१५ बून्द
चर्बी	॥ आधा आउन्स

बनाने की विधि—

उपरोक्त तीनों चीजोंको चर्बीमें मिलाकर मलहम बनालें फिर लीवर पर मालिश करें शीघ्र आराम होगा।

अमृत धारा ।

यह पेटेन्ट औषधि पेट सम्बन्धी समस्त रोगोंके लिये रामबाण है। यह अपना चमत्कार हैजेमें, पेचिसमें. जी मिचलाने तथा अजीर्णमें सिर दर्दमें, सबमें काम आनेवाली तथा तत्काल फायदा दिखलाने वाली है। यह बीसों नामसे बिक रही है। जैसे अमृतधारा, जीवन धारा, शिवधारा, नागरधारा, वगैरह २ नाम भेदसे सैकड़ों आदमियोंने इसे बनाकर लाखों रुपये कमाये हैं, यह घरमें भी बना कर रखनेके लायक है। अगर बेचना चाहें तो आकर्षक नाम तथा आकर्षक विज्ञापन, भड़कदार लेविल लगाकर खूब फायदा भी उठा सकते हैं। इसके बनाने की क्रिया नीचे देते हैं।

अमृत धारा।

देशी कपूर	१	ताला
अजवाइनका सत	१	”
पापरमेंट	१	”

बनाने की क्रिया तथा सेवन विधि।

उपरोक्त तीनों चीजें मिलाकर शीशीमें बन्द कर मजबूत कार्क लगाकर रख लो। जब आवश्यकता हो तो २-३ बून्दसे लेकर ७-८ बून्द १ छटाक जलमें डालकर व्यवहार करें तत्काल फायदा होगा।

Camphor अर्क कपूर।

यह हैजेकी प्रसिद्ध आरम्भिक दवा है। हैजा शुरू होते ही अगर इसे ३-४ बून्द १५-१६ मिनिट बाद पानीमें डालकर दिया जावे तो तत्काल फायदा दिखलाकर हैजेके आक्रमण को रोकती है।

Rectified spirit रेक्टीफाईड सिपरिट	६ तोला
Pure camphor असली कपूर	१ तोला

दोनोंको मिलाकर शीशीमें कार्क बन्द करके रखें ५—६ घंटेमें अर्क कपूर बन जावेगा।

Sarsa parila सार्सा प्यारिला ।

पोटास आयोडिन	३० ग्रेन
पोटास क्लोराइड	२७।। ग्रेन
लाइकर आरसेनिक	१५ बून्द
स्पिरिट क्लोरोफार्म	२। सवा दो ड्राम
डिक्सन सालरको	४।। आउन्स

बनाने तथा व्यवहार करने की विधि—

उपरोक्त औषधियोंको एकमें मिलाकर मिक्शचर बनाकर शीशियोंमें भर लेबिल लगा तथा बाक्स बनवाकर बेचें। इसकी खुराक चार ४ ड्राम की होनी चहिये।

सुजाक की हुक्मी दवा Gono killer

असली चन्दनका तेल	८ बूंद
असली विरोजेका तेल	८ „
दालचीनीका तेल	८ „

सेवन विधिः—

उपरोक्त तीनों दवायें एक ही मात्राकी हैं, इन्ही तीनोंको ३० बूंद ६ मासे बतासेमें या चीनीमें मिलाकर खाना होगा, ऊपरसे दूधकी

लस्सी पीओ। खट्टा, मिर्च, तेल तथा स्त्री प्रसंगसे परहेज रखना होगा, ऐसा करने तथा एक सप्ताह दवा सेवन करनेसे सुजाक जड़से गायब हो जावेगा।

बालामृत या बालसुधा

काकड़ा सिंगी, नागर मोथा, अतीस, पीपली रूसकी पत्ती, रक्तचन्दन सफेद चन्दनका बुरादा इन सबको कूटकर रख ले। ८ सेर पानीमें १ सेर खाने वाला बेबुझा चूना लेकर बड़ी हड़ियामें भिगो दे, जब फूल जावे तब पानी और चूनेको साफ लकडीसे चलाकर अच्छी तरह मिला दो चलाकर २४ घण्टे तक पड़ा रहने दो फिर पानी छान तथा निथार कर निकाल लो (सावधान चूनेका अंश इसमें न आने पावे) फिर ३ पाव मिश्रीकी एकतारी चासनी बना ले। चूनेके पानीमें सब दवाइयें डालकर उबालो, जब २ सेर पानी रह जावे तब चासनीमें मिलाकर उबाल दिलवा कर छान कर उतार लो और शीशियोंमें भरके बाजारमें चलाना हो तो लेविल तथा कार्ड बोर्डके बाक्सपर सुन्दर पेंकिङ्ग देकर चलाओ, मात्रा ५ बूंदसे ६० बूंद तक, दोनो वक्त, बालककी अवस्था तथा बलाबलके अनुसार।

कामनी जीवन

अशोककी छाल, नवीन शतावरी, लोध; चौराईकी जड़, किसमिस, रसौंत, नागकेशर असली, इन सातोंकी १–१ छटांक लेकर २ सेर पानीमें पकावे, जब आधा पानी रह जावे तब ३ छटांक शहद मिलाकर फिर पकावे, जब सब पानी जलकर आधा रह जावे तब उतारकर

ठंडा करके मलकर छानले। मात्रा २ ड्रामसे ४ ड्राम तक, अशोककी छाल २ रत्तीके काढ़ेमें।

नोट—यह स्त्री रोगों पर खास करके प्रदरको बड़ोही विचित्र अमृत तुल्य औषधि है, रोगको दूरकर पुनः कमजोर शरीरमें जीवनीं-शक्ति लाती है। जो महाशय बेचनेके लिये बनाना चाहें वह ऊपर लिखे प्रमाणके अनुसार ज्यादा मात्रामें बनाकर अपना लेबिल बाक्स बनवा कर तथा बेचकर नाम तथा धन दोनों कमा सकते हैं।

इसके गुणः—

यह मीठा होनेके कारण बच्चे बड़े प्रेमसे खाते हैं, इसके खानेसे बच्चोंके बहुतसे रोग दूर हो जाते उन्हें तन्दुरुस्त मोटा ताजा बना देता है। यह दवा बच्चोंको गर्मियोंके मौसिममें ही देनी शुरू करनी चाहिये।

आश्चर्य मलहम Wonderful Balm

नारियलका तेल २० तोला, मोम ५ तोला, कपूर १ तोला अजवाइनका सत, पीपरमेन्ट दोनों १—१ तोला दालचीनीका तेल ३ मासे चोयाका तेल १॥ मासे इलायचीका तेल ६ मासे।

बनानेकी विधिः—

पहिले कपूर अजवायनका सत पीपरमेन्ट एक चौड़े मुंहकी शीशीमें रखकर धूपमें कार्क लगाकर रख दे। कुछ देरमें यह तीनों चीज गलकर एक हो जावेंगी। तब एक कटोरेमें नारियलका तेल डालकर आगपर चढ़ावे जब पिघल जावे तब मोम डाल दें जब दोनों

मिलकर एक हो जावें तब उपरोक्त शीशीमें रक्खी दवा भी इसोमें मिला दे। सब मिलकर एक हो जानेपर व्यवहारमें लाना हो तो चौड़े मुंह की शीशीमें भरकर रख दें अगर बेचना हो तो छोटी शीशियोंमें भर लेबिल लगा आकर्षक नाम रखकर बेंच सकते है ।

गुण—गर्मी या सर्दीसे होनेवाला सिर दर्द तथा चोट मोच कमर-दर्द गठियाका दर्द, इसके मालिश करने मात्रसे निसन्देह दूर हो जाता है।

* * *

चूर्ण, चटनी, बटी प्रकरण

नमक सुलेमानी

यह पेट सम्बन्धी रोगोंके लिये एक बहुत ही पुरानी तथा अत्यन्त गुणकारी दवा है। इस चूर्णको बनाकर कितने ही लोगोंने लाखों रुपया इससे कमाया है। ऐसे उपकारी तथा प्रसिद्ध चूर्णको हम अपनी पेटेन्ट दवओंके प्रकरणमें देते हैं इसके बनानेका नुसखा नीचे लिखे अनुसार है।

साँभर नमक ७ तोला, नौसादर १० मासा, काला नमक १० मासा, अजमोद ३ मासे सेंधा नमक ६ मासे, काली मिर्च २ मासे बाल छड़ १ मासा सफेद मिर्च २ मासा, भुनी हींग १ मासा जवाखार ३ मासे, दालचीनी आधा मासा सोंठ आधा मासा मुलहठी आधा मासा जीरा आधा मासा, शीतल चीनी आधा मासा। बेशी बनाना हो तो इसी अनुसार सब चीजें बढ़ा लें।

सबको कूट पीस कपड़छान कर शीशियोंमें भर लेवें, मात्रा १ मासे से ३ मासे तक बलाबलके अनुसार।

गुण—कब्जीको दूरकर भूख बढ़ाने तथा पाचन शक्ति लानेमें अद्वितीय है, साथही इसके सेवनसे नया खून बनकर बल-वृद्धि भी होती है।

क्षुधा सागर चूर्ण

सोठ, काली मिर्च, पीपली, त्रिफला, पांचो नमक, भुना सुहागा, जवाखार सज्जी शुद्ध पारे तथा शुद्ध गन्धककी कज्जली शुद्ध सिंगीमोहरा इन सबोंको कूट पीस कपड़छान कर अदरकके रसमें ७ बार

भिगोवे तथा सुखावे। बस यही क्षुधासागर चूर्ण है। मात्रा २ रत्ती लौंगके काढ़े के साथ कैसा भी अजीर्ण हो नष्ट होकर भूख दुगनी हो जायगी।

हिंगाष्टक चूर्ण

सोंठ, काली मिर्च, पीपल, अजमोदा, सेंधा नमक, श्वेत जीरा, काला जीरा और सेंकी हुई हींग यह सब चीजें १—१ तोला लेकर कूट कपड़छान कर ८ मासे चूर्ण को घी मिली हुई खिचड़ीके प्रथम ग्रासके साथ नित्य खावे, यह भूखको अत्यन्त बढ़ाता तथा वायुगोला और प्लीहाको भी नष्ट करता है।

अग्निमुखी चूर्ण

जवाखार सज्जी,चित्रक, पाचों नमक,इलायची, पत्रज भारंगी, पोहकरमूल, निसोत, नागरमोथा, इन्द्रजव, डांसरफल, भुनी हुई हींग, अमलवेतन जीरा, आंवला, हर्रेकी छाल, पीपली,अजवायन, तिल्लीकाखार, पलासकाखार, इन सबको बराबर लेकर कूट पीस कपड़छानकर विजोरे नीबूके रसमें आठबार भिगो २ कर सुखा २ कर सिद्ध करे। मात्रा ८ मासे दोनों वक्त। यह गोला उदर रोग अजीर्ण के लिये बड़ा ही लाभदायक है।

लवणभास्कर चूर्ण

सांभर नमक चार पैसे भर, संचर नमक तीन पैसे भर, बायवड़िंग १६ मासे, सेंधा नमक २० मासे, धनियां पीपली पीपरा मूल पत्रज, काला जीरा सफेदजीरा, कालीमिर्च, नागकेशर, चव्य अमल-

वेत, सोंठ, यह सब २०—२० मासे अनारदाना ४० मासे इलायची ४ मासे तज ४ मासे। इनका चूर्ण बनाकर गायके मट्ठेकी छांछ या कांजीके साथ ४ मासे चूर्ण तित्य सेवन करनेसे अजीर्ण गोला प्लीहा उदर रोग संग्रहणी आंव विकार मन्दाग्नि वगैरह अनेक रोग दूर होते हैं।

बड़वानल चूर्ण।

४ मासे सेंधानमक, ८ मासे पीपलामूल, १२ मासे चव्य, १६ मासे चित्रक, २० मासे सोंठ, २४ मासे हर्रैकी छाल, इन सब चीजोंको कुट पीस कपड़छानकर सब दवाइओंके बराबर मिश्री चूर्ण करके मिलाकर रख लो। यह दोनों टाइम ८ मासे सेवन करनेसे अजीर्ण नष्ट कर क्षुधा को बढ़ाता है।

पाषाण भेदन चूर्ण।

बिड़नाने. संचर नोक, अजवायन, दोनों जीरे, हर्रैकीछाल. सोंठ कालीमिर्च, पीपल, चिमक, अमलवेत, अजमोदा, धनिया, डासर फल, यह सब चीजें बराबर लेकर कूट पीस कपड़छान कर ८ मासे चूर्ण दोनों टाइममें खानेसे अन्न तो क्या पत्थर भी हजम हो सकता है।

अजीर्ण कंटक चूर्ण।

४० मासे दालचीनी, ४० मासे इलायची, ६० मासे लौंग, ४० मासे भुनासुहागा, ४० मासे चिमक, २० मासे काली मिर्च ३ पैसेभर सेन्धा नमक , इन सबको कूट पीस कपड़छानकर चूर्ण बना और

फिर ६ मासे चूर्ण गरम जलके साथ दोनों वक्त सेवन करनेसे अजीर्ण नाश कर देगा ।

क्षुधावर्धक बटी ।

सोंठ २ तोला, काली मिर्च ४ तोला, पीपली ६ तोला, सेंधा-नमक ८ तोला, इन सब चीजोंको कूट पीस कपड़छान कर नीबूके रस में १० दिन तक उपरोक्त चूर्ण को खरल करें फिर एक २ रत्ती की गोली बनालें ।

अजीर्ण कंटक बटी ।

शुद्ध सिंगीमोहरा ८ मासे, भुना सोहागा ८ मासे, काली मिर्च ८ मासे, सेंधा नमक ८ मासे, इस चूर्णमें पहिले १ सेर अदरकका रस डालकर खूब घोंटो, जब सब सोख जाय तब १ सेर नीबूके रसमें घोंटो जब यह भी मिल जाय तब १ सेर दहीके पानी डालकर घोंटे, जब यह भी सूख चले और गोली बांधने लायक हो जाय तब १-१ रत्ती प्रमाणकी गोली बांध लेवे । जलके साथ १ गोली रोज खिलानेसे अजीर्ण दूर होकर खूब क्षुधा की बृद्धि होगी तथा उदर गोला, शूल, सब बिमारियां नष्ट होंगी ।

क्षुधा बर्धक कामराज चटनी ।

काबुल हरड़का बक्कल (छिलका) बहेडेका बक्कल, आमला,मुलहट्टी, सोंठ, इलायचीके दाने, बालछड़, गुलाबके फूल, यह सब १-१ तोला, लोहेका मैल ८ तोले,मिश्री ८ तोले ,मात्रा तीन मासे से ८ मासे तक

बनानेकी विधिः—

त्रिफलेको कूट छानकर घीमें तलकर निकाल ले, उपरोक्त बाकी चीजोंको भी कूट पीस कपड़छानकर, सबको उतनी शहदमें मिलावे जिसमें चटनी तैय्यार हो जावे। सब तरहके उदर रोगोंको दूरकर क्षुधा बढ़ाती है तथा स्त्री प्रसंगमें भी बल देती तथा क्रान्तिको भी बढ़ाती है।

नौरत्न चटनी

अमलतासका गूदा ६ मासे, इलायचीके बीज ६ मासे, लौंग ६ मासे, अदरकका रस ६ मासे, मुनक्का ६ मासे छुहारा ६ मासे सोंठ ६ मासे, अजवायन ६ मासे। इन आठ चीजोंको कूट पीस तथा छानकर नौवां अदरकका रस मिलाकर इसे सात भावनायें नीबूके रसकी देवें। सूखने पर मिश्री मिलावें फिर चटनी बनाने लायक शहद डालकर अच्छी तरह मिला दें, मनमोहक हाजमेदार नौरत्न चटनी तैय्यार हो जावेगी। मात्रा ३ मासेसे ५ मासे तक, भोजनके बाद सेवन करनेसे भोजनको पचाकर भूखको बढ़ाती है तथा नवीन खून भी पैदा करने वाली है।

धातु-पुष्ट दवायें

आजकल लागोंमें संयम की बड़ी ही कमी है, जिसके कारण इस देशमें कमजोर तथा हतवीर्य नर-नारी पाये जाते हैं। कोई अपनी जवानीके जोशमें, कोई अज्ञानतामें अन्धाधुन्ध रूपसे रत्न रूप वीर्यको खोकर हाथ मल २ कर पछताते हैं। पर "फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत" उन्हीं शक्ति खोये हुये

भाइयोंके लिये हम कुछ चन्द परीक्षित सतशः लाभकारी नुसखे देते हैं। अगर इससे उन्हें कुछ भी लाभ हुआ तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे। बेकार विज्ञापन-बाजोंके फेरमें न पड़कर इन औषधियोंको अपनावें, जो सज्जन बिक्रयार्थ तैय्यार करना चाहें वह स्वल्प मूल्य रखकर धन और धर्म दोनों कमावें।

कामराज चूर्ण

नागौरी असगंध, कमलगट्टाकी गिरी, कौंचके बीज छीले हुये, बड़े गोखरू, बिदारी कन्द यह पांचों चीज १०—१० तोला।

बनाने की विधिः—

सबका महीन चूर्ण करके फिर केशरका पानी, भांगका काढ़ा, मुलहठीका काढ़ा, बिदारी-कन्द, स्वेत मूसली इन पांचोमेंसे प्रत्येककी ३-३ भावना देकर छायामें सुखाकर कपड़छान कर चूर्ण बना लें। मात्रा १ तोला आधा पाव दूधमें ६ मासा मधु मिलाकर दोनों टाइम लें। इससे सब प्रकारकी नपुन्सकता दूर हो शरीर हृष्ट-पुष्ट तथा बलवान होता है। तेज बाढ़ कर प्रमेहादि सब प्रकारके धातु गत रोग जड़से नष्ट हो जाते हैं।

धातु-पुष्ट चूर्ण

सिंघाड़ा सूखा ६ तोला, कतीरा गोंद ६ तोला, बांस लोचन ४ तोला, मखाना ४ तोला सालम मिश्री चार तोला कौंचके बीज की गिरी चार तोला, शिलाजीत शुद्ध २ तोला, इमलीके बीजकी गिरी दो तोला, माजूफल ३ तोला, मस्तगी देशी ३ तोला, मिश्री सब दवा-

इयोंके बराबर यानी ३८ तोले इन सबोंको कूट छानकर चूर्ण बनावे। मात्रा ६ मासा गायके धारोष्ण दूधके साथ।

गुण—प्रमेह, धातुका पतलापन और शीघ्र पतन आदि यों भागते हैं जैसे सूर्य्यके प्रकाशमें अन्धेरा।

कामदेव रस

शुद्ध अबरक, शुद्ध चांदी, केशर, लोह, चूर्ण, जावित्री, अफीम, लौंग, सफेद इलायची, क्षीराककोली, नागेश्वर, जायफल, कबाबचीनी, समुद्रशोष, अकरकरा इन सब चीजोंको मिलाकर कुल सात तोला लेवें। सबके बराबर मिश्री मिला तथा सहद डालकर ६ रत्तीकी गोलियां बना लें जिसे दूधके साथ खावें। इसके सेवनसे पुरुष हजार स्त्रियोंसे भी विहार करनेमें समर्थ हो जाता है, बूढ़े सरीरमें भी जवानोकी तरंगे हिलोर मारने लगती हैं।

वीर्य पुष्टिकर मुसली पाक

सफेद मूसली २० तोला, कौंचके बीज, विदारी कन्द, गोखरू, शतावर, सोंठ, गंगेरनकी छाल, ये छओ १-१ तोला, घृत ३२ तोला, दूध १० सेर, चीनी ७ सेर, त्रिकटु, त्रिजातक, जावित्री, जायफल, इलायची, बांस लोचन, लौंग प्रत्येक १—१ तोला।

बनानेकी विधिः—

पहिले सातों चीजें पीसकर घीमें भून लें और दूधमें डाल औंटा कर मावा बना लें। फिर चीनीकी चासनी बनाकर यह मावा उसमें डाल पाक बना लें, फिर पिछली ११ चीजोंको बारीक पीस कपड़-

छानकर इस पाकमें मिलाकर कांचके भांड़में रख लें। मात्रा ६ मासे से २ तोले तक दोनों वक्त।

गुण—इससे समस्त शुक्रदोष दूर होकर वीर्य्य गाढ़ा होता है, और वीर्य्यकी गर्मीको निकालकर चित्त प्रसन्न और शान्ति-युक्त कर देता है।

कामदेव वटी

कस्तूरी ७ मासे, अकरकरा ११ मासे, दालचीनी, लौंग, जायफल, कबाबचीनी, कुलंजन, सोंठ यह छओं ११-११ मासे, अफीम ४ मासे, उपरोक्त दवाइयोंको कूट पीस कपड़छानकर, अफ़ीमको घोलकर उसका पानी सब चूर्णमें मिला दें। फिर सब चूर्णमें इतनी शहद डालें कि गोली बंध जावे। नित्य सवेरे ६ मासेकी गोली खाकर ऊपरसे धारोष्ण या गरम गायका दूध पीवें तो वैद्यक शास्त्रमें लिखा है कि नामर्द भी मर्द हो जावे। यह अपूर्व शक्ति लाता तथा स्तम्भन भी करता है।

धातु पुष्टका सरल गरीबी नुस्खा

अदरकका रस ३ मासे, शहद २ मासा सफेद प्याज ४ मासे घी ४ मासे, इन चारोंको मिलाकर नित्य २१ दिन तक प्रातःकाल सेवन करनेसे नामर्द भी मर्द हो जाता है। इसके सेवनसे बल-वीर्य खूब ही बढ़ता है, सेवन काल में खट्टा, मिर्च, तेल, तथा स्त्री प्रसङ्ग मना है।

नं०—२

गिलोय, आंवला, गोखरू, इन तीनोंको कूट पीस कपड़ छानकर इनका चूर्ण चार २ आना भर यानी १२ आना भर लें। फिर बराबरकी मिश्री मिला तथा एक तोला गायके घृतके साथ सेवन करे। इसके नित्य सेवन करनेसे मनुष्यके शरीरमें अपार वीर्य तथा पुरषार्थ होता है।

स्वप्नदोष निवारक महान औषधियें

काम-वासनाकी असीमित उत्तेजना तथा हर वक्त विषयमें ध्यान बनाये रखनेसे स्वप्नमें वही ख्याल आकर स्वप्नदोषके कारण बनते हैं। एक तो प्रस्तुत समयमें जब माता पिता ही सन्तान शस्त्रका उलङ्घन कर पशुओं सरीखे काम-क्रीड़ामें निमग्न हो जाते हैं तब उनकी सन्ताने पवित्र ख्याल वाली कहां तक रह सकेंगी, दूसरे संग-साथ भी ऐसा ही प्रायः मिलता है कि जहां काम-वासना भड़काने वाले विषयोंके सिवाय समव्यसकों और कोई विषयकी चर्चाही नहीं होती तो मानस पाप या उत्तेजनाके कारण स्वप्नदोष न होगा तो और क्या होगा? अगर आप इस सर्वनाशी रोगके चक्करसे बचना चाहते हैं तो मनसा, वाचा, कर्मनासे शुद्ध हो भगवानका स्मरण करें, तथा नीचे लिखी औषधियोंके सहारे अपना पुनर्जीवन प्राप्त करें।

स्वप्नदोषके प्रधान कारण कब्जको दूरकर दूसरी औषध सेवन करें इसलिये पहिला कब्जहर नुस्खा लिखते हैं।

छोटी हर्रें १ तोला, सौंफ १ तौला, सनायकी पत्ती १ तोळा, सेंधा नमक १ तोला ऊपरकी चारों चीजोंको कूट पीस कपड़ छान-

कर २—३ समय तक खिचड़ी खाकर ६ मासे चूर्णको गर्म जलके साथ सेवन करें। २—३ रोजमें जब पेट साफ हो जावे तब नीचे लिखे नुस्खेमें से जो अच्छा और सुलभ लगे सेवन करें।

स्वप्नदोष नाशक चूर्ण

मोचरस पीस छानकर ६ मासा, कूजेकी मिश्री ४ तोला, यह एक खुराक है इसे गायके १॥ पाव गरम दूधके साथ, सवेरे शाम दोनों टाइम पीवें, यह तीन मास तक सेवन करनेसे स्वप्नदोष नष्ट होकर बल-वीर्य बढ़ाता है।

चूर्ण नं०—२

सफेद मुसली, मखानेकी ढुर्रीं, तुरकरेंहा, तालमखाना, यह चारो १—१ तोला, ईसबगोलकी भूसी ४ तोले, सबको मिलाकर चूर्णकर धारोष्ण दूधके साथ ६—६ मासे दोनों समय सेवन करें। यह रामबाण है।

स्वप्नदोष योग नं०—३

त्रिफला चूर्ण १० तोलेमें शुद्ध सतशिलाजीत १ तोला मिला लेवें। ६ मासा सायं प्रातः दूध या जलके साथ सेवन करें। जिन्हें कुपथ्यके कारण धातुरोग या स्वप्नदोषकी शिकायत होती है वह दूर होती है।

परीक्षित रामवाण योग नं०—४

शीतल चीनी ४ तोला, कपूर १ तोला, एक्सट्रैक्स ब्लाडोना ६ मासा (एलोपैथिक है) अहिफेनाव ३ मासा, इन सबको ईसबगोलके लुआवमें १॥—१॥ मासेकी गोली बनावे। सोते समय जलसे सेवन करे। यह औषधि स्वप्नदोषके लिये परीक्षित है।

स्वप्नदोष कब्जहरी योग नं०—५

शतावर जौकुटी की हुई १ तोला, मिश्री ३ तोला, गायका दूध आधा सेर, ताजा जल ।। सेर, चारों चीजें कोरी हांड़ीमें डालकर औंटावे। जब जलकर आधा रह जावे तो उतारकर तथा ठंडा करके मलकर छान लें। दोनों समय २ · ३ महीने तक पीनेसे प्रमेह, स्वप्नदोष, नपुंसकता दूर होकर चैतन्यता और फुर्ती आवेगी, अगर कब्ज रहता होगा तो वह भी दूर होगा।

स्तम्भक दवायें।

गुदा मैथुन, हस्त मैथुन, अनेक स्त्री प्रसंगसे आज कलके समयमें लोगोंको धातु क्षीणता, नामर्दी तथा कमजोरी की बिमारी अक्सर ग्रसित कर लेती है। जिससे सांसारिक जीवनमें असफल हो वह तो आत्म हत्या कर लेते हैं और उनकी स्त्रियां दोनों कुलोमें दाग लगा व्यभिचारिणी हो जाती हैं। उन्हीं भूले भटके कुमार्गमें पड़े तथा बहु व्यसनी लोगोंके लाभार्थ कुछ परीक्षा की हुई स्तम्भक दवाइयों का विवरण नीचे देते हैं। अगर किसी भी सज्जनका व्यवहारिक या व्यापारिक ढंगसे कुछ भी लाभ हुआ तो हम अपना परिश्रम सार्थक समझेंगे।

स्तम्भक चूर्ण।

अकरकरा एक तोला, रिहांके बीज ८ तोला, सफेद कंद ६ तोला तीनोंको कपड़छान :कर चूर्ण बना, १।। तोला फांककर ऊपरसे थोड़ा ठंडा जल पी लेना चाहिये। यदि वीर्य शुद्ध है तो बिना नींबू

चूसे वीर्य स्खलित न होगा। परन्तु चूर्ण फंकनेके दो घंटा बाद भी संतोष करना चाहिये।

योग नं०—२

कमलका केसर, सहदेवी, घी और शहद इन सबको पीस तथा एकमें मिलाकर नाभी पर लेप करनेसे स्तम्भन शक्ति बढ़े।

योग नं०—३

असगन्ध, अकरकरा, जायफल, जावित्री, चीनिया कपूर, खुरासानी आजवायन, बच, धुली हुई भांग, राय सेन्दुर, प्रत्येक वस्तु ७-७ मासे लेकर कूट पीस कर मोटे कपड़े से छान लो। इसमें ५६ मासे मिश्री का चूर्ण मिला गुलाब जलके सहारे ४-४ मासे की गोलियां बनालो चांदीके वर्क लपेटकर छाया में सुखा लो। शामको एक गोली खाकर १ मूली खा लेनेसे इतनी शक्ति बढ़ेगी कि वर्णनातीत है। विना खटाई मिर्च या नमक जैसी कोई तीक्ष्ण चीज खाये घंटों तक कदापि वीर्य स्खलित न होगा।

स्तम्भन काढ़ा नं०—४

खश ३ मासे, सोंठ २ तोला, पुराना गुड़ १॥ मासा, इनका काढ़ा बना कर पीनेसे जबतक खटाई न खाई जावे वीर्य स्खलित न होगा।

प्रदर रोगपर चमतकारिक नुस्खे।

अशोककी छाल, गूलरकी छाल, बांसकी छाल, सेमरछाल, बबूल की छाल सब बराबर २ लेकर सुखाकर कूट पीस कर मोटे कपड़ेसे कपड़छान कर १ तोला चूर्ण गोदुग्ध या ताजे पानीसे नित्य प्रातःकाल लेवे। इससे श्वेत प्रदर तथा रक्त प्रदर दोनों आराम होते हैं।

प्रदरारि चूर्ण नं०—२

बिधारा, पठानी लोध, समुद्र शोष, सतावर १०-१० तोला व मिश्री ४० तोला; सब औषधियोंको पीस कूट कपड़छान करके चूर्ण बनाले। ६–६ मासेकी मात्रा; गायके धारोष्ण दूधसे दोनों वक्त लेवे। रक्त प्रदर श्वेत प्रदर दोनोंमें लाभ प्रद है।

रक्त प्रदर चूर्ण नं०—३

१ पाव बबूलकी पत्ती पीसकर घीमें भून ले, पश्चात १ छटाक पिसी मिश्री बढ़िया लेकर और वंगभस्म २ मासा लेकर सब मिला एक शीशीमें बन्द करके रख ले। कैसा ही रक्त प्रदर हो आराम करेगा। मात्रा ६ मासे ठंडा जलके साथ।

श्वेत प्रदर हर चूर्ण नं०—४

श्वेत बन हल्दी ४ तोला, बबूलका गोंद ५ तोला, कूजेकी मिश्री ४ तोला, इन सबको बारीक पीस मोटे कपड़ेसे कपड़छानकर प्रातः सायं दोनों वक्त ६—६ मासे गोदुग्धके साथ ले अवश्य लाभ होगा।

जीर्ण रक्त प्रदर हर चूर्ण नं०—५

आंवला, संगजराहत, अशोक छाल, चिकनी सुपारी, मुलहठी, अतीस, शुद्ध गेरू, श्वेत सुरमा भस्म, आमकी गुठली, नागरमोथा, नीलकंठी, बंसलोचन, प्रत्येक २—२ तोला कूट पीस कपड़ छानकर रख ले। मात्रा ४—४ मासा दोनों वक्त शर्बत अनार या शहदके साथ, ऊपर गोदुग्ध पीवे। जो बुखारके साथ प्रदर होगा तो प्रदर तथा बुखार दोनों १५ दिनके सेवनसे चला जायगा।

शक्तिदाता प्रदर हर क्वाथ नं०—६

अशोक छाल, सतावरी नवीन, लोध, चोलाईकी जड़, द्राक्षा,

रसौंत, असली नागकेशर सातो चीज १ १ छटांक लेकर सबको २ सेर पानीमें पकावे। जब आधा सेर पानी रह जावे तब तीन छटांक शहद मिलाकर फिर पकावे। जब पकते २ आधा सेर पानी रह जावे तब उतारकर छान लें और बोतलमें भरकर रख लें, मात्रा २ ड्रामसे ४ ड्राम तक, २ रत्ती अशोक छालके काढ़ेमें मिलाकर गुण-सब प्रकारके प्रदरको दूर कर शरीरमें नवीन जीवनी शक्ति पैदा करता है।

हिचकी रोग की दवायें

हिचकी रोग देखनेमें तो छोटा सा होता है, लेकिन जब हिचकी सुरू होती है तो सारे शरीर को हिला देती है। आदमी इसकी धड़कसे घबड़ा जाता है। अतः कुछ सरल तथा परीक्षित नुसखे इस पुस्तकमें नीचे लिखे जाते हैं. जिसके अनुसार औषधी-प्रचार करनेसे जरूर लाभ होगा।

हिचकी रोगकी दवा।

एक पाव बकरीके दूधमें दो तोले सोंठ और एक सेर पानी डालकर औंटानेसे दूध मात्र रहने पर छानकर पीनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(२) पीपर, देवदारु, सोंठ तीनोंको बराबर ले तथा चूर्णकर गरम पानीके साथ फांकनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(३) मोर पङ्खकी २ रत्ती भस्ममें १ मासे पीपरका चूर्ण और ६ मासे शहद मिलाकर चाटनेसे सब तरहकी हिचकी, घोर श्वास, और अति उग्र वमन भी शान्त हो जाता है।

(४) सामर नोन, सेंधा नोन, काला नोन, इनको बराबर २ लेकर पीसकर छान लो। इसमें ६ मासे चूर्णको फांकनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५) सेंधेनोनको पानीमें पीस कर सूंघनेसे पांचों प्रकारकी हिचकी आराम हो जाती है।

(६) कुटकीका चूर्ण ३ मासे, शहदमें मिलाकर चटानेसे बालकोंकी हिचकी तथा दूधडालना यह निश्चय आराम हो जाता है।

श्वास या दमेकी दवायें।

(१) समन्दर फल ५० और छोटो पीपर १०० दोनोंको किसी हांडीमें रख कर आगपर भस्म कर लो। फिर शीतल होनेपर पीस कर शीशी में भर कर रख लो। मात्रा १ मासा रोज पानमें डालकर खाने से २१ दिनमें खास रोग जाता रहता है।

(२) ईसबगोल १ तोला, सबेरे शाम चार महीने तक फांकनेसे सब तरहका असाध्य स्वास या दामा जड़से चला जाता है।

(३) मकड़ीका जाला १ रती, १ मासा गुड़में मिलाकर खाओ यह दवा गरमी तो बहुत करती है, पर दमा नाश करनेमें रामबाण है। यह दवा कफज दमावाले के लिये है इसे याद रक्खे।

(४) काकणा सिघी, सोंठ, छोटीपीपल, कालीमिर्च, कचूर, कमल, पोहकर मूल, इनको बराबर २ लेकर महीन पीस छान लो। मात्रा ३ मासे, गरम जलके साथ। यह नुसका खांसी और स्वांस पर उत्तम है।

(५) पिठवन, खिरैंटी, अडूसा, तीनोंका काढ़ा बनाकर पिलानेसे गर्भिणी स्त्रीका रक्त पित, सूजन, खांसी स्वांस और ज्वर नाश हो जाता है।

(६) कैथके रसमें शहद और छोटी पीपर का चूर्ण मिलाकर पीनेसे स्वांस रोग जाता रहता है।

(७) असली ३ मासे इस्पन्द ३ मासे, दोनोंको पीसकर १ तोले शहदमें मिलाकर हर दिन चाटनेसे छाती और गलेका कफ नाश हो कर दमा आराम होता है।

(८) अन्डूसेके बीज, नाक छीकनी, बंगला पान, इसको बराबर २ लेकर आगपर भून लो फिर पीस छानकर रख लो। इसमेंसे ४ रत्ती दवा बंगला पानमें रखकर रोज सवेरे खानेसे भयंकर स्वांस रोग भी नष्ट हो जाता है।

(९) बेल पत्तेका रस ६ मासे, अडूसेके पत्तों का रस ६ मासे, सरसोंका तेल ६ मासे सब को मिलाकर पीनेसे ७ दिनमें घोर स्वास राग नष्ट हो जाता है।

खांसीकी अपूर्व दवायें।

(१) काकड़ासिंगी को महीन पीस छानकर पानी मिलाकर जंगली बेरके समान गोलियां बनालो। सबेरे शाम १ गोली मुंहमें रखकर बैरके समान चूसनेसे सब तरह की खांसी, खासकर कफ की ही आराम हो जाती है।

(२) सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, इन्हें महीन पीस छानकर रख लो। चार मासे चूर्ण ६ मासे शहदमें मिलाकर चाटनेसे कफ और खांसीका नाश कर देता है।

(३) अदरकका रस ६ मासे, शहद ६ मासे, सांभरु नमक १ मासा मिलाकर चाटनेसे कफ जनित खांसी और जुखाम नष्ट हो जाता है ।

(४) काली मिर्च, सोंठ, छोटी इलायची ४-४ तोले इन सबको पीस छानकर ८ तोला गुड़में मिला लो, एक तोला सबेरे ही नित्य खानेसे सब तरह की खांसी श्वांस, दम रुकना नाश हो जाता है ।

उन्माद या पागलपन की दवाइयां ।

(१) ब्राह्मीके पत्तोंका रस ४ तोले, कूटका चूर्ण १२ रत्ती शहद ४८ रत्ती इन सब को मिलाकर रोज पीनेसे कुछ रोजमें उन्माद चला जाता है ।

(२) पेठेके बीजोंकी गिरी २ तोला लेकर रात्रिमें ५ तोला पानीको पत्थर या मट्टीके बर्तनमें भिगो दो । सवेरेसे उसे पीस छानकर ६ मासे शहदमें मिला कर १५ दिन तक पीनेसे उन्माद नष्ट हो जावेगा ।

(३) लाल रंगकी कच्ची चिरमटी २ रत्ती लेकर गायके आधापाव दूधके साथ कुछ दिन पीनेसे उन्माद नष्ट होता है ।

(४) सफेद फूलकी खिरैंटी का चूर्ण ३।। तोले पुनर्न वाकी जड़ का चूर्ण १ तोला, इन दोनोंको दूधमें खीरकी तरह बना कर ठंढाकर नित्य सबेरे ही पीनेसे कुछ रोजमें उन्माद चला जाता है

(५) नया घी और सुगन्ध वालाका रस दोनों मिला कर पीनेसे उन्माद नष्ट हो जाता है ।

(६) सफेद प्याजका रस नाकमें डालनेसे उन्माद और मृगी दोनों आराम हो जाते हैं।

मृगी नाशक दवाइयां।

(१) सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, तीनोंको बराबर लेकर सेहुंडके दूध में २० दिनों तक भिगो रक्खो। फिर निकालकर पानीके साथ सिलपर पीस लो। इसकी नस्य देनेसे मृगी जाती रहती है।

(२) आक की जड़की छाल बकरीके दूधमें पीसकर कपड़ेमें रखलो मृगीका दौरा होनेपर तीन चार बून्द नाकमें टपका दो मृगी नाश होगी।

(३) कड़वी तोरई पानीमे पीस कर एक महीन कपड़ेमें रखलो। वेहोश मृगी वाले रोगी की नाकमें दो या चार बूंद टपका दो इसको टपकाते ही मृगी वाला होशमें आ जावेगा। इस बिमारीके लिये यह दवा जादू है।

(४) सफेद प्याजका रस नाकमें डालनेसे मृगी आराम हो जाती है।

लकवा या फालिज पर परीक्षित नुसखे

यह विशेष कर बायुके कुपित हो जाने दुष्ट वायुकी प्रधानतासे होता है। हमारे नीचे लिखे नुसखों का अगर आप प्रयोग करेंगे तो किसी भी प्रकारकी बात व्याधि न रह जावेगी। कारण कि यह बहुत बड़े २ वैद्योंके आजमूदा नुसखे हैं।

(१) पन्द्रह दाने कुचलेको पन्द्रह दिन तक पानीमें भिगो दो। पर पानी हर रोज ताजा बदल देना होगा, जब पन्द्रह रोजमें वह नर्म हो जावें तब उनके छिलके उतार कर सुखा लो, सूखने पर उन्हें

आगमें तब तक जलाओ जब तक धुआं निकलना न बन्द हो जावे। बादमें जले हुये कुचलेको आगसे निकालकर उसके बराबर काली मिर्च मिलाकर पानीके साथ पीसकर काली मिर्चके समान गोलियां बना लो। हर रोज सुवह १ गोली खानेसे लकवा, फालिज, मेजेके रोग, कमरकी पीड़ा ये सब नाश हो जाते हैं।

लकवा नाशक तेल।

(२) अरणके पत्ते, धतूरेके पत्ते, सहदेईके पत्ते, सहजनेके पत्ते, असगन्धके पत्ते, सम्हालूके पत्ते, इन सबका आधा २ पाव रस निकालो। इस रसमें इतना ही तेल यानी १४ छटांक मोठा तेल मिलाकर मन्द मन्द आंचपर पकाओ। जब तेल मात्र रह जावे छानकर उसमें २-२ तोले सोंठ कड़वा कूट पीस छानकर मिला दो। यह तेल लकवे या फालिजमें बड़ा ही उपकार करता है।

(३) आयुर्वेदमें वर्णित "स्वच्छन्द भैरव रस" सेवन करनेसे कुछ दिनमें समस्त वायुरोग खासकर "पक्षाघात" रोग अवश्य आराम हो जाता है।

समस्त वात रोगान्तक तेल

सोंठ १० तोले, उत्तम सुरती १० तोले, छोटी पीपर ५ तोले, हींग १ तोला, अफीम १ तोला, भिलावे १ तोला, कुचला १ तोला, काली मिर्च १ तोला, इन सबको पीसकर १ सेर तिलके तेलमें और १ सेर सरसोंके तेलमें मिला दो। इसे आगपर चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकावो, जब दवायें जलकर उनका अर्क उतर आवे तब तेलको उतारकर छान लो।

गुण—इस तेलके मलनेसे बातज दर्द, कमरका दर्द शरीरके किसी भी हिस्से का दर्द कुबड़ापन लंगड़ापन शीताङ्ग, सन्निपात सब आराम होते हैं।

बात रोगके लिये सर्वाङ्ग क्वाथ [काढ़ा]

रास्ना, पुनर्नवा, सोंठ, गिलोय, अरण्डकी जड़, इनको ६—६ मासे लेकर काढ़े की तरह बनाकर पीनेसे हर तरहके वायु-गत रोग नष्ट होते हैं।

महा रासनादि काथ (काढ़ा)

यह स्वयं ब्रह्माजीका आविष्कार किया हुआ है। यह हर ढङ्गकी शारीरिक वायु तथा हाथी पांव,फीलपांव अंडवृद्धि,शरीरके किसी भी अंगकी दर्द, शुक्रदोष, वीर्य दोष, लिंग दोष, बांझपनके दोष आदि सब आराम होते हैं। इसके बनानेकी विधि नीचे दी जाती है।

रास्ना २ तोला, धमासा, खरैंटीकी जड़, अरंडकी जड़, देवदारू, कचूर, बच, अडूसेका पंचाग, हर्रेकी छाल, चव्य, नागर मोथा, सोंठकी जड़, गिलोय, विधारा, सौंफ; गोखरू, असगन्ध, अतीस, अमलतासका गूदा, सतावर, छोटी पीपल, पियाबंसा, पुराना धनियां; छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, इन पचीसोंको १—१ तोल यह सब दवाइयोंके कुल तौल २७ तोलेकी १२ पुड़िया बना लो। हर एक खुराक को अठगुने जलमें औंटाओ; जब आठवां भाग पानी रह जाये तो मलकर छानकर पी जाओ।

प्लीहा या तिल्ली रोग नाशक नुसखे

(१) लहसुन, पीपरा मूला और हर्रे समान भाग पीस छानकर ६

मासेकी मात्रामें खाकर ऊपरसे गोमूत्र पीनेसे तिल्ली रोग नाश हो जाता है।

(२) नौसादर तीन रत्तीसे ५ रत्ती तक पके हुये पपीतेमें रखकर खाओ, इससे तिल्ली गल जाती है।

(३) मूली खार, बैगन खार, जवा खार, सज्जी खार, इन सबको समान लेकर पीस छानकर ६—६ रत्ती की मात्रा मूलीके रसमें मिलाकर सबेरे शाम लेवे।

(४) संख भस्म २ रत्ती, कौड़ीकी भस्म १ रत्ती, मोतीके सीपकी भस्म १ रत्ती, इन तीनोंको मिलाकर गायके पाव भर दूधके साथ खानेसे बढ़ी हुई तिल्ली घटने लग जाती है।

(५) दारु हल्दी १ तोला कुटकी ४ मासे, गिलोय ४ मासे, सफेद पुनर्नवा ४ मासे, इन सबको डेढ़ पाव पानीमें डालकर औंटाओ जब १॥ छटांक जल रह जावे तब मलकर छान लो, ठंडा होनेपर ६मासे शहद मिलाकर पीओ। यह एक मात्रा है एक समयकी है। दोनों वक्त जो रोगी इसे लेंगे और लगकर कुछ दिन इसपर भरोसा रखकर करते जांयगे तो निश्चय ही तिल्ली तथा तापतिल्ली दोनों आराम हो जांयगी।

(६) चीतेकी क्षार ६ रत्ती, ६ मासे शहदमें मिलाकर चाटनेसे यकृत प्लीहोदर निश्चय ही आराम होगा।

सुजाक की हुक्मी दवायें

(१) गन्दा विरोजेका सत १ मासे, गुड़ १ मासे, दोनोंको एकमें

मिलाकर खाओ। ऊपरसे आधा पाव दहीमें १ छटांक पानी मिलाकर पी लो। यह नुसखा जब तक आराम न हो पीयो।

(२) भुनी फिटकरी २ मासे, गेरू २ मासे, मिश्री ६ मासे, इन तीनोंको पीस छान लो। यह एक मात्रा है इसे खाकर ऊपरसे गायका धारोष्ण दूध पीनेसे १५—२० रोजमें सुजाक जाता रहता है।

(३) ६ मासे राल ६ मासे, मिश्री, मिलाकर पानीके साथ पीनेसे सुजाकमें जो पेशाबके साथ कच्चा रश्म आता है वह बन्द हो जाता है।

(४) तरबूजका पानी १ पाव, जीरा सफेद १ मासा, मिश्री ६ मासा मिलाकर पीनेसे पिशाबमें जलन कड़क, सब आराम होता है।

(५) दो तोले पके फालसे आधा पाव पानीमें १ घण्टे तक भिगो रक्खें, फिर उस पानीमें फालसेको मल छानकर उसमें १ तोला मिश्री मिलाकर पीओ इस प्रयोगसे सब तरहका सुजाक आराम हो जाता है।

(६) १ तोले शहदको ८ तोले पानीमें घोलकर शर्बत बना लो, फिर उसमें आधी रत्ती "केशर पानीमें पीसकर मिला लो। फिर इसे साफ पत्थर या कांचके बर्तनमें रात भर रक्खा रहने दो। और सबेरे ही पी लो। इससे पेशाबका रुकना, जलन, कड़क सब आराम हो जाता है।

गर्मी उपदंश की अद्भुत दवाइयां

यह बड़ा ही दुष्ट रोग है, यह अपने ही किये हुये पापोंका फल अपने ही तक भोगनेको नहीं रहने देता। अपनी निशानी आनेवाली

तीन पीढ़ियों तक जाता है। दुष्ट रोग बाली बाजारू वेश्याओंके सन्सर्गसे इस रोगकी उत्पत्ति होती है। जिसे यह रोग हो जाता है वह दूसरोंसे लज्जाके मारे कहता नहीं कि बदनामी होगी और न कहनेसे अपने साथ भावी सन्तानको भी इस दुष्ट रोगके सन्सर्गमें ले आता है। इन्हीं बातोंको विचारकर हम इसकी सर्वाङ्ग चिकित्सा जो कि हमारे नामी २ अनुभवी वैद्य शास्त्रियोंकी बताई हुई है लिखते हैं। अब आप इस पर ध्यान देकर पुस्तकमें लिखे अनुसार क्रिया पर चलें तो इस दुष्ट रोगसे छुटकारा पानेके साथ ही साथ दूसरोंको भी इससे छुड़ाकर धन पैदा कर सकते हैं।

रक्त शोधक अर्क

अनन्तमूल काला १६ तोले, श्वेत अनन्तमूल १६ तोले, उसवा १६ तोले, मजीठ ४ तोले, गोरखमुंड़ो ४ तोले, सीसमका बुरादा २ तोले, लाल चन्दन २ तोले, सफेद चन्दन २ तोले, नीमकी गुरुच २ तोले बकलकी छाल २ तोले, सिहोराकी छाल २ तोले, बडके अंकुर २ तोले, नागर मोथा, पीपलके पत्ते, कचूर, २—२ तोले, छरीला १ तोला, गुलाबके फूल ४ तोले, सौंफ ४ तोले धनियां ४ तोले, अजवायन देशी १ तोला, पत्रज १ तोला, सनाय, फाऊ पत्र, मेंहदीके बीज २-२ तोले; मुनक्का २ तोला, तालाबका जल २० सेर इन सब चीजोंको जौकुट करके १५ गुने पानीमें रातमें भिगो दो, सवेरे भबका यन्त्र द्वारा अर्क खींच लो, अगर मीठा बनाना हो तो शर्बतमें बनाकर यह अर्क उसमें मिला दो। मात्रा ३ तोला गोदुग्धके साथ।

परहेज—खट्टा, मीठा, तेल, मांस; मछली, स्त्री प्रसंग।

रक्त शोधक चटनी।

बाकुचीके बीज ८ तोला, चोप चीनी ४ तोला, मजीठ, चित्रक, सफेद कत्था, बाय बडिंग, पीपल छोटी, काली मिर्च, चाल मोगरा का बीज, गिलोयका सत्त, निसोंत, सफेद सोंठ, आमला, प्रत्येक १—१ तोला, मिश्री २० तोला, मुनक्का २० तोले, सब दवा बारीक पीस मिश्री व मुनक्का मिलाकर रख लें। मात्रा ६ मासेसे १ तोले तक शहदके साथो ऊपरसे धारोष्ण गोदुग्ध पीयें।

उपदंश हर योग नं०—३

सत्यानाशीकी जड़का रस १ तोल,, उत्तम मिश्री १ तोला, गाय का धारोष्ण दूध १ पावमें मिलाकर दोनों टाइम पीवे। घाव पर सत्यानाशीका पीला दूध लगावे।

गरमीके लिये आश्चर्य जनक मलहम

गायका घी १ पाव, (त्रिफलेके काढ़ेमें १०१ बार धुला हुआ) सफेद कत्था १ तोला, कपूर १ तोला,मुरदासङ्ग १ तोल,, सुपारी (जलाकर) भस्म १ तोला, पीली कौड़ी भस्म, माजूफल (आगमें जलाकर) की भस्म १ तोला, नीला थोथा (भुना हुआ) १ तोला, रस कपूर (बाजारू ६ मासे, मोम देशी ४ तोला।

बनानेकी विधिः—

घीमें मोम जलाओ फिर उसमें रस कपूर अच्छी तरह मिला दो बादमें समस्त औषधियोंको बारीक पीस छानकर ऊपर वाली चीजों में मिलाकर एक जान कर लो, फिर चौड़े मुंहकी शीशीमें रख

लो। जब काममें लाना हो तो नीमके पत्ते पानीमें उबाल उसी पानीसे घाव धोकर लगाते ही भयानक से भयानक घावमें भी शान्ति मालूम होती है। लगातार कुछ दिन लगानेसे समूल आराम हो जाता है।

मलहम नं० २

सफेद कत्था २ तोला, गुजराती सिन्दूर १ तोला, कपूर १ तोला, (कांसेकी थालीमें १०० बार धोया) घी ५ तोला। सब औषध एकमें घोटकर कांचके बर्तनमें रखले, उपदंशके चकतों घावमें लगाने से घाव शीघ्र भर कर आराम हो जाते हैं।

डाक्टरी मलहम नं० ३

आयडो फार्म, जिन्क पाउडर, परमानेन्ट आफ़पोटाश तीनोंको वेसलीनमें खूब अच्छी तरह मिला दीजिये, जब एक जान हो जाय, तब इसे लगावे, कैसा ही सडा गला, पुराना नया, सब तरहका घाव आराम हो जायेगा। नोट—जबतक घाव न आराम हो विषय न करे।

सरल डाक्टरी मलहम नं० ४

आयडो फारम को नारियलके तेलमें मिलाकर लगाओ बहुत शीघ्र लगाते लगाते २-३ रोजमें ही आश्चर्यजनक लाभ दिखाई देगा।

गर्मी नाशक चूर्ण वटी।

शुद्ध किया हुआ पारा, अज़वायन ६ मासा, काली मुसली ६ मासा शुद्ध भिलावा ३ मासा, गुड़ ६ तोला, इन पांचोंको कूट पीस

कर गोली बनावे। नित्य सवेरे १ गोली गौ के दही में खावे। ११ दिनमें गर्मीके सब विकार नष्ट होंगे। साथ ही घावोंमें ऊपर लिखी मलहम लगावे।

आगसे जलनेपर आश्चर्य चमत्कारिक नुसखे

(१) कच्चे आलुओंको पत्थर पर महीन पीस कर यदि तुरत जलते समय अच्छी तरह लगा दिया जावे, जिसमें जली जगह पिसे आलुओंसे एक दम ढक जावे तो जलन भी फौरन शान्त हो जाती है तथा फफोले भी नहीं पड़ने पाते।

(२) असली शहद यदि जली हुई जगहपर लेप कर दे तो जलन फौरन बन्द हो जाती है।

(३) एक तोला सोडेको लेकर २ तोले पानीमें घोल दो फिर जली हुई जगह पर गाढ़ा गाढ़ा लेप कर दो, न जलन होगी न छाले ही पड़ सकते हैं।

(४) जैसेही कोई अङ्ग जले उस पर तारपीनके तेल या स्पिरिट में तर करके वह कपड़ा रख दिया जावे तो एक बार तो दर्द कुछ ज्यादा मालूम देगी पर थोड़ी देर बाद एकदम आराम हो जाता है।

(५) बकरीकी लेंड़ी सूखी हुई का चूर्ण नारियलके तेलमें फेंटकर लगानेसे न छाले पड़ेंगे न जलन होगी।

(६) बबूलकी पत्तियों को गरमकर पीसलें उसका चूर्ण छिड़ककर नारियलका तेल पोत दें, सब तरहके जले पर आराम करेगा।

—*—

नेत्र रोग पर आश्चर्य जनक नुसखे।

(१) आखें जब गर्मीसे लाल होकर दुखने आवें तो गायके दूध की मलाई लेकर रात्रिको सोते वक्त कपड़े की दो गद्दियें बना उन पर मलाई ठीकसे जमाकर उन गद्दियोंको आंखपर रख पट्टी बाँध लें। आंख की गर्मी कड़क सब दूर कर देगी साथ ही धूप वाला चश्मा पट्टी खोलने पर आंख पर रखें।

(२) अफीम और रसौंत दोनों जरासा पानी डाल मिलाकर गर्म करके आंखके चारों तरफ आंख बचाकर पलकोंपर लगाइये। इसके २-३ दिन लगानेसे आंख की घोर लाली कड़क,जलन सब आराम होगी। इसे लगाते वक्त दिनके टाइममें सूर्यकी रोशनी की तीव्रता से बचनेके लिये ठंडा धूप वाला चश्मा लगावें।

(३) मुलहट्ठी, पीलागेरू, सेंधा नोन, दारु हल्दी, रसौंत इनको समान भागमें लेकर पानी डाल सिलपर पीस लो। पलकोंके चारों ओर लेप करनेसे नेत्रोंकी पीड़ा, खुजली, लाली सब नाश हो जाते हैं।

रोपणी बटी (रतौंधी) के लिये।

(४) रसौंत, हल्दी, दारु हल्दी, मालतीके पत्ते और नीमके पत्ते; समान २ लेकर निरोग गायके गोबर के रसमें पीसकर गोलियां बना लो। डेढ़ मटर समान गोली आंखमें आंजनेसे रतौन्धी, या रातमें न दीखनेका रोग नष्ट हो जाता है।

(५) निर्मली के फलको शहदमें घिसकर भीमसेनी कपूर मिलाकर आंखोंमें डालनेसे नेत्र साफ हो जाते हैं।

फूलोंके नष्ट होनेकी दवा ।

भीमसेनो कपूरको बड़के दूधमें पीसकर अंजन करनेसे द महीने तकका फूला आराम हो जाता है ।

सफेद सुरमा ।

सफेद सुरमे को आगमें तपा कर सात बार त्रिफलेके काढ़ेमें और स्त्रीके दूधमें सातबार बुझाओ; फिर इसको महीन पीसछान कर नित्य आंखोंमें लगाओ । यह सुरमा नेत्रोंमें सब रोगोंको नष्ट करनेमें समर्थ है ।

चन्द्रोदय वटी ।

हरड़, बच; कूट: पीपर; काली मिर्च बहेड़ेकी मीगी; शंखकी नाभी और शुद्ध मैनसिल इन सब को बराबर २ लेकर महीन पीस कर छान लो । फिर छने हुये चूर्णको गायके दूधमें बारीक पीस कर गोलियां बनालो । इसको घिसकर आंखमें लगानेसे तीन साल तक का फूला रतौंधी; मासवृद्धि सब १ महीनेमें आराम हो जाते हैं ।

चन्द्र ज्योति सुर्मा ।

शुद्ध सीसा २ तोले, शुद्ध काला सुर्मा, शुद्ध पारा २ तोले; मिश्री २ तोले; समुद्रफेन २ तोले ।

बनानेकी विधि :—

पहिले सीसे और पारेको घोंटो; फिर उसमें सुरमा मिश्री; समुद्र फेन यह तीनों मिला कर चार दिन तक बराबर खल करो । फिर २ तोले भीमसेनी कपूर मिलाकर २४ घंटे और खल करो बस

सुरमा तैय्यार है। सबेरे शाम दोनों वक्त आंखमें लगानेसे आंखोंकी रोशनी बढ़कर सब नेत्र रोग नष्ट हो जाते हैं। यह सुरमा बहुत उत्तम है।

नेत्र ज्योति सलाई।

एक सेर उत्तम सीसा लेकर आगपर खूब गरम कर २ के १०० बार त्रिफलेके काढ़ेमें, ५० बार भांगरे के रसमें ५० बार सोंठके काढ़े में, ५० बार घीमें २५ बार गो मूत्रमें २५ बार शहदमें २५ दूधमें बुझाओ । जब बारी बारीसे उपरोक्त चीजें बुझालो तब इस सीसे की सलाइयां बनवालो इसे सलाई को दिन रातमें चार बार आंखोंमें फेर लेनेसे आंखोंमें पानी आना दुखना, तथा नेत्र ज्योति कम होना ठीक होकर आखोंकी रोशनी बुढ़ापे तक कभी नहीं खराब होती। इसे बनाकर विज्ञापन कर वेंच कर भीं आसानी से लाभ उठा सकते हैं।

कानके रोगोंपर आश्चर्य जनक दवायें।

(१) आकके पीले २ पत्तोंपर घी चुपड़ कर उसको दीपककी लौ या आगपर सेको। सिक जानेके बाद उसे पीसकर रस निचोड़ लो, इसके रसको सुहाता २ गरम २ कानमें डालनेसे कानका दर्द तुरन्त आराम होता है।

(२) अदरकके रस या लहसुन दोनोंमेंसे किसी का भी आक निकाल सेंधानोन मिलाकर पीसकर कानमें डालनेसे दर्द फौरन आराम होता है।

(३) बकरीके दूधमें सेंधा नमक मिलाकर जरा गरमकर कानमें डालनेसे तत्काल घोर सूल भी आरम्भ हो जाता है। इससे कान बहना तथा कानमें आवाज होना भी बन्द होता है।

(४) गो मूत्र गरम करके कानमें भरनेसे कानका दर्द अवश्य आराम होता है।

(५) बिजोरे नीबूके रसमें थोड़ासा सज्जीका चूर्ण मिलाकर कानमें डालनेसे कानका दर्द जलना, बहना फौरन आराम हो जाता है।

(६) चोवेको कानमें डालनेसे, कान की फुन्सी तथा घोर दर्द भी आराम हो जाता है।

(७) बेलगिरी को गो मूत्रमें पीसकर लुगदी बना लो, फिर लुगदी से चौगुना तिलका तेल, तेलसे चौगुना, दूध और पानी मिला कर तेल पकालो। जब सब दूध और पानी तेल मात्र रह जावे तब ५—६ बूंद तेल रोज कानमें डालनेसे अवश्य बहरा पन जाता रहता है।

सांप, बिच्छू, के काटने पर कुछ अद्भुत दवाइयां

बिच्छू विष चिकित्सा।

(१) नौसादर छः मासा, अनबुझा चूना एक तोला दोनों बारीक पीस कपड़छान कर शीशीमें रखकर डाट बन्द कर दें। जहां बिच्छूने डंका मार हो वहां इसे लेकर मलें तथा सूंघनेके लिए साथ ही साथ इसे डाट हटा २ कर सूंघते भी जावें। बहुत लाभदायक है।

(२) पिसा हुआ सेंधा नमक १ मासामें, जल ताजा २ तोला मिलाकर १-१ बूंद बिच्छू काटे की आंखोंमें टपका दें, तथा कानमें भी डालें । और काटे हुये स्थान पर बबूल की पत्ती पीस बांध दे रोता आदमी भी हंसने लगे ।

(३) सफेद संखिया की डली लेकर जलमें पीसलें ठीक बिच्छू के डंककी जगह तथा उसके अगल बगल दो दो अंगुल तक २ बार लेप करें । लेप करने पर अधजले गोइठे (उपले) से सेकदो । सेकते २ जब सूखने लगे तब पानीसे फिर तरकर ले और सेकता जाय ऐसा करनेसे १५-२० मिनिटमें सब जहर दूर हो जावेगा ।

(४) रीठेको पानीमें मिलाकर पत्थर पर घिसले, घिसने पर गाढ़ा गाढ़ा जब लेप करनेके लायक हो जावे तब लेप करदे १५-२० मिनिटमें ठीक हो जावेगा ।

(५) १ छटांक सरसोंका तेल अग्नि पर गरम करे, फिर उसमें १०-१२ नीबूके पत्तोंका रस निचोड़ दे । जब दोनोंकी मिलकर भाफ उठने लगे तो उससे सेके, ४-५ बार सेकनेसे फौरन आराम होता है । सेकनेके बाद जरूरत समझे तो नीमके पत्तों को पीस पुल्टिस बनाकर बांध दे ।

सर्व विष चिकित्सा ।

(१) कच्चा फिटकरी ५ तोला को १० तोला गौके दूधमें पीसकर पिलाइये, तथा दूधमें फिटकरी पीसकर काटे हुये स्थान पर लगाइये ।

(२) नील १ तोलाको ५ तोला जलमें खूब घोलकर :मिलालें। सर्प काटे रोगीको ५-५ मिनिट बाद थोड़ा २ करके पिलाइये। इसके पिलानेसे वमन [उल्टी] होकर सब विष निकल जायगा अगर इतनेसे लाभनहो तो एक खुराक और दें।

(३) रीठाफलकी छालको जलमें पीसकर रस निचोड़ लें, जिस नथुनेसे अधिक श्वांस चल रही हो उसमें ८—१० बूंद टपका दें। कुछ देरमें ही कै और लार द्वारा सब विष मुखसे निकलने लगेगा, यदि श्वांस बन्द हो चली हो तो रीठेके जलमें गाढ़ा २ पीसकर १-२ तोलेकी लुगदी सिरके तालू पर जमा दें श्वास पुनः चलने लगेगी तब उपरोक्त क्रिया करें। ३—४ बार नाकमें दवा टपकानेसे सब सर्पविष दूर हो जावेगा। इसके बाद रीठेकी छालके चूर्णमें रेवत चीनी मिलाकर १ मासे की मात्रा गोघृतके साथ खिलावे तो रहा सहा विष भी बिल्कुल दूर हो जावेगा।

(४) बिना बुझे हुये चूनेकी डली लेकर, दंश स्थान को चीर कर उस पर रख दें। जब सनसनाने लगे तो समझें कि विष चूस रहा है, जब कुछ तर हो जावे तब दूसरी या तीसरी या चौथी डली तब तक रखते जांय जब तक काला रक्त चूसा न जावे जब रक्त आने लगे निर्विष हुआ समझें तथा घाव पर नी लिखा लेप लगादें।

शान्ति दायक लेप।

राल सफेद १ तोला, सफेदा कासगरी ५ मासे, कनूर ६ मासे

तीनों को बारीक पीसकर मक्खनमें अच्छी तरह फेंटकर लगावें। इससे औषधका दाह दूर होकर घाव आराम होता है।

(५) जमाल गोटे की मींगीको मुख की लार या थूकमें घिसकर आखोंमें आंजे और डंक मारे स्थान पर भी लगावे।

(६) समुद्र फल लहसुनके रसमें घिसकर अंजन करे।

(७) तीन नग आक की कोपल गुड़में लपेटकर खिलावे ऊपर से गरम करके घी पिलावे।

(८) एक मासे इन्द्रायनका फल और नोन काली मिर्च को एकमें पीसकर पिलावे तथा काटे स्थानपर आकका दूध टपकाता जावे जब तक जहर रहेगा आकका दूध सूखता जावेगा जब सूखना बन्द कर दे तो समझो कि विष उतर गया।

मकड़ी का विष दूर करने की दवा

(१) अमचूर पानीमें पीसकर लगावे।
(२) सफेद जीरा और सोंठ जलमें पीसकर लगावे।
(३) खली और हल्दी जलमें पीसकर लगावे।
(४) चूना नीबूके रसमें पीसकर मले।
(५) चूना, मीठा तेल और चिरौंजीमें पीसकर मले।

बन्ध्या-बांझ-स्त्रीके भी सन्तान दाता योग

सहदेई अथवा लक्ष्मणा बूटीको जड़ तथा पत्ते समेत रविवारके दिन उखाड़ लावे, एक रङ्गकी गायके दूधमें कुंवारी कन्याके हाथसे जड़ पत्ते समेत पिसवावे। अगर बांझ स्त्री ऋतुकालमें २ तोला प्रतिदिन पीवे, और दूध भात मूंगको दाल आदि भोजन करती

हुई ७ दिन तक इस दवाको खावे, तब पुत्र कामनासे अपने इष्टदेवसे प्रार्थना करती हुई प्रीति पूर्वक संगम करे तो निश्चय ही पुत्र होवे।

गर्भ रहनेकी अचूक दवा।

(२) एक बंगला पान, एक लौंग, अफ़ीम बढ़िया १ रत्ती, तीनोंको बिना जलके पीसकर गोली बनाकर ऋतुधर्म से शुद्ध होकर प्रातःकाल गंगाजलसे खा लेवे। प्रेम पूर्वक सन्तानोत्पत्तिकी भावनासे रमण करनेसे निश्चय ही गर्भ रहेगा।

नोट—ऊपर तो बन्ध्या स्त्रियोंके लिये योग हैं नीचे जिनका आर्तव खराब है वह उसे शुद्ध कर हमारे लिखे अनुसार करेंगी तो निश्चय ही गर्भ धारण करेंगी।

(१) मासिक धर्म न होने पर जुलाब।

बनफसा ६ मासा, गुलाब के फूल १ तोला, मुनक्का ७ दाना, तुरंज बीन १ तोला सनाय ७ मासा, बड़ी हरड़का छिलका ६ मासा। उपरोक्त एक मात्रा, रात्रिमें आधासेर जलमें भिगोदें, सबेरे उसे अच्छी तरह मलकर अग्निपर औटावे पावभर जल रह जानेपर उतार के ठंडा कर छानके पी जाना चहिये। ५ दिन तक यह काढ़ा पीना होगा, कोठा साफ हो जावेगा। इसके नीचे लिखी बटी सेवन करावे।

(२) रजो धर्मकी खराबी दूर करने वाली

आर्तव सोधन बटी

सनायकी पत्ती, एलुआ, निशोथ, सुरजानमीग, नवसादर, इन्द्रायन की जड़, शकमूनियां, प्रत्येक १-१ तोला। सब औषधियों को कूट

छानकर घीकुवारके रसमें तीन दिन तक खरल करें खूब घोटकर बेर के समान गोलियां बनालें मासिक धर्म होनेके २ दिन पहिले २ तोला गुलाब जलके साथ १-१ बटी सेवन करावे, यह मासिक धर्म ठीकसे न होने या कुसमय होनेको ठीक करता है। मासिक धर्म ठीक होने पर नीचे लिखा योग काममें लावें।

(३) गर्भ स्थापक योग।

काथफलका चूर्ण ६ मासा,सक्कर १ तोला मिलाकर ७ दिन तक रोजाना ऋतुधर्मके बाद सेवन करानेसे पति संयोगसे निश्चय गर्भ रहेगा।

(४) गर्भमें लड़का करने वाला योग।

जिस स्त्रीको लड़कियें ही पैदा होती हों और वह अगर लड़का होने की इच्छा रखती हो तो गर्भ रहनेके तीसरे मासमें मयूर पुच्छ की चन्द्रिका (मोरके पंखपर जो चन्द्रमाका निशान होता है)

उसे गुड़में मिलाकर प्रातःकाल ७ दिन तक जो दूधसे सेवन करती हैं। तो वह निश्चय हो पुत्रकोका उत्पन्न करती हैं कन्या कदापि नहीं।

(३) मोर सिखा की जड़ पत्तों सहित लाकर उसे पीसकर दूधके साथ ऋतु मति स्त्री ऋतु स्नानके बाद प्रसन्नता सहित पोवे तो निश्चय गर्भ रहे।

(४) पीपर, अदरक, काली मिर्च, केसर, इन चारों औषधियों को ऋतु स्नानके बाद घीके साथ मिला कर पीनेसे बांझ भी गर्भ धारणकर पुत्र पा सकती है।

(५) बिना छेदका आधा मोती असली, आधा जायफल, असली आधा मूंगा, इन तीनोंका चूर्णकर तथा खरल करके इतने वजन १-१ मात्रा को बांझ स्त्री तीन दिन तक दूधके साथ पीवे तो गर्भ धारण कर सकती है ।

गर्भ निवारण योग ।

(१) ढाकके बीज पानीमें घोंट कर जो ऋतु भरी स्त्री तीन दिन पीवे तो स्त्री बांझ हो जाय ।

(२) खीराके बीजको अगर गर्भिनी स्त्री सात आठ दिन पीसकर पीवे तो सन्तान न हो ।

(३) बेरी बृक्षकी लाख को औंटाकर ऋतु स्नान के अन्त जो स्त्री तेलके साथ २ तोला प्रमाण पीती है उसे गर्भ नहीं रह सकता ।

(४) फिटकरी और बोसकी छाल को औंटाकर २ तोला भर तीन दिन अथवा सात दिन तक पीवे तो गर्भ गिर जाता है ।

(५) साढ़े चार ४॥ मासे नील खाय तो गर्भ न रहे ।

(६) हल्दी पीसकर मासिक धर्मके समय भी खावे तथा ऋतु स्नान पर भी तीन दिन खावे तो स्त्री गर्भवती न हो ।

बाल रोग चिकित्सा

बालजीवन घुटी ।

गौरोचन, ३ मासा, एलुआ ६ मासा, इसारे रेवन्द १ तोला, केसर असली, कटेर, का जीरा, यवक्षार, सत्यानाशीके बीज, १-१ तोला । इन सब को कूट पीसकर कपड़छान कर लो । फिर अदरक के रसमें दिनभर घोंट कर मूंगके बराबर गोली बना कर छायामें

सुखालें । मात्रा १ गोली जब जब जरूरत हो मांके दूध या शहदमें मिलाकर चटा दें ।

गुण—

बच्चोंकी पसली चलना, दस्त या पेशाब साफ न होना पेट फूलना खांसी आदि शिकायत दूर होकर बच्चा निरोग हो जाता है ।

(२) नागर मोथा, हर्रे की छाल, मुलहट्ठी १-१ मासा लेकर काढ़ा बना कर ७ दिन तक पिलाओ तो बाल ज्वर नष्ट हो ।

(३) नागर मोथा, पीपल, अतीस, काकड़ासिंघी, इनका चूर्ण मधुके साथ चटानेसे ज्वारातिसार खांसी, उलटी, सबमें फायदा करेग ।

बालकोंके अतिसार पर ।

(१)बेलका गूदा, धावड़ेका फूल, नेत्रबाला, गजपीपल, लोध, बराबर २ लेकर काढ़ा बनाकर शहद मिलाकर देनेसे अतिसार नष्ट होगा

२) वायबडिङ्ग, अजमोद, व पीपल, तीनों १-१ मासा लेकर काढ़ा बनावे उसे चावलोंकी धोवनके साथ मिलाकर पिलानेसे आमकातिसार (पतली टट्टीके साथ आंव आना) बन्द होगा ।

(३) मोच रस, मजीठ, धायके फूल कमलकेशर इन सबको समान भाग लेकर चूर्ण करके सांठी चावलोंके धोवनके साथ देनेसे रक्तातिसार (पतली टट्टी खून मिली हुई) बन्द होगा ।

बच्चोंकी खांसी पर

(१) नागर मोथा, अतीस, अडूसा, पीपल, :काकड़ासिंघी, इन सबको बराबर २ लेकर कूट पीस कपड़ छानकर इस चूर्णको शहद के साथ चटानेसे हर प्रकारकी खांसी दूर होगी ।

बच्चोंका उदर रोग

सेंधा नोन, सोंठ, इलायची, भुनी हींग, भारंगी सबको बराबर २ लेकर कूट पीस छानकर, इस चूर्णको गरम जलके साथ देनेसे पेट का अफरना तथा सूलकी दर्द दोनों आराम होंगी।

पिशाब न उतरने पर

पीपल, काली मिर्च, इलायची, सेंधा नोन, मिश्री, इन्हें बराबर २ लेकर कूट पीस तथा छानकर शहदके साथ इस चूर्णको चटाओ तो रुका पेशाब अवश्य उतरेगा।

मुख आ जाना।

पीपलकी छाल तथा पीपलके मुलायम पत्ते, दोनों एक साथ पीस कर शहदके साथ चटावे तो मुखके छाले अच्छे हो जावेंगे।

स्वांस तथा खांसी

दाख, अडूसा, हर्रेकी छाल, पीपल, इनका चूर्ण बनाकर शहद और घृतके साथ देनेसे श्वास तथा खांसी दोनोंमें लाभ होगा।

गुदा पाक।

शंख, मुलहठ्ठी, रसौंत, इनको जलमें पीसकर लेप करनेसे आराम होगा।

कृमि रोग तथा उसके साथ ज्वर

पलास पापड़ा, नीमकी छाल, सहजनेकी जड़, नागरमोथा, देवदारू, बायवडिंग, यह सब मिलाकर नापसे लेकर जौकुट करके काढ़ा बनाकर ७ दिन तक पिलाओ, पेटके कृमि नष्ट होकर बुखार उतर जायेगा।

बच्चोंके दूध फेंका पर।

शिलाजीत २ रत्ती, जाबित्री ४ रत्ती, इन दोनोंको पीसकर रख ले। इसे शहदमें मिलाकर बच्चोंकी जीभ पर लगा दे बच्चा दूध पीते जावेगा।

सूखा रोग।

तूतिया शुद्ध १ तोला, कत्था सफेद ३ तोले, जलमें पीसकर मूंग जैसी गोलियां बना लें, मात्रा १ गोली मांके दूधमें सवेरे शाम देनेसे बालकोंका सूखा रोग हटकर हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं।

तूतिया सेवन विधिः—

आग पर गरम कर २ के ३१ बार दहीके तोड़में बुझाते जावें तूतिया शुद्ध हो जावेगा तब काममें लावें।

स्वावलम्बी बनो

प्रिय पाठकों!

प्रस्तुतकालमें बेकारी अपना तांडव नृत्य कर रही है। जिसके कारण तीन हैं, प्रथम तो हमारी शिक्षा प्रणाली, जो कि हमें स्वावलम्बी न बनने देकर गुलामी ही की तरफ ले जाती है। (२) हमारेमें दृढ़-शक्ति या आत्म-बलका अभाव। जैसे कि यह मनमें आना कि हम इस कामको कर सकेंगे या नहीं, इसे एक तरहकी मनकी कमजोरी ही कहा जा सकता है। (३) आपसमें भाई २ में प्रेम का न होना, जैसे कि अगर एक भाई (जाति भाई, सहोदर भाई, तथा मित्र भाई) के पास अगर पैसा है तो वह अपने पैसेके मदमें अन्धा होकर लक्ष्मीकी मायासे मदान्ध हो जाता है। और अपने

गरीब भाईकी कोई मदद ही नहीं करता, मदद तो दूर रही उसे अपना भाई कहने या प्रेमसे बोलनेमें भी दिक्कत होती है। इसका नतीजा यह होता है कि गरीब भाई किसी प्रकारकी मदद न पाकर स्वावलम्बी न होकर परमुखा-पेक्षी या गुलाम बनना चाहता है। यह प्रस्तुत पुस्तक हमने इसी उद्देश्यको लेकर लिखी है कि प्रत्येक बेकार युवक ५) १०) रुपयेकी पूंजीसे कोई भी चलने वाली चीजोंको चुनकर अगर ढंगसे उद्योगशील होकर काम करेगा तो निश्चय ४०) ५०) रुपया महीना कमाकर अपना भविष्य उज्वल बनाता हुआ स्वावलम्बी बन सकता है। इसलिये यह चेतावनी आप लोगोंको दी जाती है कि आप अवश्य अपने लायक काम अपनी इस पथ-प्रदर्शक पुस्तक "धन कमानेकी कुञ्जी" में से खोजकर खुद तो स्वावलम्बी बनेंगे ही साथ ही औरोंको भी रास्ता दिखा स्वावलम्बी बनावेंगे।

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

* समाप्त *

बच्चोंके दूध फेंका पर।

शिलाजीत २ रत्ती, जाबित्री ४ रत्ती, इन दोनोंको पीसकर रख ले। इसे शहदमें मिलाकर बच्चोंकी जीभ पर लगा दे बच्चा दूध पीते जावेगा।

सूखा रोग।

तूतिया शुद्ध १ तोला, कत्था सफेद ३ तोले, जलमें पीसकर मूंग जैसी गोलियां बना लें, मात्रा १ गोली मांके दूधमें सवेरे शाम देनेसे बालकोंका सूखा रोग हटकर हृष्ट-पुष्ट हो जाते हैं।

तूतिया सेवन विधिः—

आग पर गरम कर २ के ३१ बार दहीके तोड़में बुझाते जावें तूतिया शुद्ध हो जावेगा तब काममें लावें।

स्वावलम्बी बनो

प्रिय पाठकों !

प्रस्तुतकालमें बेकारी अपना तांडव नृत्य कर रही है। जिसके कारण तीन हैं, प्रथम तो हमारी शिक्षा प्रणाली, जो कि हमें स्वावलम्बी न बनने देकर गुलामी ही की तरफ ले जाती है। (२) हमारेमें दृढ़-शक्ति या आत्म-बलका अभाव। जैसे कि यह मनमें आना कि हम इस कामको कर सकेंगे या नहीं, इसे एक तरहकी मनकी कमजोरी ही कहा जा सकता है। (३) आपसमें भाई २ में प्रेम का न होना, जैसे कि अगर एक भाई (जाति भाई, सहोदर भाई, तथा मित्र भाई) के पास अगर पैसा है तो वह अपने पैसेके मदमें अन्धा होकर लक्ष्मीकी मायासे मदान्ध हो जाता है। और अपने

गरीब भाईकी कोई मदद ही नहीं करता, मदद तो दूर रही उसे अपना भाई कहने या प्रेमसे बोलनेमें भी दिक्कत होती है। इसका नतीजा यह होता है कि गरीब भाई किसी प्रकारकी मदद न पाकर स्वावलम्बी न होकर परमुखापेक्षी या गुलाम बनना चाहता है। यह प्रस्तुत पुस्तक हमने इसी उद्देश्यको लेकर लिखी है कि प्रत्येक बेकार युवक ५) १०) रुपयेकी पूंजीसे कोई भी चलने वाली चीजोंको चुनकर अगर ढंगसे उद्योगशील होकर काम करेगा तो निश्चय ४०) ५०) रुपया महीना कमाकर अपना भविष्य उज्वल बनाता हुआ स्वावलम्बी बन सकता है। इसलिये यह चेतावनी आप लोगोंको दी जाती है कि आप अवश्य अपने लायक काम अपनी इस पथ-प्रदर्शक पुस्तक "धन कमानेकी कुञ्जी" में से खोजकर खुद तो स्वावलम्बी बनेंगे ही साथ ही औरोंको भी रास्ता दिखा स्वावलम्बी बनावेंगे।

* समाप्त *

Sri Pratap Singh
Library
Srinagar.

छप रहा है! छप रहा है!! छप रहा है!!!

घरका वैद्य

या

तन्दुरुस्ती का बीमा

इस पुस्तकमें बड़े २ धुरन्धर आयुर्वेद ज्ञाताओंके प्रत्येक रोगों पर चुने २ नुस्खे तथा अनुभूत प्रयोग होंगे। इस पुस्तकमें गागरमें सागर ही भरनेकी कोशिश की जावेगी। आप लोगोंको जरा २ सी शिकायत पर नासमझीके कारण डाक्टर या वैद्योंको सैकड़ों रुपये दे देने पड़ते हैं, लेकिन यह पुस्तक आपकी अज्ञानताका पर्दा हटाकर प्रकाशमें लाकर आपको अपनी कुल तकलीफोंको कैसे दूर किया जा सकता है, इसका ज्ञान करावेगी तथा सैकड़ों रुपयोंके नुकसानसे बचावेगी। हर एक बाल, बृद्ध, युवा, गांव तथा शहर प्रत्येक जगह रखने लायक पुस्तक का मूल्य केवल २) रुपया, पृष्ठ संख्या प्रायः ३५०।

SPS
646.72 D 37 D
11539

५१
म